

[२]

१८—श्रीगंगा हित मुन्दावनदास ✓	३८०	३६
१९—श्रीनगवनरसिक ✓	३८६	४२
२०—श्रीदूती	४२६	४४
२१—श्रीमहर्षिचरण	४४४	४४
२२—श्रीगुणमंजरी दाम ✓	४४६	४६
२३—श्रीनारायण स्यामी	४६८	४८
२४—श्रीललितकिशोरा ✓	४८३	४९
२५—श्रीललितमाधुरी	४९२	४९
२६—श्रीदृष्टिचन्द्र ✓	४९६	५०
२७—श्रीमन्यनाशरण ✓	४९४	५०

वक्तव्य

- २५६ -

यह युग विज्ञान का है। निम्न नये नये आविष्कार और विज्ञान और अनुसन्धान देतने में आते हैं। लोगों का ध्यान लक्षित नई नई बातों पर तिगता चला जा रहा है। लोगों को धिया नई है, मस्तिष्क घूमने लगा है, और हृदय घड़कने लगा है। प्रत्येक इन्नु का फाया-पटाट सा हो गया है। आदर्श बनते जा रहे हैं, पर उनमें कोई पुन्तापन नजर नहीं आता। मस्तिष्क बराबर मशीन की तरह काम करता जा रहा है, पर उसमें कभी कोई ठोस नीर से दिवार-नाम-उत्तर प्रतीत नहीं होता। हृदय की धमनियाँ दौड़ती तो सदा रहती हैं, पर उनमें उस दैवी तंत्री का नाद नहीं सुन पड़ता जो मानव जीवन का अंतिम तदय कहा जा सकता है। यह क्यों ? इसलिये कि मनुष्य धीरे धीरे, निर्जीव अनुकरण की ओर प्रवृत्त होता हुआ, अपनी 'आत्मोद्यता' को भूलता जा रहा है। मनुष्य का जन्म आनन्द में हुआ है, उसकी इति-प्रगति आनन्द में है, और उसका तब भी आनन्द में ही है। उसे 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' का अनुभव—प्रत्यक्ष अनुभूति—करना है। उसे अपने को भुलाना नहीं है, मोजना है। यह नोज आन्तर जगत् में होती संभव है, बाह्य में नहीं। उसे अपने अनुकूल चलना है, प्रतिकूल नहीं। जिस दिन वह अपनी हस्तंत्री का 'अन्तर्नाद' सुन लेगा, उस दिन उसे सारे आविष्कार और अनुसन्धान साधारण और तुच्छ प्रतीत होने

जगेंगे । उस दिन उसे उस 'साधना' बीज का गला हल
 आयगा, जहां से कि साहस्यो आविष्कार और प्रकाशका मग्न
 प्रगुप्त होने रहने हैं । उस साधना बीज को येशास्त्रियों ने
 अनियंत्रणीय कहा है । येशास्त्रियों के दृष्टिकोण में भले ही
 वह अनियंत्रणीय हो, किन्तु कुछ शर्पद्वयादिभी दृष्टि पाने
 मग्न लोगों की मज्ज में यह कहने सुनने की बात है, जैसे वे
 की बीज है । उन मग्नो से हमारा तात्पर्य कवियों और
 साहित्य-गणिकों से है । विज्ञान और इतिहास जिन पदार्थों
 और घटनाओं का चढ़ी कठिनाई से अनुसंधान करता है,
 कविम्य और साहित्य, यात्र की यात्र में, उनका निर्माण और
 ईश्वरों का डालता है । विज्ञान का केवल सांख्यिक से संबंध
 है, किन्तु साहित्य का कुलाया सांख्यिक और हृदय दोनों से
 जुड़ा है । विज्ञान रंग है, सो साहित्य रंगी है । विज्ञान का
 विशिष्टतम अधिक साहित्य को केंद्र कृटीर में विधाय होता है
 यही कुछ भा गुणता नहीं है, शर्प गया ही गया है । गदा या
 मागी प्रगुप्त है । इसी ममोमन्दिर में साधना का दर्श
 मिलता है, साधना से मिलन होता है । धर्म है उन मग्न
 मागी का जो प्रतिष्ठण साहित्य की साधना लता पर मधु
 बन कर साधने, गुंजारने और प्रकाश प्राप्त करने हैं ।

सादि कवि साधना के से शर्प से प्रथम करणों के भि
 ललित का साधना में होकर साधने की गुणीन दर्शन कि
 रूप को सा । महर्षि व्यासदेव ने साधना की कला
 साहित्य साधना की धीमा की साधना में साधनी,
 साधना सुना था । वह बाते कुछ गुणीनी रही हो गई हैं । यह
 कुछ बातें पहले गुरु और सुननी में जो दिव्य दर्शन गुण
 था, वह हमारे कर्म कर्मों में उगो का ग्यो गुंजर रहा है, उस

स्पष्ट चित्र सहृदयों के हृदय परतल पर आज भी बसा हो
 कबित है। कुछ लोगों का खयाल है कि सुर और तुलसी
 का साहित्यिक चित्र अब धूमिल और फीका पड़ गया है,
 तब से अत्यंत न जाने कितने परिवर्तन हो गये और होते
 जा रहे हैं। उनका कहना है कि आज हमें राम और कृष्ण
 सम्बन्धी कविताओं से कोई स्थायी लाभ नहीं है। हम
 वैज्ञानिक युग में पैदा हुए हैं, हमें कुछ और ही नवीन आदर्शों
 की आवश्यकता है। पर क्या ये सज्जन हमें यह बतलावेंगे कि
 उनका साहित्य-भवन किस नींव पर खड़ा होगा? क्या वे
 रसों और भावों का यहिष्कार कर देंगे? क्या ये हृदयको हटा
 कर, उसके स्थान पर नरेशीम भस्तिष्क को रखना चाहते हैं?
 ये जाने, उनका ज्ञान जाने। हमें तो उनकी विचार-भृंजला
 कुछ जैचती नहीं। और फिर करें तो क्या? मज़बूरी है। हमें
 वाण और धूम्र के वायु मण्डल में भी आज सजल घनस्थान
 की अस्पष्ट मूर्ति दिखाई देती है। संभव है, यह नेशों का दोष
 हो। हमें कर्कश बैंगड़ बाजे और भक् भक् बोलने वाली चिमनी
 की प्रतिध्वनि में सुदूरवर्ती मोहिनी रंशों की तरल तान आज भी
 सुनाई देती है। संभव है, यह हमारे कानों की भ्रान्ति हो।
 हम अब भी भोकर रणझण के बीच में मंदमंद मुसकराते
 हुए देखा करते हैं। कदाचित् यह भी हमारा
 हो। इस दीड़धूप और जीवन-संग्राम के युग में भी
 उसी माधवी-कुंड, उसी काञ्चिन्दी-कुल, उसी
 की ओर खिंचा जा रहा है।
 निर्विषय हो। किन्तु हमें तो
 यह आता है, प्रेय और
 ता है। अस्तु।

यह विषय कुछ ऐसा है कि पुण्यनामा मालूम हो नहीं होता। यह रस ऐसा है कि इसे पान करने करने कभी ओं ऊपना ही नहीं। कितना ही पान करने जाओ, कभी घटने का नहीं। लो का लो घमा रहेगा।

पूर्णपूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।

गन्धमुग्ध, कितने मांछियों में इस रस-जागर में मोह जाओ, कितने सुमों में इस यादिका के फुलों का समास्याद बिधा, किन्तु क्या कभी सिंगी की पत्तिरुति हुई ?

उद्दय कालो बहु विविध कविन, दानि अनेक प्रकार ।

नदति नदा नित नित नयन, दृश्य अस्मि उदार ॥

आनेन्दु हरिश्चन्द्र

अहा ! विषय व्यापी आर्द्राव कानन का वन्द्य नहीं तो है इस नर्तक। यहा का अन्तः निज बाधन नहीं गया, इस रस-रस में आ गया, किन्तु उद्दय नहीं। स्पष्ट गुणों आर्द्राव कानन के वन्द्य अन्तः रस-रस-रस में इस रस-रस अन्तः आर्द्राव विषय, उद्दय-रस के आर्द्राव में। वेद का मन्दित में आर्द्राव-मन्दित गान-गानिन्, कर्ण-विद्वन्मन्त्र, हस्त-निक, नित नित प्रभु-अन्तः नित के अन्तः प्रभु विद्वन्मन्त्र ह हा प्रभु, इस माया में, है है—

“अन्तः प्रभु-मन्त्र मन्त्रो हरि माधव गरी,”

इस अन्तः प्रभु में अन्तः प्रभु माधव मन्त्र-मन्त्र ह । इस का बाधन अन्तः प्रभु कानन नहीं है । बड़े बड़े विद्वानों को आर्द्राव-मन्त्रों की वृद्धि-मन्दित है, नित इस अन्तः प्रभु की मन्त्रों की का !

। पूर्ण प्रेमावतार महाप्रभु धीचैतन्यदेव और धीवल्लभा-
चार्यजी ने प्रथमतः ब्रजसाहित्य-मूर्त्य का उदयकालीन
दर्शन किया। मूरदास, नन्ददास, हिनहरिवंश, गदाधर भट्ट,
व्यास, रसजानि शादि कामन्व गिल उठे। भक्ति-भागोरधी
की घबल धारा बहने लगी। शरश्रीन-धृष्टार रूपी उलूक भाग
कर द्रिप गये। दग्गों दिसाछों में सुखद सौरभ भर गया।
मोहन की मधुर मधुर सांजुरी बजने लगी। सहस्रों परितप्त जीव
सुशीतल माधवी-शृङ्ग की नयन छाया में विधाम और शान्ति
लेने लगे। सैकड़ों प्रेमान्त भक्त आपे को भूल कर नाच
उठे। बड़ा ही शान्त मनव था, बड़ा ही सुन्दर दृश्य था। अहा !

सुनन कुंज दाय' सुखद, सोनल मन्द समीर ।

नन है जान राखी बहै, या जमुना के तौर ॥

इन महात्माओं ने भक्ति रस का जो अदुपम न्नोन बहाया,
वह रंगार रंग तक बहना ही जा रहा है। कल हो की बात
है, रतिश्वर हरिधन्व और सत्यनारायण ने इस रस का
पान का साहित्य मूर्त्य का दर्शन किया था।

आइये, आप को, यदि आप रात दिन के अटूट परिधनसे
ब्रज-नाथुन- भक्त गये हैं तो, इस ब्रज-नाथुरी-कुंज को कुछ सैर
कुंज करा दें। अहा ! क्या ही माधवी निरुंत है ! प्रेम,
मार्ग और शान्ति की विविध समीर बहे रही है। महात्माओं
के मुगपंकजों ने निरुंत सौरभ सर्वत्र भर रहा है। श्याम
तमाल और चंपकवल्लरी का प्रगाढ़ातिगत देखकर बंसत
चित्त इस सता-जात में उलल जाने का दौड़ रहा है। ओ
चैतन्यदेव, धीवल्लभाचार्य, गदाधर भट्ट और आप का
मधुर-पुंज इस रस-जाज में गुंजार करता हुआ शलीकिच नाद

का स्मरण दिखाना है। सुनिये, द्वार पर दिव्यशब्द मूर बना
ही मधुर राग अलाप रहे हैं—

मैना कबहिं बड़ेगी छोटी ।

हिनी बाग मोहिं दूध दियात भाँ, यह अजहूँ है छोटी ॥
मूँ तु कदनि बल की बेंनी उयो, है है लोपी मोटी ।
काहुन गुनन नहावन ओझन, नागिन मी औँ छोटी ॥
काओ दूध दियावन पवि पवि, देन न मावन छोटी ।
मृग्याम यिरत्रीपी दोऊ, हरि हलधर की ओटी ॥

अहा ! काही यासमन्त सम है ! दृष्टान् कह आता है कि
इस सम का प्रतिपादक मूरदास के समान समार में कौं
कवि न 'भूतों न भविष्यति' । उधर रेलिये, गोपियों और
कृष्ण का सवाद कितना अतिमधुर और हृदयप्रादी है
यस में अमृदास के समी कवि बड़े बड़े हैं, पर मूर मूर
है मामाही कह गये हैं—

मूर कविन मूर्म कौन कवि, ओँ मरि मिर बालन करे ।

इस में मूर्म ही मूरदास 'गाम पचापराधो' में विद
वदन सुन्दर शीला में मंत्रात कह रहे हैं । अमृदास में इस
मूर्म दूधरा है । नदनीही, माग शीब, माग लोमीये, ओँ
अमर और सम निचरण हरने में इसका दम दुन्दु निरामा
है । निरामरमर परममम मूरदेवकी का दर्शन करते दू
लुनिये वह कम कह रहे हैं—

दुना मूर सम वेन मैर रात्रन रतनारे ।

दुना मूरमर नाग अकम बानु पूनमुमारे ।

अनन दुन्दु मग मयन लंद मंदन अम हरमि ।

देवात्मन् मंदिरम मम मूरुचि मनु वासि ॥

उरघर पर शक्ति कान्ति भीर कलु बरनि न आई ।
जिहि भीतर जगमगत निरन्तर कुंवर कन्हारै ॥

नन्ददास के सम्यन्ध में यह लोकोक्ति सोलह आने सब
जँचती है कि—

“शौर कवि गढ़िया, नन्ददास जड़िया ।”

इस निकुंज के ज़रा और मध्यभाग में तो बलिये । देखिये,
यहां धीहित हरिवंशजी हिन-मार्ग का परम पुनीत उपदेश
देते हुए कह रहे हैं—

चन्द्र घटै, सूरज घटै, घटै त्रिगुन विस्तार ।
पै दृढ़ हित हरिवंश को, घटै न नित्य विहार ॥

तभी तो नाभाजी आपके सम्यन्ध में कहते हैं कि—

‘हरिवंश गुत्तारै’ भजन की रीति सटत कोई जानि है ।”

धीहितजी का अनन्य मार्ग तलवार की धार है । यहाँ न
उदय है, न अस्त । न प्रकृति है, न काल । सदा एकरस
अखण्ड नित्य विहार है । सुनिये, इस कुंज को एक कोकिल धी
हितजी का पद किस कलख के साथ अलाप रहा है—

‘रहौ कोऊ बाहू मनहि दिये ।

मेरे प्राननाथ धीरगमा, सपथ करौ तून दिये ॥

जे अवतार कदन्य भजत हैं, धरि दृढ़ प्रत जु हिये ।

नेऊ उमणि तजत मर्जाइ, दन बिहार रस पिये ॥

खोये रतन फिरत जे घर घर, कौन काज शमि जिये ।

हितहरिवंश अननु सखु नाहीं, दिन यास्तहि लिये ॥

पै ! यह कौन है ! अहा ! अनन्य रसिक कविधेष्ट व्यास
जी (ओरछा वाले) अपनी निराली धुन में अलग ही मस्त

हो रहे है । इनकी बानी बड़ी ही टकसाली और रंगीली है । वह विधि नियंत्र के मार्ग को पार कर चुके हैं । हमारा स्थाप आरम्भ और रहन सहन अनुद्यो है । इनकी मधुरा तीन लोक में स्थानी है । मुनिमें, आर 'प्राज्ञा' पद की काम ही अनोखी जानना पर रह है—

• शिविक अन्तर्ग्य हमारी ज्ञानि ।

कुल देवी गायः परमाणी संग, सप्त धामिन को पति ।
 गान गुण'ल परत धाम्ना, भिन्ना भिन्नदि, हरि मंदिर भाव
 ह'र गुन'नाम वर गुन'न मुनिवत् सप्त'प्राज्ञावत्, गुन'न वरनाम
 स्थाप्य अनुक्त न' लाला पर कर्म, प्रसाद प्राप्त धन राम
 सदा वि'र वि'र उरु रंगिन, मुनि' गान गुन'न वरनाम
 सुम'न न'गव'र गुण'न नाम रंगिनी सप'न गायत्री ज्ञान
 रम्यः मुनि उरु उरु न' वरनाम, रम्यः न' ल' रंगिनी गायत्री

का'नव न' रंगिनी अलो ला वरुन न' वरुन रंगिनी ।
 गान वरनाम अ'र वरुन ' ह'र रंगिनी न' गान वरनाम रंगिनी ।
 हरि रंगिनी गान वरुन रंगिनी रंगिनी वरुन । गान वरुन रंगिनी
 रंगिनी वरुन रंगिनी रंगिनी । वरुन रंगिनी रंगिनी रंगिनी ।
 रंगिनी वरुन रंगिनी रंगिनी । वरुन रंगिनी रंगिनी रंगिनी ।
 रंगिनी वरुन रंगिनी रंगिनी । वरुन रंगिनी रंगिनी रंगिनी ।

रंगिनी वरुन रंगिनी रंगिनी रंगिनी रंगिनी ।
 रंगिनी वरुन रंगिनी रंगिनी रंगिनी रंगिनी ।

रंगिनी

रंगिनी वरुन रंगिनी रंगिनी रंगिनी रंगिनी ।
 रंगिनी वरुन रंगिनी रंगिनी रंगिनी रंगिनी ।

गहो मन, सय रक्त पो रक्तसार ।

लोह वेद कुल करम, नजिये, नजिये निश्च दिशार ॥

ग्रह शक्तिनि संवन धनन्यानी, सुमिरौ स्वाम उदार

बाहि हविदास रीति संवन की, गादी को अधिशार ॥

यहां पग पग पर गतिक प्रेमियों से समागम हो रहा है ।

वेत्तसे मिले और जितसे न मिले ! देखिये, यह प्रेमप्याले

उदाये हुए धूमने भूतने से गनिक रक्तप्रादिशा रहे है । इन्होंने

स्वा मर्दाना प्रज को रक्त पर निक्षार कर दिया है । जग,

जके मनोवाच्य में तो पिछाट कीजिए । इत्यादि !

मानुष तो तो यही रक्तप्रादि,

यनी प्रज गोदुल साद के मगन ।

तो पदु ही तो पदा पदु मेरो,

करौ जित नरु ही धेनु मैभगन ।

पादु ही तो पदा जित दो,

तो गिरौ निर धी पुंरुध भावन ।

तो गन ही तो पदेतो पदे,

जि न पदिति दान नरुध की भावन ।

बाहु धरेपादु मे भगन हो पदा है—

यह सुनकरपादु धि गनन है, मोरिग धिनु वारिये ।

मनोभगन ! यही भावार्थभगन उजियेनी से जो दर्शन

हो गये । भावने दोषन ही यह भावार्थ ही भावार्थों से भगन

पदलगा निर धि—

धोकर सुनकर भगनो भगन, यह गनिक भगन मोदु धनन

भगन यही भगनभगन के भावार्थ भगनभगन में जो भावार्थ

भावे ही न पदिति दो है । यही पदु भावे है—

भीगत कब देखीं इन मैना ।

श्यामाशु की सुर्ग झूनी, मोहन को उपरना ।

जैसी मंजरा, जैसी दशा । श्यामा श्याम को भीगता,
देखकर फिर माने लगे—

श्यामा श्याम कंजतर टाढ़े, जनन कियो कलु में ना ।
भीमट उमड़ि घटा चहुँदिशि में, फिर आई तल मैना ।

यन-घटा में सबमुख ही फिर आयी है । रस-माधुरी
मनवाने भक्त माधुरी के प्रेमाश्रु रिमझिम रिमझिम
लगते हैं । शक्ति, सामने के लता मगड़न में घड़ी भर
विश्राम ले ले । इस मगड़न का टाट बड़ा ही विविध
अज्ञात अन्तरी है । यहाँ, विहारी और देश रसना-आधुरी
सज्जन है । इनकी प्रकृति विशेष कर बाहरी समझाई ही
छोड़ है । विहारी ने तो अपनी कला में लोगों को डंग ही
दिना है । किसी किसी का तो यही तक कहना है कि—

भक्तमदरा के होकर, उगो भाविक के मार्ग ।

देखन के छोटे लगे, पाव करें मंजरी ।

इस महाकवि देश नगरों का चन्द्रहार गुण रा
२. । सर्वगत विराग, अनुगम-विराग, भोक्त परलाभ स
अनुभव में लूचे हैं । आपकी आपकी मत ने बड़ा-बड़ा
छोला दिया है, मही तो आप वह कते कहन कि

वेमो जो हो जानो कि छेरे नू बिने के संग,

बरे मन सेने, दास गोन तेर ॥ १० ॥

आधु जो हो चन माधुर्य की माधुरी सुनि,

नेह गो निराली शक्ति दहत निहोसता

कव नम्रदाइ नायना म.जी खिरह अपार।
 राय राय दाइ दारिहा कहि कहि कित सुखेया
 हनन हनन दालि ।। कहि कहि म्याम सुजान
 फिरत गिरत यन मनन म याही छुटि है प्रान ।

परी-उ न म ।। ११ ।। है—

हा. असम न म. नायन न नागनिदास मुमेर है

अप. पर-उ न म. नायन न नागनिदास मुमेर है— ७

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि ।

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि

नायन न नागनिदास मुमेर है अन धूरि

नि करत मकरन्द रूप रस, भूत नहीं फिर इत उत हेरे ।
गवतरनिक भये मतशारे, धूमत रहत छुके मद तेरे ॥

यहां जिनने प्रेमी देखे, सय मतवाले और छुके हुए हो
गये । यह देखिये, सहचरिश्चरणी प्रिया-प्रीतम पर कैसे
हृष्ट हो रहे हैं ! सरस मंजावली का गान करते हुए आप
कैसे मन्मी में भ्रम रहे हैं ! इनकी मंज ना सत्य ही कलेजे
के टुकड़े टुकड़े किये डालती हैं । याह ! क्या ही रग है !

ठहरि, दरस देता नहि कयहँ गुन गँभौर गग्योले ।
ठगि ठगि लेत ठगन मन मेलत मृग साधक दग्योले ॥
अलक बाल मृदु मत्त घँधे गज आशिक घर अर्योले ।
सहचरिश्चरण रसिक रसिया के कल छलद्वंद्व द्योले ॥

यह संन्यासी महाराज कौन हैं ! यहां रूसेसूखे लोगों
का क्या काम ! हो न हो, यह रसिकाग्रण्य नारायण
स्वामी हैं । यह श्रीधर स्वामी, मधुसूदन सरस्वती, प्रबोधानंद
आदि के अनुयायी हैं । इन्होंने नट नागर की मुत्तक्यान पर
सारा ध्यान ध्यान निछावर कर दिया है । इनकी लगन तो
देखिये—

नयनों रे, चितचोर यताचो ।

तुम ही रहत भवन रखवारे, बाँके धीर कहावो ॥

तुम्हरे बाँच नयो मन मेरो, चाहे सौहँ स्वायो ।

अब क्यों रोयत हो दूबारे, कहुँ तो थाह लगायो ॥

घर के भेदी बैठि द्वार पे, दिन में घर लुटवायो ।

नारायण मोहि वस्तु न चहिण, लेनेहार दिखायो ॥

अब हम देखते देखते "ललित-निरुंज" में आ पहुँचे हैं । ललित-
किशोरी और ललितमाधुरी दोनों भक्त ज्ञाताओं की जोड़ी

का दर्शन कर मेरा डट्टे कर लीजिये । यह यादशाही पैसा
 निनके की तरह छोड़ कर वृथापन प्राप्त करने हुए दुर्जन
 मज्झिमा-निकाय का पान कर रहे हैं । इसकी लगन सराहनी
 है । ऐसे पैसापान मेरे पद का और कहीं सुनने को मिलेगा
 इसे ना आशा नहीं । जानते हैं ? इसीसे लोगों पदों की रचना
 की है । एक पद सुनिये ना—

कोई दिलबर की हार बना दे रे ।

मोहन का कूटिल मूर्खता का कानन बना सुना दे रे ।

मलिनिकमोरी मेरी यात्री, निनकी गाँठ मिला दे रे ।

जाते रंग रीखो सब लन मन, नाकी मलक दिया दे रे ।

अनिये आगे बढ़िये । क्या आपने पहिचाना ? यह मा
 बोन की देखाव दिशाप्रमाण है ? यही भाग्यन्दु हरि
 है । बलिदानी !

बलि गुलाब का आनमन, लीजन आका नाम ।

यह हम साक्ष्य सबियों के अनिम आचार्य है । इन
 गहन महन, रंग रीख, ध्यान-प्राप्ति कृत् निरालो ही है । इन
 यह प्राप्ति का कहा ना सुनिये—

अनिये यह सबका निन, बरमन सुनय आचार ।

अनिये अन्तर मन कोर, अनिये आनन मन मोर ।

अनिये अनिये का आन मनय मन्त्रन है । नद का की
 कोर अनिये का अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये
 है । अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये
 अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये
 अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये

अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये

अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये अनिये

बन सकती है। सत्यनारायण की सरल शान्त प्रकृति बावर्त मन को खींचे लिये जाती है। इस रस के लिये कदाचित् समय अनुकूल न होने के कारण सत्यनारायण कुछ उदास हैं। आप ब्रज की दृढ़ता पर उद्बोध के द्वारा श्रीकृष्ण के पास सदैवमा भेजते हुए विलम्ब विलम्ब कह रहे हैं—

पहिले कौं माँ अधनि रही यह सुन्दावन ।
 पाके धारो और भये यह विधि परिवर्तन ॥
 यने छैन चौरस नये, काटि घने बन पुंज ।
 दम्बन को बस रहि गय, निधिवन मंथाकुंज ॥
 कहाँ चरिहैं गऊँ ?

यह स्थिति देख कर सत्यनारायण ने 'रस-मोपन' कह लिया। कहने हैं—

“या ही माँ अधनि रही यह प्रेमकली है”

प्रेमकली का अधनिला रहना ही अच्छा है। इस गीत ही में तो उन्मादकारी रस भरा है। ब्रज-माधुरी-कुंज का केवल दिग्दर्शन मात्र हुआ है। इतने गीते समय में हम देख क्या सकते थे ? किन्तु इस माधुरी दृष्टि से हमने ब्रज मार्ग का यन्त्रिचिन्म सार अध्ययन ले लिया है। और प्रस्तुत

ब्रज-माधुरी-सार

नामक, सप्रह ग्रन्थ का जो यहाँ से संप्रदान होता व्रज मार्ग ब्रज माधुरी कुंज में थोड़ी सी सैर करने की समय में मुझे विज्ञापन है, आपके मन में ब्रज साहित्य में पत्रिका पत्रिका करने की सहज उत्कण्ठा उठी हो। कुछ दिनों से ब्रज-साहित्य की ओर से लोगों का ध्यान कुछ हद तक आ रहा है। एक तो इसका पठन पाठन शि

पठन-पाठन के शैथिल्य का कारण कुछ तो दुर्घटना पर बनभाषा और निर्भर करता है और कुछ खड़ी बोली की लड़ी बोली कविता की घरसाती बाढ़ पर। खड़ी बोली के पुष्टपोषक प्रायः यह कहा करते हैं कि अथ ब्रजभाषा के दिन गये, उसमें हम अपने राष्ट्रीय विचार प्रकट नहीं कर सकते, अतः अथ यह मृतप्राय है। मेरी समझ में उनकी यह दलीलें बर्तौ आती। इसका क्या कारण है कि एक प्रान्तीय भाषा—ब्रजभाषा में उत्तमोत्तम कवितार्थ रची गई और खड़ी बोली में, जिसे कि कुछ सज्जन चौदहवीं शताब्दी के भी पहले से राष्ट्रीय कविता की भाषा मानते हैं, क्यों अधिक कविताएँ नहीं लिखी गईं। खड़ी बोली का प्रचुर प्रचार, बोलचाल की भाषा होने पर भी, न हो सका ! जिस भाषा में भा० हरिश्चन्द्र, धीरे बाटक और सत्यनागयण ने उत्तमोत्तम राष्ट्रीय कवितार्थ रचाएँ, क्या वह भाषा राष्ट्रीय विचारों के प्रकट करने अयोग्य है ? विचारों के प्रकट करने की शक्ति होनी चाहिए यदि वह शक्ति या प्रतिभा प्रस्तुत नहीं है, तो खड़ी बोली में भी राष्ट्रीय या वैज्ञानिक कविता का होना संभव नहीं और ऐसा प्रत्यक्ष भी तो दृष्टि आता है। कितनी कवितें समाचार पत्रों में निम्न प्रति निकला करती हैं। दो च व। छोड़ कर क्या उनमें आप कोई ऐसी भी कविता पाते जो हृदय की दीर्घा कली को विकसित और प्रकुलित कर जो आप को स्वर्गीय विमान पर बिटला कर दिव्यलोक नहीं भर के लिये भेज दे ? कदापि नहीं। यह शक्ति कि “काव्य-तन्मयता” के कैसे प्राप्त हो सकती है ! आधुनिक खड़ी बोली की कविताओं में और बानें न सही ब्रजभाषा स्वभाविक मिटान भी तो नहीं है। आजकल ब्रजभा

100

100

लिये गये हैं ! हित हरिवंशजी के माता-पिता भी कोई और ही ध्यात्क लिख दिये गये हैं। श्रेणी-विभाग के सम्बन्ध में मौन रहना ही अच्छा है। यह माना कि भूल हो ही जाती है, पर भूल की भी कोई नियमित मर्यादा हुआ करती है, और पीछे यह सुधार भी सकती है। किन्तु सुधारने की चेष्टा की जाय तब न ? पेचारे परवर्ती इतिहासकार भी पूर्ववर्ती इतिहास-लेखकों के भ्रामक मार्ग का अनुसरण करते हुए लोगों को और भी भ्रम के गड्ढे में डाल देते हैं। उचित तो यह है कि परवर्तियों को श्रौंख धन्द कर काम न लेना चाहिये। उन्हें स्वतः सत्यान्वेषण कर इतिहास-पथ को परिष्कृत बना देना चाहिये।

समग्र-ग्रन्थोंमें कविताके चुनाव के सम्बन्ध में भी हमें कुछ कठिनाई का कहना है। जो पद्य उद्धृत किये जाते हैं वे प्रायः संकलन साधारण और अशुद्ध हुआ करते हैं। भलीभाँति ग्रन्थों का अनुशीलन किये बिना ही, उदाहरण के लिये, चाहे जहाँ से लेकर पद्य रख दिये जाते हैं, चाहे वे शिथिल ही क्यों न हों। इससे यह होता है कि जिन्हें पूरे ग्रन्थों के पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, वे इन शिथिल उद्धरणों को पढ़ कर इनके रचयिता कवि के तीमरे दरजे का कवि मान बैठते हैं। पाठक क्या, संपादक महोदय स्वयं भी इसी बिना पर श्रेणी विभाग करने बैठ जाते हैं। एक नाम के दो तीन कवियों की कविता गड़बड़ में पड़ जाती है। यदि किसी कविस्त में 'हरिदास' नाम आया है तो वह 'स्वामी हरिदास' का रचा मान लिया जाता है ! ऐसे अक्सर पर संपादक महोदय यह देखने के बट नहीं उठाते कि कविता वाले हरिदास और स्वामी हरिदास में कितना बड़ा अंतर है। छंदों के उद्धरण का काम यहाँ सावधानी और जिम्मेदारी से होना चाहिये।

स्वर्च ही क्या हो जाना ? इसी प्रकार 'सूरदास भारी कवि था' 'चन्द बादायी वृष्णीराज के साथ रहना था' आदि हीन बातें किसी किसी ग्रन्थ में दृष्टि आने हैं। प्राचीन कविता, उसके रचयिता, उसके विषय आदि के सम्बन्ध में हम जो कुछ भी लिखें, वह धृष्टा और आदर के साथ लिखा जाना चाहिए, अंगरेजी शैली पर नहीं। हमें इस सम्बन्ध में संजीवन भाव्य के प्रणेता पण्डित पद्मसिंहजी का अनुकरण करना चाहिए। उन्होंने विहारी और ग्रजभाषा के साथ जिस उदारता और धृष्टा भक्ति से काम लिया है, वह मनुष्य है।

मैंने इस ग्रंथ में आये हुए महात्माओं और कवियों की जीवनीयों में बहुत कुछ हेर फेर किया है। अधपूर्ण बातों के अगहन करने की मैंने जो श्रुति की है, आशा है, पूर्ववर्त माहिन्यिक इतिहासलेखक उसके लिये मुझे क्षमा प्रदान करेंगे।

अब मैं इस पुस्तक में संशुद्ध कविताओं के विषय।
 ग्रज-माधुरी का सम्बन्ध में कुछ कहूँगा। यह नाम मैं पहले ही लिख
 का गया। मुझा है कि ग्रज-माहिन्य भक्ति और शृंगार के
 प्रधान है। शीघ्रधारण के दिव्य सौन्दर्य और सखे प्रेम के
 आदर्श सामने रखना ही ग्रज-माहिन्य का एकमात्र कर्तव्य है।
 हम निःसंकोच कह सकते कि प्रेमा परिचयन आदर्श स्वयं
 में समाप्त नहीं है। गोपियों की विरह दग्धा और प्रेमप्रलाप
 प्रेमा मुदर चित्र यहाँ अंकित किया गया है यह अनुदा क
 अभिरंजनार्थ है। ग्रज-माहिन्य के विषय पर अधिक लिखने
 आवश्यकता नहीं है। हमका माहिन्य अमर है, सां
 प्रदुर्लभ है, माधुर्य निम्न है। इस दिव्य विषय को ग्रज भा
 आशियों ने ही नहीं, अन्यत्र अन्यान्य प्रायः चाले कवियों ने

और बड़े-बड़े आदि ग्रन्थों में इनने हस्तलिखित छोटे-मोटे ग्रन्थ पड़े हैं, कि केवल उनकी सामायनी में ही महत्ता नहीं मिल जायेगी। इस कथन में अग्युक्ति का लेशमात्र भी नहीं है। इन ग्रन्थों का समय पर यदि परामुचित उद्धार न हुआ, तो पीढ़े-पिढाय पहुँचाने के हाथ कुछ न आया। अपने देश के साहित्य को अपनी ही अभावधाना में नष्ट कर देना महान् पापक है। काशी भागरी प्रयागियों मन्ना को और से पुस्तकें को जो प्राप्त हो रही हैं, वह प्रगल्भनीय है, किन्तु इनमें से काम न चलना। मन्ना का विषय है कि इस सब अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन में इस आशय का एक प्रस्ताव स्वीकृत किया है कि एक ऐसा आदर्श गृहस्थ पुस्तकालय निर्मित किया जाय, कि जिसमें प्राकृत और हिन्दी के सम्पूर्ण हस्त लिखित पुस्तकें या उनकी प्रतिलिपियाँ इकट्ठी की जायें। सम्मेलन इस महत्कार्य के लिये धन का एकत्रिकरण रहा है एवं उसकी व्यवस्था बड़ी मत्त हुई होगी है प्रत्यक्ष प्रभाव में मैंने सरदार स्व. लाल बाल्यनारायण मत्त के अंतर्द्वारा, जो गया का अखिल सम्प्रदाय किया है। इसमें कुछ धन का साथ था मत्त है कि जिसके इस ग्रन्थ अभी तक का जो उद्धार नहीं हुआ सरदार मत्त, धामद, बाल्यनारी, मन्ना सम्मेलन के अध्यक्ष प्रवृत्ति महत्प्रयासों की बातें करने अग्रसर हैं। मन्ना इस महत्प्रयासों के हस्तलिखित ग्रन्थों के इकट्ठा करने का भी प्रयास प्रारम्भ हुआ है। सरदार मन्ना महत्तम के बहुत कुछ का प्रयास पर श्री, केवल १० पद है, किन्तु जो महत्प्रयासों के जो महत्त्व में है, जो हीनकारी की कमी तक दिन बहता ही अग्रसर है। इसे हीनकारी के रूप में महत्त्वपूर्ण नहीं म

नहीं है। 'भगवन् रमिक रमिक की बातें रमिक बिना कीं
समुक्ति सके ना।' फिर भी टिप्पणियाँ लगाकर मैंने जो पुरस्
की है, वह, आशा है, लाभ होगी।

यदि इस संग्रह प्रश्न से रमिक साहित्य प्रेमियों को किंचि
स्मात् भी आनन्द लाभ हुआ तो मैं अपने परिश्रम की सारा
समझौता, यद्यपि मुझे इतना भी कहने का अधिकार नहीं है
मैं तो सब प्रकार से दोगी और अग्रगण्य हूँ। हाँ, मुझे इस
अभिमान अवश्य है कि मैं इस अनमोल पद रत्नों की इस
सूचक और महानुमाँयों की संस्था में उपस्थित होने का
हीमात्म्य प्राप्त कर सका।

मैंने सुहृदवर साहित्य-रमिक श्रीपुरबोलमहाशयजी की
से इस प्रश्न की मुद्रित होने सम्बन्ध सब सच अवलोकन।
मुझे जो उम्माह दिखाया इसके लिये मैं उन्हें हार्दिक
धन्यवाद देता हूँ।

कुलमें, यह बात फिर पुनः गायानरत्नश्री गोस्वामी
कोटिजः अवकाश देता हुआ मैं अपना सुख्य वनस्थ स
करता हूँ।

श्रीगणेशाय
नमः
१९८७

}

श्रीहरिदासानुदास
त्रिभोगी हा

ब्रज-माधुरी-सार

श्रीसूरदास

दृश्य

उक्ति, चोज, अनुप्रास, चरन, अस्थिति अति भारी ।
 यवन, प्रीति-निर्वाह, अर्थ अद्भुत नुकधारी ॥
 प्रतिविम्बित दिवि दृष्टि हृदय हरि-सीता भासी ।
 जन्म कर्म गुन रूप सर्व रसना जु प्रकासी ॥
 दिनल बुद्धि गुन और की, जो यह गुन खवननि धरै ।
 श्रीसूर-कवित सुनि कौन कवि, जो नहि सिर चालन करै ॥

—नामा जो



वि-कुल-गुरु भक्ताप्रणय श्रीसूरदास जी का
 जन्म लगभग संवत् १५४० में हुआ था ।
 इनको जन्म-भूमि आगरा-मधुरा की सड़क
 पर रुनकता (रेणुका शेष) गाँव है । किन्तों
 किन्तों ने दिल्ली के पास साँही को इनका
 जन्म स्थान माना है, पर इसका कोई पुष्ट
 प्रमाण नहीं है । सूरदास जो गङ्गाघाट पर
 रहते थे, और यह गङ्गाघाट आगरा के ही पास है । इनके
 पिता का नाम रामदास था । यह सारस्वत ब्राह्मण थे । सर-

1

2

3

4

5

6

7

मन समुद्र भो सूर को, सीप भये चख लाल ।
हरि मुक्ताहल परत ही, मृदि गये ततकाल ॥

सूरदास जी व्रज-साहित्य के जन्मदाता, परिपोषक एवम्
प्रसारक कह जायँ, तो कोई अत्युक्ति नहीं । इसमें सन्देह
नहीं कि यह हिन्दी के वाल्मीकि या व्यास हैं । भक्ति पक्ष में
तो यह उद्भव के अवतार माने जाते हैं । सूरसागर के पढ़ने
से महाकाव्य के सभी गुण प्रत्यक्ष हो जाते हैं । वात्सल्य रस
लिखने में तो आपने कलम हो तोड़ दी है । इसी प्रकार
गोपियों का पिरह और उद्भव-संवाद अपूर्व और चमत्कार-
पूर्ण हैं । हमारा तो यह कहना है कि जिन्हें साहित्य में कुछ
रसास्वादन लेना है, उन्हें अवश्य ही सूरदास जी के मधुर
भावपूर्ण पदों का पाठ करना चाहिए । सूरसागर के गान से
लोक और परलोक दोनों ही आनन्द-दायक हो सकते हैं, इस
में सन्देह नहीं । कवि-सम्प्राद सूर के सम्बन्ध में कई भावुक
रसिक जनों ने अपनी अपनी अनुमतियाँ प्रकाशित की हैं ।
कतिपय प्रचलित सम्मतियाँ ये हैं—

“तन्व तन्व मुरा कही, तुलसी कही अनूठि ।
बची खुची कदिरा कही, और कही सब जूठि ॥”

“उत्तम पद कवि गंग को, कविता को दलवीर ।
पेश्वर स्वयं गैभोर हो, मूर तीन गुन धोर ॥”

“किथौ मूर को सर लग्यो, किथौ मूर को पोर ।
किथौ मूर को पद लग्यो, तन मन धुनन मरोर ॥”

“सूरदास दिन पद रचना ऊप कौन कथिहि करि आवे ॥”

“हर-शक्ति मृति दीन कवि जो नहि सिर चालन करे ॥”

कंचन मनि खोलि डारि कांच गर यंधाऊँ ।
 कुंडुम को तिलक मेटि काजर मुख लाऊँ ॥
 पाटंदर संधर तजि गूदर पहिराऊँ ।
 अंया फल छांड़ि कहा सेवर को धाऊँ ॥
 सागर की लहर छांड़ि जार फत झन्हाऊँ ।
 सूर कूर सांधरो मैं द्वार पखो गाऊँ ॥ २ ॥

सारंग

मेरो मन अनत कहाँ मुख पावै ।
 जैसे उड़ि जहाज को पंढी, फिरि जहाज पर आवै ॥
 कमल नैन को छांड़ि महानम, और देव को धावै ।
 परम गहू को छांड़ि पियासो, दुर्मति कूर खनावै ॥
 जिन मधुकर अंघुज रस चाख्यो, क्यों करील फल खावै ।
 सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, देखी कौन दुहावै ॥ ३ ॥

सारंग

आज जो हरिहि न सख गहाऊँ ।
 नौ ताजों गंगा जननी को, सांतनु सुत न कहाऊँ ॥
 स्पंदन खंडि महारथ खंडों, कपिध्वज सहित डुलाऊँ ।
 इती न करौ सपथ मुदि हरि को, छत्रिय गतिहि न पाऊँ ॥

२—मनि=मन्त्र । खोलि=खोल । डारि=डारो । मटि=मटो । गूदर=
 छिपड़ा । सेवर=सल्लनत्रि हथ पा फल, जिसने सिद्धा रत्न के कुंज को सार
 नहीं होता । सार=सार ।

३—१ "सुनु" श्री काव्य है । अनत नैन=धीन । खनावै=खोदे ।
 करील=करीदार हथ । देखी=देखो ।

पांडव दल सन्मुख है धाऊँ, सरिता रधिर बहाऊँ ।
सूरदास रनभूमि विजय विन, जियत न पीठ दिखाऊँ ॥ ४ ॥

आसावरी

हम भक्तन के भक्त हमारे ।

सुन अजुन परतिम्या मेरी, यह प्रत टरन न टारे ॥
भक्त काज लाज हिय धरिकै, पार पयादे धाऊँ ।
अहँ अहँ भीर पर भक्तन पै, नहँ तहँ जार खुड़ाऊँ ॥
ओ मम भक्त माँ पैर करत हँ, माँ निज पैरी मेरो ।
देखि विचारि भक्त हिन कानन, हाँकत हँ रथ तेरो ॥
जीते जीति भक्त अपने की, हारे हाणि विचारो ।
सूरदास मुनि भक्त शिरोधी, चक्र सुदर्शन जारो ॥ ५ ॥

मारंग

✕ या पट पाँत की कहरान ।

कर धरि चक्र चरन की घायनि, नहि विस्तरति यह यात ॥
रथ न उतरि अयनि आतुर है, कच रज की सपटान ॥
मानों सिंह मैल ने निहंर्यों, महामल गज जान ॥
जिन गुपाल मेरो प्रन राख्यो, मेडि चेद की कान ॥
साँई गूर मशाय हमारे, निकट भए हँ आन ॥ ६ ॥

४—पांडव=राजपुत्र, कुरुवंशी एक प्रतापी राजा, जिन्होंने पांडवों को
लाय ब्याह किया था । बाण बहवाहि भोजन दूरी है पुत्र थे । मयदन=रथ
वर्तमान=कुरुवंशी राजा की पत्नी, जिसमें कुरुवंशी का विषय
५—जय=जय । भीर=भीर । नहँ तहँ=निकट भय है आन

६—जय=जय । भीर=भीर । नहँ तहँ=निकट भय है आन

७—जय=जय । भीर=भीर । नहँ तहँ=निकट भय है आन

सोरठ

मना रे, माधव लीं कर प्रीति ।

काम कांध मद तोम माहू, छाँडि सबै विपरीति ॥

भौरा भोगी बन भ्रम, मोद न मानै ताप ।

सब कुसुमन मिलि रस गरै, कमल वैधावै आण ॥

सुनि परमित पिय प्रेम को, चानक चितवत पारि ।

घन आसा सर दुख सहै, अन्त न जाँचै बारि ॥

देखा करनी कमल को, शीनो जल सौं हेन ।

प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो, सुख्यो सरहि समेत ॥

मान वियांग न सहि सकै, नोर न पूछै यात ।

देखि जु नू नार्थ गतिहि, रति न थटै तन जात ॥

प्रीति परेया की गनी, चाह चढ़त आकास ।

तहै चढ़ि तोय जु देखिण, पगन छाँडि उर स्थान ॥

सुमार संगेह कुरंग यो, स्वयननि राख्यो राग ।

धरि न सकन पग पद्मनो, सर सनमुख उर लाग ॥

देखि जंरनि जड़ नारि की, जरत प्रेम के संग ।

बितान चित फोका भयो, रचा जु पिय के रंग ॥

तोक वेद दरजत सबै, नयनन देखत आस ।

चोर न जिय चोरी तजै, मरयस सहै विनास ॥

सब रस को रस प्रेम है, विषयो गैतै सार ।

तन मन धन जोयन जिसै, तऊ न मानै हार ॥

नै जु रल पायो भलो, जान्यो साधु समाज ।

प्रेम कथा अनुदिन सुनो, तऊ न उपजो नाज ॥

सदा सँघाती आपनो, जिय को जोयन प्राण ।

सो नृदिसग्यो सहज ही, हरि ईश्वर भगवान ॥

वेद पुराण स्मृति सबै, सुर नर सेवन जाहि ।
 महा मूढ़ अग्र्याण मति, क्यों न सँभारत ताहि ॥
 अग मृग मीन पतंग लीं, मैं सोधे सब ठौर ।
 जल थल जीय जिते तिते, कहीं कहीं लगी और ॥
 प्रभु पूरन पावन सखा, मानन हूँ को नाथ ।
 परम दयालु कृपालु प्रभु, जीवन आपके हाथ ॥
 गर्भयास अति श्रास में, जहाँ न एकौ अंग ।
 मुनि सठ, तेरो प्रान पति, तहाँ न छुँड्यो संग ॥
 दिना राति पोषत रहै, ज्यों नम्र्याली पान ।
 घा दुख तें तोहि काढ़िकै, लै दोनों पयपान ॥
 जिन जड़ से चेतन कियां, रचि गुन तत्त्व विधान ।
 घनचिकुर कर नख दिये, नैन नासिका कान ॥
 अस्रन वसन बहु विधि दिये, औसर औसर आनि ।
 मान गिना भैया मिले, नई रुचिहि पहिचानि ॥
 खान पान परिधान रस, जीवन गयो विनीत ।
 ज्यों बिट् परि परनीय वस्त, भोर भये भयभीत ॥
 जैसे सुखही मन बढ्यो, तैसे बढ्यो अनंग ।
 धूम बढ्यो कोचन खस्यो, सखा न सूझ्यो संग ॥
 जम जान्यो सथ अग सुन्यो, बाढ्यो अजस अपार ।
 मोक्ष न काहू तथ कियां, दूतनि काढ्यो धार ॥
 कह जातो कह्यो मुझां, ऐसे कुमति कुमीच ।
 हरि साँ हेतु विस्तारिकै, सुख चाहत है नीच ॥

४—मना=वन । अंत=घनत, अग्र्य= । पक्षमनो=पक्षि । त्विसे=वचन
 जाता है । इन=वेद । राख्यो=नीदित हुआ । सँभारती=तापी । सँभारत=ले
 करता है । सोधे=हूँ । अग=महाय । गुण=सत्त्व, रज और तमोगुण

जो पै जिय लज्जा नहीं, कहा कहौ सो पार ।
पकहु अंक न हरि भजे, रे सठ सूर गंधार ॥ ७ ॥

भैरवी

कहाँ लौ यगनौ सुन्दरताइ ।

सैतत कुँवर कनक आँगन में, नैन निरखि छवि छार ॥
कुलदिलसति सिर स्थान नुभग अति, यदुविधि सुरँग बनाइ ।
मानौ नयनन ऊपर गज्जन, मधवा धनुष चढ़ाइ ॥
अति सुंदर नृदु हस्त चिहुर मन, मोहन मुख बगराइ ।
मानौ प्रगट कंज पर मंजुल, अलि अवली फिरि आवै ॥
नील स्वेत पर पीत लाल, मनि, लटकनि भाल खनाइ ।
मनि गुरु अमुरदेव गुंगनिति मनु, भौम सहित समुदाइ ॥
दूध दंत दुति यदि न जाति अति, अद्भुत एक उपमाइ ।
किलकत हँसत दुरत प्रगटत मनु, घनमें विधु छपाइ ॥
खंडित वचन देन पूरन सुख, अल्प अल्प जलपाइ ।
घुटुरन चलत रेनु नन मंडित, सूरदास बलि जाइ ॥ ८ ॥

तत्र स्थान=पंचनख वी रचना । विकुर=वाल । परिपान=द्वय ।
विट्=अभिप्राय । मस्त्रो=दृष्ट गया । बाँच=रक्षा । बहैक=बहो । मुनो=
मरा । बुलाँच=पुरी मौन । कंज=प्रकार ।

करते हैं, कि यह पद सूरदासजी ने बादशाह अकबर को सुनाया था ।
किन्तु सूरदास जो अकबर के दरबार में कभी गये थे या नहीं, यह विवाद-
स्पद है । सूरदास मदनमोहन, त्रिःशेखर, अकबर के पास जाता करते थे ।

८—कनक=गोना । कुल्लो=लोरी । मधवा=शम्भु । सुंदर=पुंदर ।
बगराइ=दौड़े हुए । रत्नगं=चटखाना । अमुगुट=शुद्ध । देवगुट=दृश्यति ।
भौन=मंदार । विदु=विदुष, चित्तजी । खंडित वचन=भीतले वचन । घुटुरन=
घुटनों के बल ।

घघाई

✕ आहु गई हों नन्द भवन में कहा कहीं गृह चैनु री ।
 बहु अंग चतुरंग ग्याल घाल नहँ, कोटिक दुदियनु धैनु री ।
 घूमि रहे जित तित दधि मयना, सुनन मेघ धुनि लाजैरी ।
 घरनहुँ कदा सदन की सोभा, धंकुटहुँ ते राजैरी ।
 बोलि लई नयधू जानिकैं, खेलत जहाँ कन्दाईरी ।
 मुख देखन मोहिनि सी लागति, रूप न घरन्यो जाईरी ।
 लटकनि लटकि रहे भू ऊपर, पंचरंग मनि पोहैरी ।
 मानहुँ गुरु सनि सुक एक होइ, नाल भाल पर सोहैरी ।
 जो चन को तिलक निपट हो, काजर बिदुक लाग्योरी ।
 मनहुँ कमल गुनपीयमागुरस, निसि अलि मुन सोइ जाग्योरी ।
 विधु आनन पर दीर्घ लांचन, नासा लटकन मोनौ री ।
 मानौ सोम सग करि लीनों, जानि आपनो मोनी री ।
 सीपज माल स्याम उर सोहँ, बिच वधना लुधि पावै री ।
 मनहुँ दैज सुसि नयन सहिन ह, उपमा कहनि न आवै री ।
 घरनौ कहा अंग अंग सोभा, माय धरी जल रासी री ।
 बाल लाल गोपालहि घरनन, कधि कुल करिहै हांसी री ।
 सोभा मिंधु अगाध बोध बुध, उपमा नाहिन और री ।
 रूप देखि तनु धविन रही ही, भेद भरे कोचोर री ।
 ओ मेरी अंगियां रसना होनी, कहनौ रूप बनाइ री ।
 चिरजोयो असुना को नन्दन, मूरदास बलि जाइ री ॥

६—गोरोवन=गाय के मन्त्र से निरूपित हुआ सुगन्धित ।
 सीपज=सोनी । घरना=बाध का नख । धेइ=भेद ।

ध्रुवपद

छोटी छोटी गुड़ियां हंगुरियां छोटी,
 हथौली नख ज्योति मोती नानी बोज दसनपर ॥
 लखिन हांगन नेतै दुनक दुनक डौतै,
 सुनक सुनक दाडै ऐज्यां खुद मुखर ॥
हिरिनी बलिन कति हाडक रन जटित,
 खुद कर कनक पहुरियां मखिर वर ॥
 पिपरी पिहौनी नीली शौर उपना भोती,
 यादक दानिनि नानी छोड़े वारी पारिधर ॥
 उर दखनखा बडै करुना भोले वार,
 देती लखनि मनि दिनु सुनिनवर ॥
 अंजन रंजिन नैना नितवनि वित चोरै,
 मुख सोना पर वारी जनिन इतन तर ॥
 खुटकी बजावनि नवावनि नन्द-वरनि याद,
 केलि गावति मलहावति प्रेम मुखर ॥
 किलकि किनकि हँसै है है दंतुनियां लखै ।
 सुखदास मन दलै तोनरे दखन वर ॥१०६॥

आसावरी

नैया, मोहि दाऊ बहुत मिलयो ।
 मोसौ कहत मोत को लोनों, तू जहनुनि कय जायो ॥

१०—गुड़ियाँ=बालिकाएँ । हंगुर=हंगल, काँच के छोटे छोटे चूना ।
 सुनक सुनक=हमारे के बच्चे का रस लिये । मुखर=खड़े बाबा । पिपरी
 =पीपली । नीली=लज्जनी, सुन्दर । वारी=वारी बाग़ । मनि दिनु=
 दिखता । इतन=इतना । वर=पति । मलहावति=मिलती है ।

कहा कहों यहि रिस के मारे, खेलन हों नहि जातु ।
 पुनि पुनि कहत कौन है माता, को है तुमरो तातु ॥
 गोरे नन्द असोदा गोरी, तुम कन स्याम सरीर ।
 चुटुकी है है हंसत ग्वाल सय, मिरै देत थलपीर ॥
 नू मोही को मारन सोप्यो, दाउहि कयहुँ न सीमै ।
 मोहन को मुख रिस समेत लखि, असुमनि सुनि सुनि रीमै ॥
 सुनहु कान्ह बलभद्र चयारै, जनमत ही को धूत ।
 मूरस्याम मो गोधन की सी, हों माता न पूत ॥१॥

अवहैया

मो देखत असुमनि, तेरो टोटा, सयही मायी, सारै ।
 इदि सुनि कै रिस करि उठि धारै, बाँह पकरि सै चारै ॥
 एक कर सों भुज गहि गाढ़े करि, एक कर लोने सौटी ।
 मारनि ही मोहि अर्थादि कहैया, बेग न उगली भाटी ॥
 ब्रज लरिका सय तेरे आगे, भूयो कहत येनारै ।
 मेरे कहे नही नू माननि, दिखरायो मुख बारै ॥
 अखिन अघागइ लंड की महिमा, दिखरायै मुख मोही ।
 मिथु सुमेर नही बन पर्यंत, चहून भई मन माही ॥
 करने साँटि गिरन नहि जानी, भुजा छाँड़ि अकुलानी ।
 मूर करै असुमनि मुख मूँदहु, बलि गर सारैग पानी ॥१॥

११—दाउ=दादा। चयाम। भिखायो=बन किया। नू=तुम
 ममुरनि=ममुरा। चयारै=चयार। पूत=पूत। सी=सीमा।

१२—टोटा=तुल। गाढ़े करि=जोर से। सौटी=सकड़ी। बारै=
 बार, दोहरा बार। मारैगानी=दाप में पकड़ लेने वाले; शिष्ट
 को।

गौरी

देखि सखी, बन ते जु बने, ब्रज आयत है नंदनंदन ।
 सीस सिखंडाँ मुख मुरली तिमि, यन्यो तिलक उर चंदन ॥
 कुटिल अलक मुख चंचल लोचन, निरखत अति आनंदन ।
 कमल मध्य मानों द्वै खंजन, बंधे आइ उड़ि फंदन ॥
 अरुन अधर छवि दसन विराजत, जय गायत कलमंदन ।
 मुक्ता मनो लालमनि मैं पुट, धरे मुरकि घर बंदन ॥
 गोप बेप गोकुल गो चारन, हँ प्रभु असुर निफंदन ।
 सूरदास प्रभु मुजस यखानत, नेति नेति स्मृति छंदन ॥१३॥

भैरवी

मैया, मैं न चरैहों गाइ ।
 सिंगरे ग्वाल घिरायत मोलों, मेरे पाई पिराइ ॥
 जो न पत्याहि पूछ बलदाउहि, अपनी सौहँ दिवाइ ।
 यह मुनि मुनि अनुमति ग्वालनि को, गारी देत रिसाइ ॥
 मैं पठवति अपने लरिका को, आवैं मन बहराइ ।
 सूर स्याम मेरो अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ ॥१४॥

सारंग

X मेरे साँवरे जय मुरली अधर धरी ।
 मुनि मुनि सिद्ध समाधि टरी ॥

१३—बने=बनार गये हुए । सिखंडाँ=मोर पंख । फंदन=जात ।
 कल मंदन=धोरे धोरे सुंदर ध्वनि से । पुट धरे=बंद करके रख दिये । नेति
 नेति="ऐसा नहीं है" "ऐसा नहीं है" ।

१४—घिरायत=इकट्ठा कराने हैं । पत्याहि=विश्वास
 सौह=सौमंद । बहराइ=बढ़ता कर । पठि=छोटा सा । रिंगाइ

मुनि थके, देव विमान ।
 सुरवधू विष समान ॥
 गृह नखत नञ्जत न रास ।
 याही बंधे धुनि पास ॥
 मुनि आनंद उमंगि भरे ।
जल चल के अचल टरे ॥
 चराचर गति विपरीति ।
 मुनि वेनु कल्पित गीति ॥
 भरना भरत पावान ।
गंधर्व मोहे गान ॥
 मुनि खग मृग मान धरे ।
 फल दल तन मुधि बिसरे ॥
 मुनि धेनु अति थकित रहे ।
 तन दग्ध नहीं गहे ॥
 पद्यवा न पीयें धीर ।
 पंथी न मन में धीर ॥
 हुम बेसी चपल भये ।
 मुनि पक्षव प्रगटि भये ॥
 जे बिटप चंचल पात ।
 ते निकट फें अकुलात ॥
 अकुलित जे पुनकित गान ।
 अनुराग नैन सुवान ॥
 मुनि चंचल पवन थके ।
 सरिता जलचलि न सके ॥
 मुनि धुनि चली ब्रजनारि ।
 मुन देद गेह बिसारि ॥

नुनि धकिन भयो समीर ।
 घहँ उलटाँ जमुना नीर ॥
 मन मोहन मदन गोपाल ।
 तन स्याम नयन विसाल ॥
 नय नील तनु घनस्याम ।
 नय पीत पट अभिराम ॥
 नय मुकुट नय घन दाम ।
 लाघन्य फोटिक काम ॥
 मन मोहन रूप धर्यो ।
 नय काम को गर्व हर्यो ॥
 मेरे मदन गोपाल ताल ।
 सँग नागरी प्रजयाल ॥
 नवकुंज जमुना कूल ।
 देखत सुरदास जन फूल ॥ १५ ॥

विलापल

माई री, मुरली अति गर्व काहू बढति नाहीं आजु ।
 हरि को मुख कमल देखि, पायो सुखराजु ॥
 देखत कर पीठ ढोढ, अधर छत्रदाहो ।
 चमर चिकुर राजत तहँ, सुन्दर सभा माहो ॥
 जमुना के जलहि नाहि, जलधि जान देति ।
 सुर पुर ते सुर दिनान, भुवि बुलाइ सेति ॥

१२—सनापि=इ दशा, जिसमें सोनी रूपने मन का कतरनितक
 लय कर लेता है । सल=राशि; पशों के १२ स्थान । पाल=पाल; आड ।
 केनु=कसी । बुझन=बूझा है । दान=नाश । बड़का=बड़का । लार=
 प्यारा । हूर=तिनारा । पूर=प्रलय होता है ।

शास्त्र चर जंगम अहं, करति जीति अजीति ।
वेद की विधि भेटि चलति, आपने ही रीति ॥
बंसी बस सकल सुर, सुर नर मुनि नाम ।
भीषति ह भी बिसारी, पही अनुराग ॥

देश

✕ भागरि गागरि लिये पनिघट ते घरहि आवै ।
प्रीवा डोलत सोचन सोलत, हरि के चितहि चुवावै ॥
ठठकनि चलै मटक मुंह मोरै, थंरट भौह चलावै ।
मनहुं काम सैना अंग सोभा, अंचल धरज फहरावै ॥
गति गयंद कुच कुंभ किकिनी, मनहुं घंट भडनावै ।
मोतिन द्वार जलाजल मानों, सुभी दंत मलकावै ॥
मातहुं चन्द मदायत मुख पर, अंकुस बेसरि लावै ।
रोमाशली-मूँडि तिरनो लौं, नाभि सरोवर आवै ॥
पग जेहरि जंजीरनि जकको, यह उपमा कछु पावै ।
घट घट भलकि कपोलनि किनुका, मानों मढ़हि चुवावै ॥
बेनी डोलनि दुहुं नितम्ब पर, मानहुं पूछ हलावै ।
गज सिरदार सुर को स्वामी, देखि देखि मुख पावै ॥१७

१६—मारं=पद शब्द 'सखी' के लिये भी आता है । बदनि=बैठा है । पीट=आगन । चर=चिह्न । चर=चलकायची हरी चैर । जमुना = देवि=मुरली को मनोहर हानि मुनकर जमुना का जल स्थिर हो जा है । स्थावर=गढ़ । पर=चैत्र । भी=जम्मी ।

१७—भागरि=पड़ा । डोलत=चंचलता से थारों ओर देखने मोरै=मोड़नी है । थंरट=देहा । कुंभ=दायी का मग्नर, जिसकी उग मनी से दी गयी है । भडनावै=पन रही है । जनाजन=कनाभल । सु

जैभित्री

ब्रजहिँ दमे आपुहिँ बिसरायो ।

प्रकृति पुरुष एकै करि जानहुँ, यातनि भेद करायो ॥
जत धल जहां रहो तुम बिनु नहिँ, देव उपनिषद गायो ।
है तनु जांच एक हम तुम दोउ, सुख कारन उपजायो ॥
सूरस्याम सुख देखि अतप हँसि, आनंद पुंज बढ़ायो ॥१॥

देश

करि मन नंदनंदन ध्यान ।

सोह चरनसरोज सांतल, तजि बिपै रस पान ॥
जानु जंघ दिनंग सुंदर, कलित कुंजन, बंध ॥
कोहनी कटि पात पटु दुति, कमल केसर खंड ॥
मनु मयाज मयाज दीना, किकनी कल राउ ।
नानि हृदय रोनायली अति, चले सैन सुभाउ ॥
कंठ मुक्तानात मलयज, उर बनो बनमात ।
सुरसरो के तीर मानो, लता स्याम लमात ॥
बाहु पानि सरोज पल्लव, गहे मुख मृदु देतु ।
अति बिराजति घदन विधु पर, सुरनि रंजित रेनु ॥
अरुन अघर कपोल नासा, परन सुन्दर नैन ।
चलित कुंडल गंड मंडल, मनहुँ निर्वत नैन ॥

सांतल का कांटी सेने का पोला जो हाथों के दांत पर बढ़ाया जाता है ।
तिरनी=तीली, कीड़ी । जेहर=पायबंद । विनुका=बूढ़ ।

१॥—बाहु=हथिये हरद को । मयजि=मांस । पुरु=परमात्मा ।
हम कारन=आनंद अनुभव करने के लिये । अरु=अनंद नंद ।
इस पद में मुद्गादैनवाद का निरूपण किया गया है ।

कुटिल कच मू तिलक रेखा, सोस सिखि भीखंड ।
 मनु मदन धनु सर सँधाने, देखि घन कोदंड ॥
 सुर भीमोपाल की छवि, दृष्टि भरि भरि लेन ।
 प्रानपति की निरखि सोभा, पलक परन न देत ॥१६॥

सारंग

१६—अद्भुत एक अनूपम याग ।
 जुगल कमल पर गज कोडत है, तापर सिंह करत अनुराग
 हरि पर सरवर सर पर गिरिवर, फूले कंज पराग
 दक्षिण कपोत यस्य ता ऊपर, ता ऊपर अमृत फल लाग
 फल पर पुद्गुप पुद्गुप पर पल्लव, तापर सुक पिक मृग मद् का
 खंजन धनुष चंद्रमा ऊपर, ता ऊपर एक मनिधर नाग
 अंग अंग प्रति और और छवि, उपमा ताको करत न त्या
 सुरदास प्रभु पियहु सुधारस, मानी अधरनि के यह भाग ॥

चिह्नार्ग

१७—लोचन भूत भय री मेरे ।
 लोक लाज बन घन बेली मजि, आतुर है जु गड़े रे

१६—विषय इत=मोग विजास । कल राव=मुन्दर शब्द । र्ज
 चकन, दिवने रूप । शिली=गौर । कोदंड=धनुष ।

१७—जुगल कमल=राधिका जी के दोनों चरण । गज=हाथी ।
 हाथी के पैरों से जाँघों की उपमा दी गयी है । हरि=सिंह । सरवर=ज
 नाभि । गिरिवर=वरुण; खानी । कंज=कमल; स्नान । कपोत=1
 कौट । अमृत-रत्न=मुन । पुद्गुप=पुष्प; चिबुक । पल्लव=पत्र; अंग ।
 होला, नाद । मृगमद=अमृता । मणिधर नाग=मणियों से सुँधी हुं
 बाग के बसाने, इस पद में भीराधिकाजी का नखतिल
 वर्णन किया गया है । यह पद दृष्टिकृत है ।

स्याम रूप रसुयारिख लोचन, तहां जाइ लुच्ये रे ।
 लपटे लटकि पराग विलोकनि, संपुट लौन परे रे ॥
 हंसनि प्रकास विनास देखि कै, निकसत पुनि तहँ बैठत ।
 मुरस्यान अयुज कर चरननि, जहँ तहँ ममि व्रनि पैठत ॥२१॥

विहाग

नैन भये घोहित के बाग ।

उड़ि उड़ि जात पार नहि पावै, फिरि आवन तिहि लाग ॥
 ऐसी दशा भई री इनकी, अथ लागे पढ़ितान ।
 मो परजत परजत उठि धाय, नहि पायो अनुमान ॥
 पर समुद्र सोये सासन ये, धरै कहां सुगवासि ।
 मुनहुँ सर ये चतुर कहावन, यह छुदि महा प्रकासि ॥२२॥

भँभोटी

रास रस रीति नहि दरनि जायै ।
 कहां पैसो पुद्धि कहां पर मन रह्यो,
 कहां रह विस्रि जिय व्रम मुलायै ॥
 जो कहीं वीन माने नियम लगन जो,
 एना दिन नहीं या रसहि पायै ॥
 नाच सौ भई दिन भाव नै ये नहीं,
 भाष हो नहि भाष पर दसायै ॥
 यह निज नंद यह शान पर स्थान है,
 दरस दंपति नजन मार गाजै ।

२१—रसुयारिख । प्रकाश-प्रकाश ।

२२—मुरस्यान । मुरस । अयुज । अयुज । चरन । चरन । ममि । ममि । व्रनि । व्रनि । पैठत । पैठत ।

विहारा

यसोदा बार बार यों भायै ।

है प्रज में फौड हित् हमारो, चलत गोपालहिँ रासै ॥

कहा काज मेरो दृगनमगन को, नृप मधुपुरी बुतायो ।

सुफलक सुन मेरे प्रान हनन को, काल रूप है आयो ॥

वर ये गोधन हरौ फंस सय, मोहि धंदि लै मेलो ।

इतने ही मुख कमल नयन मेरी, अँखियन आगे खेलो ॥

यासर बदन विलोकत जाँचो, निसि निज अँकन छाजँ ।

तेहि पिलुरत जो जीयो कर्मयस्त, तौ हैसि काहि बोलाजँ ॥

कमल नैन गुन देखत देखत, अघर बदन कुन्हिलानो ।

सुर कहाँ लागि प्रगट जनाजँ, दुखित नन्द की रानी ॥२३॥

विहारा

मेरे कुँहर कान्ह दिन सय कहु वैतेहि घरयो रहै ।

को उठि प्रात होत लै भाखन, को कर नेत्र गहै ॥

सुने भवन असोदा सुत के, गुन गुनि सुत सहै ।

दिन उठि घेरत ही घर ग्वारिनि, उरहन फौड न कहै ॥

जो प्रज में आनंद हो तो लो, मुनि मनसहु न गहै ।

सूरदास स्यानी विनु गोकुल, कौड़ो ह न सहै ॥२४॥

२४—दृगनमगन=वचन में धोह-का प्यार का नाम । मधु-
री=मधुर । नृप=राम से तात्पर्य है । सुफलक सुत=सूर । वर=चाहे ।

२५—वैतेहि=व्यो का लो । रो=नयनी । गुनि=गुण करके ।
रानी=जाने ।

रदन दुराह बैठि मंदिर में, यदुरि निसापति उदय करैगो ।
 दूर सखी अपने इन नैननि, चन्द्र चितै जिनि, चन्द्र जरैगो ॥२६॥

चिलावल

नाथ, अनाथन की मुधि लीजै ।
 गोपी ग्वाल गाइ गोस्तुत सब, दीन मलीन दिनहि दिन छीजै ॥
 नैन सजल धारा यादो अति, बूझत ब्रज किन कर गहि लीजै ।
 रतनो विनती सुनहु हमारे, चारक हू पतियाँ लिखि दीजै ॥
 वरन कमल दरसन नव नौका, करनारिधि जगत जस लीजै ।
 चरदास प्रभु आस मिलन की, एक बार आयन ब्रज कीजै ॥३०॥

मलार

सखी, इन नैनन तें घन हारे ।
 विनही रितु वरपत निसियासर, सदा मलिन दोउ तारे ॥
 ऊरध स्वास समोर तेज अति, मुख अनेक हुम डारे ।
 दिसिन्ह सदन करि बसे धवन खग, दुख पावस के मारे ॥
 दुरि दुरि यूँ परत कंचुकि पर, मिलि काजर सौँ फारे ।
 मानौ परम कुटी सिव कीन्ही, विवि सुरति धरि न्यारे ॥
 सुमिरि सुमिरि गरजत जल छाँड़त, अंशु सलिल के धारे ।
 बूझत ब्रजहिँ सूर को रासै, विन गिरिवरधर प्यारे ॥३१॥

३०—दीजै=दुपते होते जाते हैं । किन=क्यों नहीं । चारक=एक बार ।
 पतियाँ=चिट्ठी ।

३१—तारे=आँखों की पुतलियाँ । ऊरध स्वास=आह । हारे=हारे ।
 सिव=शिव मूर्ति से स्तनों की उपमा दी गयी है । विवि=बो ।
 रासै इतिशक्ति की भी अति हो गयी है !

पंकज-परम-पंक में विहरत, विधि कियौ नीर निराले ।
राजिव रवि को दोष न मानत, ससि सौँ सहज उदास ॥
प्रमट प्रीति दसरथ प्रतिपाली, प्रियतम को बनशम ।
सुर स्याम सौँ पतिप्रत कीन्हो, छाँड़ि जगत उपदास ॥ ३६ ॥

विलायल

✧ सय जग तजे प्रेम के नाते ।
चातक स्वाति थुँद नहिँ छाँड़त, प्रमट पुकारत ताते ॥
समुझत भीन नीर की बातें, तजत मान हठि हास ।
जानि कुरंग प्रेम नहिँ त्यागत, जदपि व्याध सर मार ॥
निमिष चकोर नैन नहिँ लावत, ससि जोवन जुग धीते ।
ज्योति पतंग देखि यपु जारत, भये न प्रेम घट रीते ॥
कहि अलि, क्यौँ बिसरति ये पानें, सँग जाँ करि प्रजराज ॥
कैसे सुरस्याम हमैं छाँड़ि, एक देह के काज ॥ ३७ ॥

विलायल

✧ ऊधो, मन माने की बात ।
दाख थोदारा छाँड़ि अमृत फल, विषकीरा विष खात ।
जो चकोर काँ देह कपूर कोर, तजि अगार अघात ।
मधुप करत घर कोरे काठ में, बँधत कमल के पात ।

१६—पर=परीर । दशम=निरन्तर, बेपरवाह । प्रमट, बन
राज के बन जाने पर दशम ने प्रणय त्याग दिये ।

१७—जनि=जानि नाम का नवज । व्याध=बढ़ेनिया । मार
करता है । नीने=बली ।

ज्यों पतंग हित जानि आपनो, दीपक सौं लपटात ।
सूरदास आशो मन आसो, सोई ताहि नुहात ॥ ३२ ॥

भैरवी

✱ कहाँ तौ कहिए भ्रज को रात ।
नुनहु स्थान तुम दिन उन लोगनि, जैसे दिवस बिहात ॥
गोपी ग्वात गार गोमुत वै, नलिन यदन हस्त गात ।
परम दीन जनु तिलिर दिनोहत, झंझुन गन दिन पात ॥
जो कहूँ आवत देखि दूर तैं, तेष पँछात कुसलात ।
चलन न देत प्रेम आतुर डर, कर चरनन लपटात ॥
पिक चातक बन बसन न पावहि, दासत यतिहि न खात ।
सुरस्याम सँदेसन के डर, पथिक न डहि नग जात ॥ ३३ ॥

देश

✱ चित दै सुनौ स्थान प्रवीन ।
हरि तुम्हारे विरह राधा, नैं जु देखी छीन ॥
तज्यो तेल तनोत भूपन, झंग यसन नहीन ।
कंकना कर बान राख्यो, गाढ़ भुज गहि लीन ॥
उर सँदेसो कहन सुंदरि, सुवन मोहन छीन ।
खलि मुद्रायति चरन झरनी, गिरि घरनि यत हीन ॥
कंठ पवन न दोल आवै, हृदय आँसुनि भीन ।
नैन जन नहि सोई दीनों, अस्तित आपदु दीन ॥

३२—ज्यों पतंग हित जानि आपनो, दीपक सौं लपटात है ।
लपटना ।

३३—विहारीजी हैं । दिनो-रात्रि से साथ भुंज । पिक-
चातक सब पक्षी भ्रज में नही जाते हैं और न वहाँ कुछ खाते ही हैं,
क्योंकि वहाँ के लोग इन्ते भ्रज के लदा सीला करने ही रहते हैं ।

पंकज-परम पंक में 'विहरत, 'विधि कियो नीर निरास
राजिय रवि को दोष न मानत, 'ससि सौ' सहज उदास
प्रगट प्रीति दसरथ प्रतिपाली, प्रियतम को बनवास
सुर स्थाम सौ पतिप्रत कीन्हो, छाँड़ि जगत उपहास ॥ ३१

विलायल

५ सय जग तजे प्रेम के नाने ।
घातक स्वानि बूंद नहि छाँड़न, प्रगट पुकारत ताते ।
समुझन मीन नीर की बातें, तजत प्रान हठि हारत
आनि कुरंग प्रेम नहि त्यागत, जदपि ध्याध सर मारन
निमिष चकोर नैन नहि लावत, ससि ओधन जुग भीते
ज्योति पतंग देखि धनु जारन, भये न प्रेम घट रीते
कहि अलि, क्यों विसरति ये जानै, संग जो करि ब्रजराजै
कैसे सुरस्थाम हमें छाँड़ै, एक देह के काजै ॥ ३२

विलायल

५ ऊषो, मन माने की बात ।
दाख छोदारा छाँड़ि अमृत फल, धिपकीरा धिप खात
जो चकोर काँ देह कपूर कोइ, तजि अगार अधान
मधुप करत घर कोरे काठ में, बँधत कमल के पात

३१—घट=छरीर । उदास=निरपेक्ष, बेपरवाह । प्रगट . . . बन
काय के बन जाने पर दसरथ में ब्राह्म त्याग दिये ।

३२—जानि=जानि नाम का वचन । व्याप=बढ़िया । लाव
करना है । नैन=आँखी ।

मो' उग को' मिथ्या' कहि जाय ।

जटिल-सुमरे गुन गार ॥

८ , प्रेम भक्ति विनु मुक्ति न होई ।

नाम कृपा करि दीनै सोर ॥

श्रीर सकार हस देख्यो जोर ।

— हुन्हरी टपा दार सो दार ॥

इह तनु हि प्रभु जैमे साम् ।

यामे शब्दादिक. विग्राम ॥

अविष्टाना तुम हो मगधान ।

शाम्भो जगन् न त्वम अस्थान ॥

तुय म्यागा में पुहमी नाथ ।

म्याग्नु कप हम् लक्ष्म्यां म धान ॥

बहा बहि मगदरी अम्ननि बरै ।

बानी ममो ममो उदयरै ।

अपल गिला सगरीं हीं हंय ।

याने हस विरजय आशीस ।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पुनः नमः जितिया और न आदि ।
पुनः नमः जितिया और न आदि ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

गुरुः शिष्यः यद्वक्तुमिच्छति ।
तदा शिष्यः त्वं वदस्व ।

समुदायः ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कमलपत्र-वर्णित है कलकत्ता का गिरि दण्डा मण्डल मण्डल है । विष्णु-
मण्डल-वर्णित है मण्डल मण्डल मण्डल है । दण्ड-वर्णित, दण्ड-वर्णित



उम्र के फंद नाहिं परि घोर, चरनन चित्त लगान्त ।
बाहत सुर विरथा यह देखी, अनर क्यों हिरान्त ॥४६॥

नारंग

कहाँ मुग़ ध्वज को लौ संसार ।

कहाँ सुगन्ध बसो घट जमुना, यह मन सदा दिखार ॥
 कहाँ दनधान कहाँ राधा संग, कहाँ संग ब्रज धाम ।
 कहाँ रस रास दोन छनर मुख, कहाँ नारि तनु नाम ॥
 कहाँ लना, तर तर प्रति भूलनि, कुंज कुंज दनधान ।
 कहाँ बिरह मुख दिनु गोपिन संग, मूरखान मन बान ॥४०॥

अवधि

सदा एक, रस एक इत्येवमित्येव कदाचिद् अनादि अनूप ।
 फोटी कल्प दीपन मर्हि ज्ञानत, विहरत हुमत न्वरूप ।
 सत्त्वय तत्र प्रवृत्तये देव पुनि, नाया मय दिधि काल ।
 मूर्धनि रूप धीरति नारायण, मय है अंत गोपाल ।

१६—पुनःपुनः । मण्डितः=विशेष कष्ट की वशात् पुनःपुनः
मारी । पुनःपुनः । पुनःपुनः=पुनः पुनः ।

२४—यही सत्यमेव जयते, जिसकी सीढ़ें सारे ही का सीढ़िया
की बनकर बनने लीं। सत्य ही वह सत्य 'सत्यमेव जयते' के सत्य से बढ़कर
। सत्यमेव जयते । सत्यमेव जयते । सत्य ही सत्य सत्य
यह है। सत्यमेव जयते ही सत्य ही सत्यमेव जयते ।

५।—सुता सुतपुत्रादौ पुत्रः । सदा पुत्रः ॥ पुत्रः । अनेक-
विधो विद्युः । अनेकवर्णानाम्बुः सदा अनेकः । अनेकवर्णः
अनेकः । पुत्री पुत्रपुत्रे के विद्युः अनेक वस्तुना के पुत्री = पुत्रपुत्रः ।

ब्रह्म योग पुनि ज्ञान उपासन, सबही भ्रम भरमायो ।
 भीषणम शुद्ध तत्त्व सुनायो, लीला भेद बनायो ।
 नादिन में हरि लीला गाथी, एक लच्छु पद बन ।
 ताही सार 'मूर-सारायलि' गायत छनि आनन्द ॥

विलायल

हरि हरि हरि हरि सुमित्त करौ ।
 हरि बरनादिद उर धरौ ॥
 हरि की कथा होइ जय जहाँ ।
 गंगादू धलि आर्य तहाँ ॥
 जमुना निधु सरस्यति आर्य ।
 गोदावरी विलाय न लार्य ॥
 गन्ध तीर्थ को बामा तहाँ ।
 गूर हरि कथा होइ जहाँ ॥५२॥

मिहिराज का अभिरामदल दिया है । मुरादम की इतक यह जिन्य है ।
 मुरादमदल देवदल धनि ।

इस वद में मुरादमकी देवदल मिहिराज मिल गई है । मु-
 र्नादा हज्ज मिहिराज मिल जाने है । इस मिहिराजकी में इतक
 (कृष्ण जीव, मिहिराजकी मरदम 'हज्ज' कहने है) की गर्दु बने ।
 की लीला बने है । मुरादम मुरादम काव जर्द मय जिन्य मिहिराज
 बने है ।

॥ मुरादमदल ॥

इस वद मिहिराजकी मरदम मुरादम मरदम मरदम है —
 मुरादम मरदम मरदम मरदम, मुरादमकी मिहिराज मरदम
 मरदम मरदम मरदम मरदम, मुरादमकी मरदम मरदम

श्रीनन्ददास



छप्पय

लीला पद रस रंति ग्रन्थ रचना में नागर ।
सरस उक्ति युत युक्ति भक्ति रस गान उजागर ॥
प्रचुरय पथ लौं सुजसु रामपुर ग्राम निवासी ।
सकल सुकल संयलित भक्त पद रेनु उपासी ॥
चन्द्रहास-अग्रज सुहृद परम प्रेम पथ में पगे ।
ध्यानंददास आनन्दनिधि रसिकसुप्रभु हित रंगमगे ॥

—नामाजी



पर्युक्त छप्पय से केवल यह प्रकट होता है कि नन्ददासजी रामपुर ग्राम के निवासी थे। और चन्द्रहासके जेठे भाई से इनकी घनिष्ठ मित्रता थी। अब प्रश्न यह है कि रामपुर ग्राम और चन्द्रहास से क्या तात्पर्य है। पर इसमें सन्देह नहीं कि छप्पय में उल्लिखित नन्ददास अष्ट छाप के ही नन्ददास हैं, अन्य नहीं। यह बात बहुत वलित है कि 'नन्ददासजी गुस्तार्' तुलसीदास के बड़े या भाई थे। इसका प्रमाण '२५२ वैष्णवों की वार्ता' नामक कहा जाता है। स्वर्गीय बा० राधाकृष्णदासजी ने निज दित 'रस पंचाभ्यासी' में लिखा है कि "२५२ वैष्णवों की" में नन्ददास जी 'सर्नाडिया' ब्राह्मण तुलसीदास के

छोटे भाई थे। ये दोनों भाई रामानन्दजी के शिष्य 'इत्यादि'। मिथयन्धु विनोद में लिखा है कि 'वार्ता' देखने पर प्रगट हुआ कि उसमें नन्ददास का 'केवत' (?) ग्राहण गोस्वामी तुलसीदास का भाई कहा गया है। इससे प्रकट कि, नन्ददास जी कान्यकुब्ज ग्राहण थे।" बड़े भ्रम की बात कि एक ही 'वार्ता' से एक महोदय सनौदिया ग्राहण रहे हैं, तो दूसरे केवत अर्थात् कान्यकुब्ज* !

हमारे सामने वैष्णव ठाकुरदास सूरदास प्रकाशित मुंबई के जगदीश्वर प्रेस में मुद्रित '२५२ वैष्णव की वस्तु' प्रस्तुत है। यह संस्करण संवत् १९४७ का है। उसमें २५२ पर नन्ददासजी के संबंध में जो लिखा है उसे हम अविच्छिन्न करते हैं:—

"मो ये नन्ददास जी तुलसीदास के छोटे भाई होते। 'बिनकुं नाच तमासा देखवे को तथा गान सुनवे को बहुत हतां।' इत्यादि

नन्ददासजी की 'वार्ता' में न तो सनौदिया का ही न केवत ग्राहण का कोई उल्लेख मिला। न जाने केवत प्रसंग से विनोदकारों का क्या आशय है। 'वार्ता' में श्रीरामचन्द्र के अनन्य भक्त तुलसीदास का नाम अवश्य आया है,

* तमझ में नहीं आता कि हिन्दी नथरदा में यह कैम रिख कि "पूरा जिनका भाई और राजापुर के इंदे जिंदे कान्यकुब्ज द्विगिरि बन्नी दे, न कि सागरिया काश्रणा की" राजापुर साग म दा ता कान्यकुब्ज काश्रणों के आश्रन है। ये लोग भी पचाग रूपे स शी रिखायी बही है। इंदे जिंदे तो कोई कान्यकुब्ज-कुल है ही नहा नरकुर्तणि काश्रण ही पाए जाते है।

इन्होंने उस खजानी को रखद्वारे और उसके घर को द्वारिका
 समझ लिया। लाचार हो घरवाले उस स्त्री को लेकर अपने
 पिण्ड छुड़ाने गोकुल को चले। आप भी उन लोगों के पीछे
 चलने लगे। गोकुल गाँव में आकर गुसार् जी विठ्ठलनाथ
 जी के सदुपदेश से इनका सारा मोह भंग हो गया और कुछ
 दिनों बाद यह गुसार् जी के पट्ट शिष्यों में गिने जाने लगे।
 श्रीनयनीत प्रियजी के आगे नन्ददासजी प्रायः कीर्तन किए
 करते थे। इनकी भक्ति भाव भरी पदावली पर गुसार् विठ्ठल
 नाथजी ऐसे मुग्ध हो गए कि उन्हें अष्ट छाप में उपगु
 स्थान दे दिया। अष्ट छाप में यदि सूरदास सूर्य हैं, तो नन्द
 दाम चंद्रमा हैं। इन्होंने रास पंचाध्यायी, दशमस्कंध भागवत
 रुक्मिणी मंगल, रूप मंजरी, रसमंजरी, विरहमंजरी, क
 चितामणि माला, अनेकार्थ माला, दानलीला, मानलीला
 अनेकार्थ मंजरी, लाल मंजरी, श्याम संगार और चमर गीत
 रचना की। हिनोपदेश और गद्यात्मक नासिकेत पुराण
 इनके बनाए कहे जाते हैं। अब तक रास पंचाध्यायी, चमर
 अनेकार्थ मंजरी और नाममाला प्रकाशित हुई हैं। रास पं
 ध्यायी के तीन संस्करण हो चुके हैं। एक काशी नागरी प्र
 रिणी समा का, दूसरा था० बालमुकुंद गुप्त संपादित 'भा
 मित्र' का और तीसरा भी० प्रजमोहन लाल विशारद
 संपादित।

नन्ददाम जी की रचना इतनी रोचक और भावपूर्ण
 उनकी टक्कर लेने वाले ग्रंथ हिन्दी में बिरले ही हैं।
 रुक्मिणी का तो कहीं नाम भी नहीं। रास पंचाध्यायी
 हिन्दी का गीत गोविन्द कही जाय तो अन्याय न होगी।
 चंद लिखने में नन्ददास जी जितने रुतकार्य हुए हैं,

क्यों कल्प बधि नहीं हुआ । सुंदरपुत्र कोन लिखने वालों में भी
यही सर्वप्रथम है । कनेवार्त्त नामा में एक शब्द को कई
छंद दिए हैं । उदाहरण के लिए 'सारंग' शब्द नीचे दिया
जाता है:—

विह पानर बल बंध बुध, बर बाधल ह होय ।
सकल संकल निगलन, वाम विलन है सोय ।
दिनी मलार भुजंग पुनि, वो वध भातु मलान ।
। सारंग धामनयान वो, भक्ति हवा विधान ॥
सारंग संदेश वो बहान, वात दिवस बध भान ।
सम पानी का धन बहिर, संदेश बाधना बाध ।
रवि रवि रोरक समल हरि, दोहरि बंध बुरंग ।
बाधक बाधक होय हल, ये बहिर सारंग ॥

सामान्यता में कौन भी समझता है । कानों के साथ साथ
सर्वविधक सामान्यता भी हुआ है । जैसे:—

'कल बल भुजंग बल भुज, भुजंग विधान होय ।
विह विधान संदेश बहिर, बाध बाध पुनि बाध ।
विह संदेश बाध बल, धाने मलान बहिरान ।
को बाधे ल बाधना, वो ल बाधना बाध ।

इस प्रकारके दो कौनसेल बाधने बुध गुरुवार एवं भी
लिखे हैं । विहल कनेवार्त्त उदाहरण साथ संकलनको दो कानों
कानों हैं । निम्नलिखित विधान में बाधना को बाधना कनेवार्त्त में
एक बार है । यह विधान कनेवार्त्त कनेवार्त्त बाधने बल
हो बाधना बाधना है कि बाधना कनेवार्त्त बाधना है विधान
बाधना है ।

मन्दाराम के समकालीन धीधुरदामजी ने इसी भाषा और रसिकता को बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है—

मन्दाराम जो बहुत बहो, राग रंग में पानि
अच्छर सरस सनेह मय, सुनत होनि दिव जनि
रसिक दमा अदभुत हुनी, कान कवित सुन
वान प्रेम की सुनत ही, सुदत प्रेम जलपान
रसिक बाधों में किरी, मोजस नेह की रस
आये रस के बचन सुनि बेगि बियस है जा

पानिय में, मन्दारामजी परम भाग्यवत, महान् भा
उद्यमनिमाधान साधकिय हैं। इनकी रचना हृदय बेचि
पजिनी, सरस और सजीव है। आपकी प्राप्य रस
सुख सुंद तथा पद उद्भूत किए जाते हैं।

रास पंचाध्यायी

सन्त बरों कथानिधान धीमुख सुभा
सुख मोतिमय रूप मदा सुंदर अवि
हरि-लीला-रसमत्त सुदित निज बियरज ज
अहल गति कई नहीं अटक है निकले म
नीलोत्पल-दल क्याम अंग मय जोवन
वृद्धि अलक सुख कमल मनो अलि-अवलि नि
सुंदर मान बिमान दिगति जनु निकर नि
कल्प मति प्रतिविम्ब निमित्त को चंदि दि

१—नीलोत्पल-लीला कथन । निविन्द-वेरा, का
का । सुख-पार-वेरी, पान । प्रतिन्द-वेरी, मति

कृपा-रंग-रस-अयन नयन राजत रत्ननारे ।
 कृष्ण-रसामृत-पान-अलस फलु मृमधुमारे ॥
 अयन कृष्ण-रस-भयन गण्ड-मण्डल भल दूरसे ।
 प्रेमानन्द-मलिनद मन्द मुखकानि मधु परसे ॥
 उद्यत नागा दधर-विषय मुक्क की लुपि लीनी ।
 तिन विष अकुल भाँति लग्नत फलु हक मनि भीनी ॥
 फलु-काँठ की रंग देखि हरि धर्म प्रपामे ।
 काम-दोष-मद-लोभ-मोह जिहि निरखत नासे ॥
 उरपर पर शक्ति लुपि की भीरा दगति न जाई ।
 जेहि भीतर अगमगत निरग्नर फुंवर फगई ॥
 सुन्दर उद्गर उद्गर रंगमादलि रज्जवि भारी ।
 दिव-सरपर सर भारी पाली मनु इमनि पतारी ॥
 ला रस की वंदिषा मानि सोनित शस राहरी ।
 निरखे माने ललित भाँति उलु उपजन लहरी ॥
 जेहि जेहि निरखे निरखे सोनित रसजन राम ।

दासदास मेल-मुखा-रस ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथ श्री कृष्णार्चनम् ॥

मधुरं मधुरं मधुरं ॥

मधुरं मधुरं मधुरं ॥

जब दिनमनि ओकृष्ण द्रगन तें दूरि भये दुरि ।
 पसरि पयो अंधियार सकल संसार घुमइ घुरि ॥
 तिमिर प्रसित सय लोक ओक दुख देखि दयाकर ।
 प्रगट कियो अद्भुत प्रमोय भागवत विभाकर ॥
 जे संसार अंधियार अंगर में मगन भये घर ।
 तिन हित अद्भुत दीप प्रगट कीनो जु कृपाकर ॥
 श्रीभागवत सुनाम परम अभिराम परम मति ।
 निगम-सार सुकुमार विना गुद कृपा अगम अति ॥
 ताही में मणि अति रहस्य यह पञ्चाध्यायी ।
 तन में जैसे पंचभान अस सुक मुनि गार् ॥
 परम रसिक एक मित्र मोहि तिन आर्या दीनी ।
 ताही ते यह कथा अध्यामति भाषा कीनी ॥ १

× × × × × ×

ताही छिन उइराज उदित रस-रास-सहायक ।
 कुमकुम मंदिन वदन प्रिया जनु नागरि-नायक ॥
 कोमल किरन अरुन मानों बन व्याप रही र्यों ।
 मनसिज भेदयो फागु घुमइ घुरि रह्यो गुच्छाल ज्यों ॥
 फटिक छटा सी किरन कंज-रंधन जब आई ।
 मानई वितन वितान सुदेस तनाय तनारै ॥

निरपेक्षोर सुहृद । एक मित्र=मित्र का नाम स्पष्ट नहीं किया गया है ।
 करने है, मन्दामयी का मित्र से गंगा बार्जी से आशय है । गंगा की
 भीगुनाई निरुद्धनायकी की शिष्या थी । यह कविता में अपना नाम
 "की शिष्या विविधरथ" लिखा करनी थी ।

१—फटिक=कटिक, किलोराम्पर । रंज=देह । वितन=धनन, काम
 के । सुदेस=सुन्दर । रमा रयन=विष्णु । भोग भाषा=वरा प्रवृत्ति, परी

पुनि पद पिय के पाय बहुरि धरिहँ सुन्दर अंग ।
 निधरक है यह अधरामृन पैहँ फिरिहँ मंग ।
 सुनि गोपिन के बचन प्रेम आंच सों लगी त्रिय ।
 पिघलि चहयो नयनीत मोत सुन्दर मोहन दिय ॥३॥
 * * * * *

दोहा

कुंज कुंज दूदत फिरी, खोजत दीनदयाल
 प्राणनाथ पाये नहीं, थकल भरै ग्रज पाल

रोला

बिरहाकुल है गरै सयै पूछन बेली बन
 को जड़ को चैतन्य न कछु जानत बिरही जन
 हे मालति, हे जाति, जूथके, सुनि हित दे बिर
 मान-हरन मन-हरन लाल गिरिधरन लखे इत
 हं केतकि, इततैं किनहुं चितये पिय रुसै
 के नैदनन्दन मन्द मुसुकि तुमरे मन मूसे ॥
 हे मुक्ताफल, येल धरे मुक्ताफल माला ॥
 देखे नैन विस्तार मोहना नैद के लाला ॥
 हे मन्दार उदार धीर करधीर महामति ॥
 देखे कई बनधीर धीर मन हरन धीर गति ॥
 हे चन्दन, दुख ^{दुख} चन्दन-सय की जरन जुड़ावहु ॥
 नैदनन्दन जगचन्दन चन्दन हमहि यतायहु ॥

४—रो.....बिरही जन=यह पद मेघदूत के 'कामार्तादि व
 कृपगारयेननायेननेनु' का उल्लास जान पड़ता है। जानी=जुही। तृपि
 पृथिवा, पुत्र विरोध। रुसे=रुटे, रुद्ध। मूसे=मुगाये, हरे।

हे तुलसी कलशनि सदा गोविन्द-पद-ध्यारी ।
 क्यों न कहौ तुम मन्द मुग्धन सौं बियाँ हमारी ॥
 जहँ आयत तम फुंज पुंज गहवर तरु छारै ।
 अपने मुख चाँदने चलत सुंदर बन मारै ॥
 इहि विधि बन धन हँडि वृक्षि उनमन को नारै ।
 करन लगी मनहरन लाल-लीला मन भारै ॥
 मोहनलाल रसाल की लीला इनही सोई ।
 कोयल तन्मय भई कछु न जानै हम कोहै ॥ ४ ॥

* * * * *

{ पारिधिह तें तुम जु कठिन सुन हो मोहन पिय ।
 मनु यजाय बुलाय सुगी सी मोहि हनीं तिय ॥
 मान पिता पति कन्धु सबै तजि तुम ढिग आरै ।
 जानि वृक्षि अधरात गहर बन महँ फिरि आई ॥
 अजह नहि कछु विगछो रचक तुम पै आयौ ।
 मुरली को जूडो अधरामृत आय पियायौ ॥
 फनी फनन पर अरपे डरपे नहि नेक तय ।
 छतिवन पर पग धरत डरत क्यों कान्ह कुंवर अर ॥
 जानति हैं हम, तुम जु डरत ब्रजराज दुलारे ।
 कोमल धरन सरोज उरोज कटोर हमारे ॥

मकनन । दुराय=द्विपा कर । तमबु ज=तमघन वृक्षावली से अधरी कुंज ।
 मइय=दुर्गम; मधन । चाँदना=चंद्रमा का प्रकाश । उनमन=उन्मत्त, पागल ।
 ला ३ लीला=प्यारे कृष्ण का चरित्र । तन्मय=नलीन, कृष्ण रूप ।

५—पारिधिरि=पदेरिषा^२ । हनीं=मार डालो । अधरान=साथी राज ।
 गहर=पषय । रचक=जरा सा भी । फनी=साक्षिय नाम । अरपे=नीप
 रमे । डरपे=डरे । उरोज=जन । हरे हरे=धीरे धीरे । वन=वैसे । अरारी=

हैं हैं विय धरै हमहुं तो निषट् पिपारे ।
 किन अदयो में अदत, गड़त तुन कूर्प अन्यारे ॥

* * * * *

जो अनेक जोगेश्वर हिय में ध्यान धरत है ।
 एकाई वर रूप एक सब को मुख बितरत है ॥
 जोगी जन बन जाय जतन करि कोटि जनम पवि ।
 अति निर्मल करि राखत हिय में आसन रचि रचि ॥
 कहु दिन तहँ नहिं जात नवल नागर सुंदर हरि ।
 ब्रज जुवतिन के शब्दरपर बैठ अति रुचि करि ॥
 कोटि कोटि ब्रह्मांड जदपि एकहि ठकुरारि ।
 ब्रजदेविन को सभा साँवरे अति द्रवि पारि ॥
 ज्यों नव मंडल मध्य कमल फाँँका मुञ्जारी ।
 त्यों सब सुन्दरि सन्मुख सुन्दर स्थान विजारी ॥ ६ ॥

* * * * *

सब बोले ब्रजराज-कुँवर हौं रिनो तुम्हारे ।
 अपने मनते दूरि करो किन दोष हमारे ॥
 कोटि कहर तगि तुम प्रति प्रति उपकार करो जौ ।
 हँ मनहरनी, तरनी, उरिनो नाहिं तयौ तौ ॥
 सकल बिस्व अपस करि मो माया सोहति है ।
 प्रेमनयो तुनरी माया सां मोहि मोहति है ।

वन । अदत=दुपने हो । कूर्प=रक्त प्रसार की कँधीरी घात । अन्यारे=अनिवार्य, नुकीले ।

६—नवि=नक कर । कहुदिन=थोड़ा समय । शब्दर=शब्द
 सन्मुख=सन्निहित; राज । साँवरे=आसन ।

तुम झु करी सो कोड न करै सुनि नवल-किमोरी
लोक वेद की सुदृढ़ सुखला तुन सम तोरी ॥ ७ ॥

सकल तियन के मध्य साँवरो पिय सोभित अम
रत्नायलि मधि नीलमनी अद्भुत भलके उम
नय मरकत मनि स्याम कनक मनिगन ग्रजवाला
पुन्दरावन को रीझि मनो पहिरारै माला
नूपुर कंकन किकिनि करतल मंजुल मुरली
ताल मृदंग उपग चंग पेकै सुर जु रली
मृदुल मधुर टंकार ताल भंकार मिली धुनि
मधुर अंत्र की तार भंवर गुंजार रली पुनि
तिसिय मृदु पद पटकनि चटकनि करनारनि की
लटकनि मटकनि भलकनि कल कुंडल हारन की
साँवल पिय के संग नृतति यो ग्रज की पाव
जनु घन मंडल मंजुल खेलनि दामिनि माला
द्विविनि तियनि के पाछे आछे यिलुनित वेव
संचल रूप लनानि मंग डोलनि अलिमोदी
मोहन पिय की मुसकनि दलकनि मोर मुकुट
सदा बसी मन मेरे फरकनि पियरे पद की
वदन कमल पर छलक छुटी कहु अम की मलकनि
सदा रदी मन मेरे मोर मुकुट की दलकनि

७—रिनी=रानी, अनुपम। किन=कपों नदी। त्रिगं
वेवाह। अवाग=आग। मृद=मृदुला=मधुर सागर।

८—रत्नायलि=रत्नों की रत्नि; रत्नों के समान तोरिदा।
नीलमनी। कनक=सुवर्ण। किकिनि=किकी। करतल=हथेली।

कोउ सखो कर पहरनि नितनि यों छियनो तिय ।
मानो करतल फिरत देखि नट लट् हान पिय ॥ +
कोउ नायक के भेद भाव लायन्य रूप यस ।
अभिनय कर दिखरायति अरु गावति पिय के अस ॥ = ॥

* * * * *

पिय के मुकुट की लटकनि मटकनि मुरली रव अस ।
कुहकि कुहकि मनु नाचत मंजुल मोर भरे रस ॥
तिरते सुमन सुदेस जु वरसत अति आनंद भरि ।
मनु पदगति पर राकि अलक पूजनि फूलनि करि ॥
रम जल सुंदर बिंदु रंग भरि अति छवि वरसत ।
प्रेम-भक्ति-विरवा जिनके तिनके हिय सरसत ॥
सुन्दावन को विविधि पवन विजना जु बिलांलें ।
जहँ जहँ अमित बितोकत तहँ तहँ रस भरि डोलें ॥
बड़े अरुन पट दासन मंडल मंडिन ऐसे ।
प्रेम जाल के गोत्रक फलु छवि उपजत जैसे ॥
कुसुम धूर धूमरी कुंज मधुकरनि पुंज जहँ ।
ऐसेहु रस आवेस लटक कोन्हों प्रवेस तहँ ॥ ६ ॥

* * * * *

नम तर्गः एक प्रहार का बाजा । कटकनि=कट कट छानि । बरतारनि=
राधों की ताड़ियों में । छाये=छाया की तरह से । बिगलित=डिल्ली हुई ।
अलि सेनो=नंदों की भेरी छपांड पंक्ति । पहरनि=पहरना । निररे=
पंक्ति । मन की मटकनि=रतने की बूँदें । लायन्य=लायन्य; सौंदर्य ।

६—रव=रस । रस भरे=पवनविन । फूलनि करि=रुखों में । निरका=
नंद । विविध पवन=लौकिक, नंद और सुगंध वायु । विजना=पंखा ।

भोजि यसन तन निपटि निपट छवि अंकित है अस ।
 नैननि के नहिँ येन, येन के नैन नहीं अस ॥
 मोर निचोरत जुवतिन देखि अधीर भये मनु ।
 तन विहुरन को पीर घोर रोचत अँसुअन ऊनु ॥
 निरखि परस्पर छवि सों विहरति प्रेम मदन भर ।
 प्रकृति घाम की छाति अन्नहुँ धरकत जिनके डर ॥
 तब एक दुम तन चितै कँवरघर आशा होनी ।
 निर्मल अम्बर भूपन तिन तहँ बरसा कीनी ॥
 अपनी अपनी रुचि के पहिरे यसन घनी छव ।
 जगत मोहिनी जे निनकी प्रजतिय मोहनि सब ॥
 प्रह्न मुहुरत कँवर कान्ह पर घर आये जव ।
 गोपन अपनी गोपी अपने दिग जानी तब ॥
 नित्य राम रस मत्त नित्य गोपी जन बक्षन ।
 नित्य निगम जो कहत नित्य नवतन अति दुरलभ ॥
 यह अरभुन रम राम महाछवि कहनि न आवै ।
 सेव सहस मुग गावन मोह अन्त न पावै ॥
 निष मनही मन ध्यावै काहु नाहिँ जनावै ।
 सनक सनन्दन नारद सारद अति मन भावै ॥ १० ॥

निचोड=झरन है । बागन=बगन, वन । मोलक=मोला को गुन
 वृत्ती=वृत्ती । घोर=घोर ।

१०—गीत=गीता । घोर=घोर । तन...जनु=तन...जनु...
 तन है । तन=घोर । कँवरघर=भीरुघर । छव=छवि के अनुवर्तन
 ११. अरिभक्त भवन वा छव कर दिया है । बध मुहुरत=अपःकाय, मर
 वने । नरुप=कान, धारे । नारद=नारदा, गान्धर्वी ।

यह उज्ज्वल रत्न-माल छोड़ि जतनन करि पोंई ।
 सावधान होइ पहिरौ इहि तोरी नति कोई ॥
 अवन कोरतन ध्यान सार सुनिरन को है पुनि ।
 ग्यान सार हरि ध्यान सार भुति सार गुयी पुनि ॥
 अथहरनी ननहरनी सुन्दर रत्न विलरनी ।
 नन्ददास के कण्ठ बली नित संगत करनी ॥ ११ ॥

भँवर गीत

जयव को उपदेस सुनो ब्रज नागरी ।
 तब सोन सादन्य सदै गुन आगरी ॥ भँवर
 प्रेम घुडा रत्न कपिनी, उपजायत सुख पुंज ।
 सुन्दर स्थान विज्ञासिनी, नय सुन्दरन कुंज ॥
 सुनो ब्रज नागरी ॥ १॥

* * * * *
 कहेन स्थान उदैस एव मैं तुम पै आर्यो ।
 कहेन समै संकेत यहं अथर नहि पायो ॥
 सोचत ही मन में सरो, कय पाई इह दारो ।
 कहि सदैव नंददास को, बहुरि सुखपुगे जाई ॥
 सुनो ब्रज नागरी ॥ २॥

* * * * *
 जो उनके गुन होय वेद क्यों ननि बखानै ।
 निरगुन सगुन आनना रवि ऊपर सुख सानै ॥ ३ ॥

११—तब सावधान होइ पहिरौ इहि तोरी नति कोई ।
 भुक्तिमार्गों का निषेध ।

१—भगवत्प्रेम ।

२—नंददास के कण्ठ ।



जिनकी वे आँखें नहीं, देखें कय घट रूप ।
तिन्हें सांच क्यों ऊपजै, परे कर्म के कूप ॥

सखा सुन स्याम के ॥ ६ ॥

✕ जो गुन आवै दृष्टि मांझ नहि ईश्वर सारे ।
वे सब इनतें यामुदेव अच्युत हैं न्यारे ॥
इन्द्रा दृष्टि विकार तें, रहत अधोक्षत जोति ।
मुद्ध सरूपी जान जिय, वृत्ति जु ताते होति ॥

सुनो प्रजननगरी ॥ ७ ॥

* * * * *
नास्तिक जेते लोग कहा जानैं हित-रूपै ।
प्रगट भानु को छांडि गहै परछांही धूपै ॥
{ हमरे तुम्हरे रूप ही, और न कदू सहाय ।
{ ज्यों करतल आभास को, कोटिक ग्रह दिखाय ॥

सखा सुन स्याम के ॥ ८ ॥

* * * * *
ताहों छिन एक भँवर कहँते ही उड़ि आयो ।
प्रजयनितन के पुंज माहि गुंजत छवि छायो ॥
चक्षुओ चहत पग पगनि पर, अरुन कमलदल जानि ।
मनु मधुकर ऊधो भयो, प्रथमहि प्रगट्यो आनि ॥
मधुप को भेष धरि ॥ ९ ॥

* * * * *

६—दुर्गा=क्षिपा कर । वे आँखें=दिप्प भेंब ।

७—यामुदेव=भीकृष्ण भगवान । अच्युत=विष्णु का एक नाम ।

अधोक्षत=विष्णु का एक नाम । वृत्ति=कारन-वृद्धि ।

८—हित-रूपै=सम स्वरूप को ।

कोर कहै रे मधुप भेस उनही को धाख्यो ।
 स्याम पीत गुंजार बैन किकिति मनकाख्यो ॥
 बापुर गोरस चोरि कै, फिरि आयो यहि देख ।
 इनको जनि मानहुँ कोऊ, कपटी इनको भेस ॥

देखि लै आरसो ॥

कोउ कहै रे मधुप कहा तू रस को जानै ।
 पशुत कुमुम पै दैठि नयै आपन सम मानै ॥
 आपन सम हमको कियो, चादन है मनिमद ।
 दुविध ग्यान उपजाय के दुखित प्रेम आनद ॥

कपट के छुट सों ॥

कोउ कहै रे मधुप प्रेम पटपट पशु देख्यो ।
 अथलो यदि प्रजदेस मारि कोउ नहि बिमेट्यो ॥
 द्वै मिग आनन उतर रे, कारो दोरो गान ।
 सन अमृत सम मानही, अमृत देखि डरान ॥

बाढ़ि यह रसिकता ॥

कोउ कहै रे मधुप ग्यान उमटो लै आयो ।
 मुक्ति परे जे फेरि निन्दे पुनि, करम यनायो ॥

॥—रस पीन=पीतल का रंग ग्याय और पीतावर का पीत।
 क्या जो रसय और पीन रंग का रंग है, दोनों में समानता ।
 बापुर=बाप का । गोरम=गोरु का ।

येद उपनिषद् सार जे, मोहन गुन गहि लेत ।
तिनहे सातम सुद्ध करि, फिरि करि सुंघा देत ॥
जोग चरसार मैं ॥१३॥

फोड करै रे मधुप तुम्हें लज्जा नहि आवै ।
लज्जा तुम्हारी स्नान कुदरी-नाथ कहावै ॥
पद नीची पदवी हुती, गोपीनाथ कहावै ।
सय जहुकुल पावन भयो, दासी जूझन पावै ॥
नख कह दोन हो ॥१४॥

फोड करै हो मधुप न्यान जोगी तुन चेना ।
तुम्हा रोखर लाय तियो इतिन हो भेना ॥
मधुन सुधि मिलराय है, साये गोपुल नहि ।
हो सदै भेनो पनै, तुम्हारी गारन नहि ॥
पधारो राखे ॥१५॥

जो ऐनी मरजाद नेहि मोहन हो पावै ।
चाहि न परमावै मेन पद हो हो पावै ॥
ग्याल जोग सय करन ले, मेन परे हो सवै ।
पौ यहि पदवर देन हो, होना लागे सांच ॥
निरमला हुलि हो ॥१६॥

१३—निष्कामता । साधु-वर्ग । मोहन-मोहन । सातम-सातम ।

१४—कुदरी-कुदरी हो पद हो, निष्काम-निष्काम । पद-पद ।
गोपीनाथ-गोपीनाथ । गोपीनाथ-गोपीनाथ ।

१५—गोपीनाथ-गोपीनाथ । पद-पद ।

धम्य धम्य जे लोग मजन हरि को जो देमे ।
 अरु ओ पारस प्रेम बिना पायत कोइ कैसे ॥
 मेरे पा लघु ब्यान को, उर मद कस्यो उपाय ।
 अब जान्यो मज प्रेम को, साहत न आधो आध ॥
 कृपा छम करि पके ॥ १॥

कमनामई रसिकना है तुम्हरी सब भूडी ।
 जब ही ज्यों नहि सखी तबहि ली पांथी मूडी ॥
 मैं जान्यो मज जाय के, तुम्हरो निर्दय रूप ।
 ओ तुमको अयलंघ ही, बाको मेला कृप ॥
 कौन यह धर्म है ॥ १॥

पुनि पुनि कहें जु जाय बली घुन्दावन रहिये ।
 प्रेम पुंज को प्रेम जाय गोपिन सँग सहिये ॥
 झोर काम सब छांड़ि के, उन लोगन सुख देहु ।
 नातन दूखो जात है, अब ही नेह सनेहु ।
 करोगे तो कहा ॥ १॥

सुनत सखा के वैन नैन भनि आये दोऊ ।
 विषस प्रेम आयेस रहो नाहीं सुधि कोऊ ॥

१०—आपका अभिप्राय ।

१८—मम... मूडी=मम तब आपके प्रेम का साक्षात्कार नहीं ।
 तब तब कोना चप है, राय में कुछ जाने का नहीं ।

१९—मज..... मज=भीषण के साँचे लीर के रोम रोम ।
 बेबाक के बाक, केरिया हो कयी, सानी कलकृष्ण में स्थान स्थान ।
 कले कप रहे हो ।

रोम रोम प्रति गोपिका, है रहे सांघल पात ।

बहुर नरोरद सांघरो, मज्जनिका भी पात ॥

उसहि रँग रँग मे ॥ २० ॥

पुटवार पद

परिसे तो देखो छा मानिनी की मोना माल,

ता चाँद सोझिये मगार प्यारे हो मोदिद ।

बर पे दिये बपोल रही है नयन मँदि,

जमाव बिदाय मानो मोये यह पूजन चंद ॥

रिस भी भीरि मानो भीर है छुदायन,

रगु लगे कापो मगरनर मगो करदिद ।

मगदनाय मगु देखी प्यारी वो रँदिये बलि,

जावे मुल देखे निरुप रुके हुए हँद ॥ १ ॥

राम हृषीकेश कहिये कहि मौर ॥

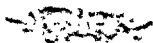
पथ रंग पे धनुष धरे है, यह मज्जनिका खौर ॥

रहे एक पीर सितावन, मरन मगु (म मगुम मगु) ॥

रहे मगु मगु रँगोर, मिन मगुम भीर रँदिये ॥

र मगुम है सितावन, यह मगुम निरुप रुके ॥

मगुम मगु मगु मगु मगु, मगुम मगुम मगुम ॥



भी प्रकार सिद्ध नहीं हो सकता। आश्चर्य है कि वर्तमान राधावल्लभीय गुस्ताईयों से पूछ लाछ किए बिना ही विनोद-कारों ने, बिना किसी आधार के, कुछ का कुछ लिख दिया है! यही नहीं, हितहरिवंशजी के जन्म-स्थान के सम्बन्ध में भी भारी भूल की गयी है। दाद ग्राम, जहाँ कि प्रति वर्ष गुस्ताईं जी की अयन्तों मनाई जाती है, को न मानकर देवबन्द (देवघन) को, न जाने किस प्रमाण से, जन्मस्थान माना है! गुस्ताईंजी के पिता देवबन्द में रहते अवश्य थे, किन्तु वहाँ इनका जन्म नहीं हुआ था। दाद गाँव मथुरा से ४ मील दक्षिण है। गुस्ताईंजी के अनन्य भक्त 'सेवकजी' ने भी लिखा है:—

धर्म रहित जानी सब दुनी ।

जहाँ 'दाद' प्रगटे जग धनी ॥

श्रीराधावल्लभीय पंडित गोपाल प्रसादजी शर्मा ने 'श्री हित-चरित्र' में गुस्ताईंजी का जन्म-संवत् १५३० माना है। हित-चरित्र में आप को जीवन-यात्रा लगभग २० वर्ष की लीयी है। इस हिसाब से आपके गोलोक-यास का संवत् अनुमानतः १६१० होता है। औरदाधोश महाराज मधुकर शाह के राज्यगुरु श्रीहरिराम व्यासजी लगभग १६२२ में गुस्ताईंजी के शरणार्थी हुए। सम्राट् अकबर को इस समय गहनपर बैठे १० वर्ष हुए थे। इसके कई वर्ष बाद महाराज मधुकर शाह के पुत्र घोरसिंह देव ने अशुतकृत्त को मारा।

* 'विनोद' के ३३२ पृष्ठ पर सेवकजी के श्रीहितहरिवंशजी का पुर नित है! सेवकजी हिनजीके पुत्र नहीं थे, किन्तु उनके, स्वन्दारा लिपि हुए, पट्ट लिपि थे।

‘श्रीहरिवंश गुसाईं’ मजन की रीति सकृत् कौर जानिरे।

धीहितजी ने श्रीराधाकृष्ण का विनुद्ध भुंगार कर्त किया है। कतिपय श्रानधिकारियों का यह कहना है कि इस की पर्यं अन्य भुंगारी महात्माओं की रचनार्थ अशुद्ध है। हम इस पर क्या कहें ! जिसके जैसे नेत्र होते हैं, यह वेसाई देखता है। ज्वराक्रान्त मनुष्य के लिये मधुर जल भी कष्ट जान पड़ता है। इस प्रकृति-गुरु के रहस्य को, रास विहार के द्वारा तात्त्विक दृष्टि में तो देखिये। अपने ‘स्वरूप’ का साङ्गत्कार करके इन श्रुतियों की कृतिशं पढ़िये, आप से झट सव प्रकट हो जायगा। अस्तु। श्रीगुसाईंजी के ‘सिद्धान्त’ से तथा ‘द्विज चतुरासी’ से कुछ पद उद्धृत किये जाते हैं—

सिद्धान्ती पद

गौरी

यह तु एक मन बहुत ठौर करि कहि कौन सचुपाये
जहँ तहँ विगति जार लुपता ज्यों प्रकट पिगला माया
है तुम्ह पर जोर बहुत दृष्टि परत कौन से धार
कहि घा कौन भ्रंश पर राखे ज्यों गनिका मुन जाये
(जैथो) हितहरिवंश प्रपद्य बस सब काल ध्यान को जानि
यह त्रिष ज्ञानि स्याम स्यामा पद कमल संगि सिर नाथ।

१—गु=गुण । मज=मजिष्य । विगल=वेगल । बध=बध
दृष्टि=दृष्टि ।

कोइदा कभी ध्यानी इगी पर को मुन कर, जं ।
नित्य ही लो से । इन पद में ध्याना, मन की प्रकाशना की
बसा का बसा ही मुनर सांगे है ।

मेरे तन मन प्राणहू ते प्रीतम प्रिय आपने,
 कोटिक प्राण प्रीतम मोसों हारे ॥
 (जै श्री) दिन हरियंस हंस हंसिनी स्यामल गौर,
 कही कौन करै जल तरंगिनि न्यारे ॥१६॥

विलावल

सुनि मेरो वचन छुबीलो राधा ।
 तैं पायी रस सिंधु अगाधा ॥
 तू मृषमानु गोप की बेटी ।
 मोहन लाल रसिक हँसि भेंटी ॥
 जाहि विरंचि उमापति नाए ।
 तापै तैं वन फूल बिनाए ॥
 ओ रस नेति नेति स्रुति भाष्यो ।
 ताको अधर-सुधारस चार्यो ॥
 तेरो रूप कहत नहि आर्य ।
 (जै श्री) दिन हरियंस बहुकजसु गावै ॥ १७ ॥

सारंग

खेलत रास रसिक ग्रज मण्डन ।
 लुपतिन असु दिये भुज दडन ॥

१६—भाधुरी—न्यारी; मन्त्री लगती है । इस इतिवृत्त—भीम
 और गया ।

इस पद में राधाकृष्ण की एक रूपता, यश की लक्ष्मीयता एवं
 केन का वर्णन किया गया है ।

१७—रस सिंधु—मन्त्रिदानन्द स्वरूप भीकृष्ण । भाष—वचन
 नेति नेति—मन्त्रिदानन्द की वचन के कारण वेद जिसकी महिमा ठीक ठीक
 कर लिये ।

सरद यिमल नम चन्द विराजै ।
 मधुर मधुर मुरली कल याजै ॥
 अति राजत घन स्याम तमाला ।
 कंचन बेलि यनी ब्रज घाला ॥
 याजत ताल मृदंग उपझा ॥
 गान मधत मन कोटि अनझा ॥
 भूपन बहुत विविध रंग सारी ।
 अङ्ग सुगन्ध दिखायति नारी ॥
 घरसत कुसुम मुदित सुर जोषा ॥
 सुनियत दिवि दुन्दुभिकल घोषा ॥
 (जै धी) हित हरियंस नगन मन स्यामा ।
 राधा रमन सकल सुख धामा ॥ १८ ॥

सारंग

आहु नीकी यनी राधिका नागरी ।
 ब्रज जुबति जूथ नै रूप अरु चतुरई,
 सील सिंगार गुन सयनि तैं आगरी ॥
 कमल दण्डिन भुजा दान भुज अंसु सखि,
 गावनी सरस मिलि नधुर सुर रागरी ।
 सकल विद्या विदित रहसि हरियंस हित,
 मिलत नव कुंज घर स्याम बड़ भागरी ॥ १९ ॥

१८—मज मरदन=धीहन्ता । अंसु=तेषा । कल=कुन्दर । वपन=
 एक प्रकार का बाजा, जो मुँह से बजाया जाता है । मधत=नोते हैं ।
 सारी=साड़ी । जोष=जो । घोष=ध्वज ।

१९—आगरी=बड़ करी बड़ी । सुर=घर । विरित=हरित ।

देव गंधार

अथ नव तरुनि कदम्ब मुकुट ननि स्वामा छाहु यती ।
 नग सिख लीं र्जंग अङ्ग नाधुरी मोहे स्वाम धनी ॥
 री राजनि कदरी गृध्रिन कच कनक कञ्ज यदनी ।
 विहुर वन्दुशनि बाँच अरघ्य पिधु नानी अस्तत फनी ॥
 सौम्य रत्न तिर लवत पनारी पिप सौमन्त डनी ।
 प्रकुटि फान कोइएड नैन सर कञ्ज रंग अनी ॥
 मान नितक ताट्ट गण्ड पर नामा उत्तम मनी ।
 दत्तन कुंद सरसाधर पद्म पौतन मन सननी ।
 विहुर मध्य अति चारु लहड ननि सौंदर्य दिन्दु कनी ।
 शीतल मान रत्न सन्पुट कुच कंचुकि कलित डनी ॥
 मुद्र नृमान दत्त रत्न वन्द्य हुत परत नरत्न लवनी ॥
 स्वाम मोल तरु ननु निद्रवारी रची मन्दिर रथनी ॥
 नानि गंभीर मोल मोहन मन गेहन को हृदनी ।
 हस्त कटि पुष्ट निन्द्य शिखिनि हुन कदनि रान जयनी ॥
 पद संधुड लावक हुन मूदन मोहन उर लवनी ।
 नव नव भाव विलोम मान दन दिखनि दर करनी ॥
 (जैप्रो) हिन हरिचरं प्रलम्बित स्वामा कीरति दिन्दु पनी ।
 गायत लवतनि सुनत सुनार पिन्व दुरित दवनी ॥ २१ ॥

२१—कदम्ब=कदरु । कदरी=रंगी । कच=कञ्ज=कोरे के रंग
 कनक । कञ्ज=कनक । कच=कोरे । कच=कोरे । कच=कोरे
 कच । कच=कोरे । कच=कोरे । कच=कोरे । कच=कोरे ।
 कच=कोरे । कच=कोरे । कच=कोरे । कच=कोरे । कच=कोरे ।
 कच=कोरे । कच=कोरे । कच=कोरे । कच=कोरे । कच=कोरे ।

श्रीगदाधर भट्ट

—संस्कृत—

छाप्य

मन्त्रन सुहृद सुमील ययन आम्न प्रतियार्थे।
निरमन्त्र निष्काम कृपा करुणा को आर्षे।
अनन्य भक्तन रुद्ध करन धर्यो धनु भक्तन को।
परम धरम को सेतु विदित गृदाधरन मात्रे।
भागवन सुधा धरने बदन, काठ का नाहिन दुष्य।
गुण निरगदाधर भट्ट अति, मरहिन को लगी सुष्य।

—नमः—



जय गदाधर भट्ट जी दक्षिण में हि
ग्राम के निवासी थे। इनके
संयत् का बुद्धि बना नहीं था।
यह निर्विवाद बात है कि वह
धीरेधीरे धर्म के समकाम
महाभुक्ता को प्राप्त हो
मन्त्रन सुधाया करन न
बन्धु-विरोध में इनका दक्षिण

संयत् १९२० के लगभग विद्या है। ज्ञान बढ़ता है।
जाने के इनके मन्त्रन में हीन हीन बुद्धि का
ज्ञान। ज्ञान हीन मन्त्रन के हीन-ज्ञान विद्या-ज्ञान
के हीन-ज्ञान में, जो विद्या है इनका बुद्धि का
ज्ञान है —

रत्नमयातुल फलान्भरणं ।
 ध्येयं चरणान्बुज निभ घरणं ॥
 भाल मिलहर । कुंकुम निलकं ।
 चन्दन-चित्रित-चक्र-फलकं ॥
 अरुणाधर-विनिहित-चर वेणुं ।
 मुनि दुर्लभ-चरणान्बुज-रेणुं ॥
 नारायण निभ मौक्तिक हारं ।
 संभृत सौंदर्यामृत सारं ॥
 विततोरसि दिलसदनमातं ।
 कटि तट-धरित-सुकिंकिरि जालं ॥
 यलदांगद संगत भुजदंडं ।
 दनुज कुलांत विधावति चंडं ॥
 चरण रणित मणियन मंजूरं ।
 सच्चिन्मुख धन सुभग सरोरं ॥
 तैलोप्याद्भुत शोभा रुचिरं ।
 गोप तनुं नर चिन्तय सुचिरं ॥
 दुर्गत बन्धुं करुणा सिधुं ।
 विश्वहितं हृदि कुरु जन बंधुं ॥
 क्रीडंतं निज सखिभिः साकं ।
 गोप यधू जन पुण्य विपाकं ॥
 अशरण शरणं भय भय हरणं ।
 प्रणम गदाधर गिरिवर धनं ॥ २ ॥

२—चिन्तय=चिन्तन कर, ध्यान कर । दयिता=प्यो । एवाम्=जाह्नवो
 की जानो । रत्नमयातुल=रत्नमय + अतुल । निभ=जोना । विनिहित=
 पुन । मोक्षि=मोक्षी । विततोरसि=वितत + रसि; चौड़े हृदय पर ।

श्रीगदाधर भट्ट

विमल जलक सुदार मुक्ता नासिका दीनों ।
 जँव आसन पर झुर-झुर उदौ सौ कीनों ॥
 भौह सौहनिका कहौ झरु भात कुनकुम बिंदु ।
 स्थान घादर रेख परि मनु अर्वाहि जग्यौ इन्दु ॥
 लग्यौ मन लतचाह तातें टरत नहिं टाख्यौ ।
 अमित अद्भुत माधुरी पर गदाधर वाख्यौ ॥४॥

श्री

नमो नमो जय श्रीगोविन्द ।
 आनंद मय ब्रज सरस सरोवर, प्रगटित विमल नील अरविन्द ।
 अनुमति नौर नेह निन पोषित, नवनय ललित लाड़ मुखकन्द ।
 ब्रजपति तरनि प्रताप प्रफुलित, प्रसरित मुजस मुयास अनन्द ।
 सहचरि जात मरात सह रँग, रसमरि नित खेलत सानन्द ।
 अति गोपीजन नैन गदाधर, सादर पियत रूप मकरन्द ॥५॥

सारंग

हरि हरि हरि हरि रट रसना मन ।
 पाँवति खाति रहति निधरक मर्ग, होत कहा तोकों क्रम ।
 तैं तो सुनौ कथा नहिं नांसे, उधरे झनिन महाधन ।
 ग्यान ध्यान जप तप तोरघ ब्रत, जोग जाग विनु संज ।
 हेम हरन द्विज द्रोइ मान भद्र, झरु पर गुरु दारा ॥

श्रिका रंग खेन है । कुंजुन=गोपी । कदर=सादर । माधुरी=यशस्विनी ।

५—उड़=प्यार । तरनि=पूर । प्रसरित=वैराग्य । मुजस=मुजस ।

कहा ही सुन्दर रूप है !

६—निधरक=निहर । रट=रोपेहः लखी । महाधन=महाधन ।

कृष्ण अनुराग मकरंद की मधुकरी

कृष्ण गुन गान रस सिंधु घोरी ॥

विमुख परचित्त ते चित्त जाको सदा

करत निज नाह की चित्त चोरी ।

प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे यनै,

अनित महिमा इतै युद्धि घोरी ॥११॥

यसंत

देखौ प्यारी कुंज विहारी मूरतिवंत यसंत ।

मौरी तरुनि तरनिजा नन में, मनसिज रस घरसंत ॥

अरु अघर नव पल्लव सोभा, दिहैसन कुसुम विकास ।

फूलै विमल कमल से सोचन, सुचन मन उल्लास ॥

चति चूरन कुंतल कलिनामा, मुगली कोकिल नाद ।

देखत गोपांजन यनराई, मदन मुदिन उन्माद ॥

सहज सुवास स्यास मलयानिल, लागत परम सुहायो ।

औ राधा माधवी गदाधर, प्रभु परसत सचुपायो ॥१२॥

सारङ्ग

दधि मथति नंद नरिंद रानो करति सुत गुन गान ।

गीत नौरद संग दिव्य दूकूल घर परिधान ॥

कैस कुसुमनि किरनि मणि नाटक भनवन पान ।

स्वेद वन गन यदन दिधु पर नुधा पिधु समान ॥

नेत करपन हरप दरपत रतद विनिनि छान ।

११—वीरो=वीरों द्वारा । तरनिजा=पुत्र । मूरति=मूर्ति करने ।

कल्लास=कलश । यनराई=यनराज । मदननिय=मदन कुलियन प्रभु ।

राधु=राधा ।

१२—नरिंद=राजा । परिधान=पुण । नाटक=कलौन । स्वेदक=पानीवे

तिलक दान कमान एग नृग, नहै निपट नितक ॥
 रतन जनननि जटित जुग ताटक, रदि रहे द्योत्र ।
 नदरि दुर्गा जाति मोतिन, मण्डली उदुराज ॥
 जधर सुधर सुपक धिन्दा, सुभग दसन इतार ।
 धोर धरिक, कोर नासा, करन नहि संवार ॥
 मोत पट तन जोन्ह तन बुद्धि, संग रहू रस्ताज ।
 फोक जुगन उरोज परसत, नाहि भुजा नृमान ॥
 निकट कटि कोटरी पै, गज गति न मैदा जाति ।
 प्रगट गज गति जहाँ जंजा, फदलि मचि हुलसानि ॥
 गदाधर दलि जाइ कृष्ण, लगन है मन वास ।
 इहाँ संपनि सहित फयो पिय, देव नाहि नयास ॥ १३ ॥



मुकुट की लटक अरु चटक पटपोंत की
 प्रगट झंकुरित गोपी मनहि मैनु ।
 कहि गदाधर जु इहि न्याय प्रज सुंदरी
 दिमल दननाल के बीच चाहनु ऐनु ॥२२॥

कान्हूरा

उन्हारि रिझारि सारंग-नैनी ।
 अति रत्न काननि अमरन दरपत,
 अँखियाँ जल झलमलाइ आई तन पुलकनि खेनी ।
 आयु सकृति करतात देन दीनों न आइ,
 मुरझाइ भाइ भीनों गज नैनी ॥
 प्रेम पाणि उर लागि रही गदाधर,
 प्रभु के पिप झंग झंग मुखदैनी ॥२३॥

भैरवी

अधस्तंहायिनि अधम उधारिनि,
 कलिकात तारिनी मधु मथन गुन कया ।

मिथी । मोन-रंजु=आँखों के मुखों से उठी हुई पूर । संवप=रख करवा ।
 ॥ कैनु=कानन । कज=करज । झंकुरित=झलक । मैनु=मानदेव ।
 रिझारि=रिझाव प्रधर । ऐनु=अ, निजान ।

२३—अन्नां=आँखें । सारंग नैनी=दृष्टरनी । जल झलमलाइ
 पं=झलक करके लगे, जैल कि आँखों से सन सन झलमलिका होता है ।
 मधु....देव=अन्नां से सन, कहे हैं, माली या सुखी बरत देने से
 मधु बरतो है । मधु भीनी=मधु में रंजी हुई । नैनी=नयनी ।

इस पद में मल्लिक गुल का बरत हो मुख विष है ।

भैरवी

मो कुन कर्मर कलमर नासत, देखि प्रयाह प्रमाकर-कन्या ।
 वह देखो पाप जात जिन नित यह, ज्यों मृगराज देखि मृगसैन्या ॥
 दै पय पान पूत लौं पोषनि, जननि कृतारथ धनि यहु धन्या ।
 दोनो चाहति गदाधरजू पै, चरन सरन अति प्रीति अनन्या ॥२६॥

गाली

सुंदर स्याम सुजान सिरोमनि, देउं कहा कहि गारो हो ।
 पड़े लोग के शौगुन बरनत सकुचि उठत मन भायो हो ॥
 को करि सकै पिता को निरनौ जानि पाँति को जानै हो ।
 जाके मन जैसीयै आपत तैसिय मौति बघानै हो ॥
 नाया कुटिल नदी तन चितवन फौन बड़ाई पाई हो ।
 इहि चंचल सय उगत शिगोयो जहँ नहँ भई हँसाई हो ॥
 तुम पुनि प्रगट होइ चारे तैं फौन भलाई फौनी हो ।
 मुक्ति यधू उत्तम जन लायक तैं दधननि को दीनी हो ॥
 बसि इत मात गर्भ माना के इहि दास्ता करि जाये हो ।
 सो घर छाँड़ि जीव के लातव भये हो पूत पराये हो ॥
 चारे तैं गोकुल गोपिन के मूने घर तुम डाटे हो ।
 रेंडे तहाँ निसंक रंक लौं इधि के भाजन चाटे हो ॥

इस पद में शिरोमनम कर्मकार है। जग पड़कार है, इसी घर की दाया
 पर महाशक्ति केवल राम ने मानकरिइका ने समुद्र का फौन किया है ।

२६—मो मृग दवे=वेरे कपड़े लोह के मग मृगराज बनै । क=
 का । प्रमाकर बरन=बुरे-बुरी बहुरा । पुन को=दुखी मजान ।

२७—पातो=पिता को माँदियाँ; दध बरत का शौच, जिसने शिवा
 के घरतर पर लकुरात की कितां इधर की जगन बरो पाते सुनकी है ।

रिता, नानिकता और भक्ति तो उनमें बड़ी ऊँची है। आपने ज्ञान्त और भुंगार दोनों पर ही पदावली लिखी है। सित्तों १६ तथा भुंगार-सम्बन्धी ११० पद मिलते हैं। आपकी विहार-विषयक पदावली को 'कैलिनाता' भी कहते हैं। श्री संप्रदाय में एक से एक बढ़ कर सुकवि, त्यागी, अनुरागी और अनुभवो महात्मा हुए हैं। श्रीकृष्ण सम्बन्धीनी कविता रिता के अविरत प्रवाहमें दृष्टी संप्रदाय ने बड़ा योग दिया। तब तब का ध्येय रसिक-सम्राट् श्री सुखानी हरिदासजी को है। आपके कुछ पद नीचे उद्धृत किये जाते हैं—

नाथ जू न देखे दुखो दिन ॥ वरीषी छां

सिंह पैरि पानी नहिं सोलह नडा के ।

वै 'हरिदास' होहि वाद ॥ न आवै नेक

अन नैदयो न कनयो कसु आवै के ॥

यह कवित्त सुखानी हरिदासजी का रचा नहीं है। बल्लभ कुत में हरिदास नाम के एक कवि हुए हैं, ज्यों का पद कवित्त है। इनके और भी कवित्त कहे जाते हैं। जैसे भी 'विहृजेना' 'नाथजू' और 'सिंह पैरि' पद ही बल्लभ कुत की लक्ष्मी दे रहे हैं।

* निरु-कण्ठु विनोद के १०१ छंद पर सुखानी हरिदासजी कुछ लक्ष्मी वैराग्य का बल्लभ है, किन्तु हमें यह सत्य बसों स्मरण रहना। लोक सुखानीजीने श्रीकृष्ण-सम्बन्धी पदों के कवित्त लिखे हैं और अन्य नहीं लिखे। संभव है, मरदान-कवि के रचनिक कहीं दूसरे हरिदास हों।

आसावरी

हित तौ कीजै कमल नैन सौ,
 जा हित के भागै और हित लागौ फोको ।
 कै हित कीजै साधु संगति सौ,
 जावै कलमय जी को ॥
 हरि को हित पेसो जैसो रंग नजीब,
 संसार हित कसुंनि दिन दुती को ।
 कहि हरिदास हित कीजै बिहारी सौ,
 और न निदाहु जानि जी को ॥ ३ ॥

तितका दयारि के दस ।

ज्यों भावै त्यों उड़ाइ लै जाइ आपने रस ॥
 मल्लोफ सियलोफ, और लोक हस ।
 कहि हरिदास विचारि देख्यो दिना बिहारी नाहीं अस ॥ ४ ॥

आसावरी

हरि के नाम को झालस क्यों,
 करत है रे काल-फिरत सर साथै ।

इतने भी जीव के दुस्कर्ष की होनडा और भगवान की कृपा की
 स्मरणता करी है ।

१—कमल नैन=भीकृपा । कलमय=कलमयः पाप । नजीब=नजीब
 का रंग कभी छूटा हो नहीं । कसुंनि=कसा लाउ रंग । दिन दुती को=
 दो दिन का; चरित ।

४—तितका=कृत; यहाँ जीव से झालस है । दयारि=दाहु, यहाँ भग-
 वानेरा से तात्पर्य है । आपने रस=अपनी इच्छा से ।

घन मद जोयन मद औ राज मद, ज्यों पंछिन में डेल ।
कहि हरिदास यहँ जिय जानै, तीरथ कोसों मेल ॥ ७ ॥

कल्याण

भूँछों घात साँची करि दिखावत हौ हरि नागर ।
निसि दिन पुनत उघेरत हौ जात प्रपंच को सागर ॥
ठाठ घनाइ धर्या मिहरा को, हँ पुरुष तँ आगर ।
कहि हरिदास यहँ जिय जानौ, सुपने कोसों जागर ॥ ८ ॥

कल्याण

सोग तो भूले भूलै,
तुम मति भूली माला धारी ।
अपनो पति छाँड़ि औरनि सौँ रति,
ज्यों दारनि में दारो ॥
स्यार कहत ते जीव मोतै,
विमुख, जिन दूसरी करि डारी ।
कहि हरिदास जिन्हँ जग्य देवता,
पितरनि को सरधा भारो ॥ ९ ॥

७—बिगोरो=कर विरोध । डेल=रक पसी । तीरथ को को मेल=
सखिक मेल, तीर्थों में एक भर के रिधे कितनोंमें मेल मिलाप नहीं
हो जाता ।

८—पुनत उघेरत=बनाते निदाने । मिहरा=रो; यहां 'माया'से तात्पर्य
है । पुरु=पुरु । आगर=बढ़कर ।

९—नाडाधारी=नाथ में माया लेने वाले हरिमल । ज्यों दारनि में
दारो=चिरों में वह पुंश्रुती की, जो अपने पति को छोड़कर अन्य लोगों के

केलिमाला

कान्हरा

प्यारी, जैसे तेरी आंखिन में हों अपनपौ
 देखत, तैसे तुम देखति हौं किधौं नाहौं ।
 हौं तोसों कहौं प्यारे, आंखि मूँ दि
 रहौं ताल निकसि कहौं जाहौं ॥
 नोकों निकसिये कों ठौर दनाझी,
 साँचों कहौं बलि जाउँ लागौं पाहौं ।
 धोहरिदास के स्वामी त्यामा,
 तुमहि देख्यो चाहत और मुख लागत नाहौं ॥१३॥

कान्हरा

जाजु तुन दूटत है री तलिन भिन्नंगों पर ।
 चलन चलन पर मुरति शघर पर ,
 चितवनि दंरु लुयोली भुव पर ॥
 चलहु न घेनि राधिका पिय पै,
 ओ भई चाहति हौं तयोपर ।
 धोहरिदास समय जय नोकौं,
 हिति निति फेलि झटत रति भू पर ॥ १४ ॥

१३—प्यारी=भीतपिशाची में प्रलय है । प्यारे=भीतृन्त से प्रलय है । ताल=प्यारे भीतृन्त । लागौं पाहौं=लगे रहता हूँ ।

इस पद में भिन्न-बीजन राधाकृष्ण की सम्बन्धता का क्या ही भाव-
 द्य किं राधिका किं भू है !

१४—तुन दूटत है=विशारी है । भिन्नंगी=बाँके विशारी कोहूँ ।
 दंरु=बाँसी, निरुद्धी । पै=प्रातः ।

धो हरिदास कहत री प्यारी,
ये दिन मैं कम करि करि साधे ॥ १६ ॥

कान्हारा

सोई तो यवन मो सौं मानि
तैं मेरो लाल मोछो री साँवरौ ॥
नय निरुज मुख पुंज महल में
नुयस पत्तौ यह गाँवरौ ॥
नय नय लाड़ लड़ा लाड़िली
नहि नहि यह धृज पावरौ ॥
(धो हरिदास के) स्वामी स्वामी
कुज बिहारी पै धारंगो मालती-भावरौ ॥ १७ ॥

केदारा

भुवन डोल दुलहिनी दुलहु ।
इन कदोर कुमकुना छिरफन, सोल परस्पर भूलहु ।
जिन नास खाय और धनु नगनि-ननैया कूलहु ।
मोहरिदासके) स्वामी स्वामी कुजबिहारीको खेत नहि फूलहु ॥

१६—साधे साधे=गहन करने करने । ये दिन=येसे मदिना करने के मिर ये दिन । साधे=कर दिने, लाल दिने; 'साधे' कुमलाने का शब्द है ।

१७—नुयस=पतंग, मे, मुल मे ।

१८—सोल=सुख का मूल । परस्पर=दिले । नगनि-ननैया=सुखी सुखी । धनु=धनुष का शब्द मी है ।

इहाँ कोऊ हिनू मेरो न तेरो,
 जो यह पीर जनै ॥
 हौ तेरो यसीठ वू मेरी,
 और न योव सनै ॥
 (श्री हरिदास के) स्वामी स्वामा,
 कुंडविहारी कहत जु प्रीति पनै ॥ २१ ॥

विलावल

प्रिया पीड के उठिये को द्वयि
 घरनि न जाइ नयहिने न्यारे ।
 मानो पौन रैन एक ठारे नोपे ना भये न्यारे ॥
 बार लटपटे मानो मँधरखूय हरन परनगर,
 कमल दलनि पर संजरीट न्यारे ॥
 (श्री हरिदास के) स्वामी स्वामा कुंड विहारी विहारिनि पै,
 कोटि कोटि अनंग कोटि प्रह्लाण्ड बारि किये न्यारे ॥ २२ ॥

विलावल

स्वामा स्वाम लायत कुंड महल में रंग नगे ।
 मरगजि माल विधिन पटि सिंघिनि
 अमन सैन चहुं जान उगे ॥
 सब सखि नायनि योन यजायति
 सब सुख मिलि संगीत परे ।

२१—मेरे—मेरी । इहाँ—यहाँ । प्रीति—प्रेम । पनै—पाने ।

२२—नयने—नयने हुए । कमल दलनि पर—कमल अपनी नेत्रों पर ।
 मँधरी—मँधरी; मँधरी का भी नेत्रों में कलक है । प्रह्लाण्ड—प्रह्लाद ।

धरदन्त

बुध गुरुवा मोदन मोर बनुरी धरदन्त हादि ही बाग्यो धरदन्त ।
 गुन मंदिर न्यो कप धरदन्त महे रीती हे मोर धरदन्त ।
 बागि बाग्य बाग्य दिहायो जादि हेति नर धरदन्त ।
 धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त २६

गौरी

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।
 धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।
 धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त । २७

नट

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।
 धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।
 धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

धरदन्त धरदन्त धरदन्त धरदन्त ।

सूरदास मदन मोहन मोहि कहि
न आयनि, मेरी दृष्टि न टरै।

कान्हूरा

तू मुनि कान द्वी मुगली
नेरे गुन गार्थ ग्याम कुंज मग
ननमुख होर कहि मोहि को अरि। नर
सो तन पारनि आवै तू पर
तेगोई ध्यान धरत उर अंतर नेन मूर्ति
निकमत उर दृष्टन, तगोई आगम गुनि अरु
सूरदास मदन मोहन सा। तू चलि
मिलि मोहि नै पाया नाम गगन

कान्हूरा

नयन किमोर नयन नागरिया।
अरनी भुजा ग्याम भुज उपरि,
स्याम भुजा अर। उर अरि।
कन विनोद तरनि तनया नट,
स्यामा स्याम उमंगि तन अर।
यो नरदास रहे उर अंतर,
माधन मनि कवन त्या कहि

इस पद में कन की कन अनेका और आगम है।
कन देने में आती है।

१४—कान्ही अति सुन्दर के नाम है। कनि को
कान्ही के है, जो कान्ही के अति बड़ा नाम है।
कान्ही : कान्ही की कान्ही नाम है।

उपना को घन दामिनि नाहीं: १००

सँदूर धोते धारने करिया ।

सूर नन्दन मोहन बलि जाये,

नैद नन्दन दृग्गतातु दुखरिया ॥ १०१ ॥

देन

मेरे गति तुमही अनेक तोर पाऊँ:

चरन कमल नख नखि पर बिनै तुम दहाऊँ ।

घर घर जो डोरी मैं हरे तुम्है लखाऊँ ॥

तुम्हारे कृपाप कही सौन को कहाऊँ ।

तुमसे मनु छाँड़ि कहा मोहन को धाऊँ ॥

सौन तुम्है नाथ कही सौन को नवाऊँ ।

कंचन हर हर छाँड़ि कंचन दियो दहाऊँ ॥

सोना लव हासि लई उगत को हँवाऊँ ।

हाथों में उतारे कहा गदहा चढ़ि धाऊँ ॥

कुनकुन को तेर छाँड़ि यावर मुँह लवाऊँ ।

कम धेनु घर में गति कहा कयो दुहाऊँ ॥

कनक नख छाँड़ि कपौड परन कुटी धाऊँ ।

पाइन जो पैरौ मनु तौ न अनन उठाऊँ ॥

सुरदास नन्दन मोहन उतन उतन गाऊँ ।

संकेत की पानही को रञ्जक कहाऊँ ॥१०१॥

१०—कलिक=कलिका । नखि=नख । नखन=नख । कलिक=कलिका ।
११—कनक=कनक । कनक=कनक । कनक कलिक=कलिका । कनक । कलिक=कलिका ।

१२—न ख जो डोरी=न ख जो डोरी । न ख जो डोरी । न ख जो डोरी । न ख जो डोरी ।

मूर्धास मदन मोहन मोघे - हृदि
न आयनि, मेरी हृदि न छरी । ॥

कान्हारा

न गुनि जानै ही मुगली

मेरे गुन गायै क्याम कृत भव
ननमुन होइ कटि ताहि को अरि भव
सो तन वरनि कायें ओ वर ।

तेगोई ध्यान घरन उर अंतर मन मूर्ति

निकमत उर छरपत, तेगोई आगम गुनि गाय
मूर्धास मदन मोहन सो नृ पति

विलि ताहि नै पायो नाम गायन

कान्हारा

मदन किमो मदन नामरिया ।

अगरी मुखा क्याम मुन उगनि,

क्याम मुखा अने उर अरि
चरण विसेन नानि नमना नद,

क्यामा क्याम उमगि रम प्रदि
वो कान्हारा रहे उर अंग,

मादल मनि कंयन उयो जति

॥ १ ॥ नृ नै जानै ही मदन मदन को अंग । ॥ १ ॥ नृ नै जानै ही मदन मदन को अंग । ॥ १ ॥

॥ १ ॥ नृ नै जानै ही मदन मदन को अंग । ॥ १ ॥ नृ नै जानै ही मदन मदन को अंग । ॥ १ ॥

उपमा को घन शमिनि नाहीं ॥ १०५ ॥

कंदरूप कोटि धारने करिया ।

मूर मदन मोहन बलि जारो,

नंद नन्दन पृथभानु दुलारिया ॥ १०६ ॥

देन

मेरे गति तुमहीं कनेक सोय पाऊँ ।

घरन कमल नय मनि पर दिदै सुख पहारुँ ।

घर घर जो डोलौ ली हरि तुम्हें तजाऊँ ॥

तुम्हारे पहाय कही सोन सो कजाऊँ ।

तुमसे प्रभु दाँडि कहा दीनन सो धाऊँ ॥

सोय तुम्हें नाय कही सोन सो नजाऊँ ।

कंनन उर धार दाँडि पाच कर्म दनाऊँ ॥

सोभा सय हानि कर्म जगत को हैसाऊँ ।

दायो तैं उतरि कहा मददा यदि धाऊँ ।

कुनकुन को सेव दाँडि पाकर नंद साऊँ ।

काम धेनु पर मैं लजि बजा कर्मो दुहाऊँ ॥

कनक महल दाँडि कर्मोप दनन कही दाऊँ ।

पावन जो ऐसी प्रभु ली न जनन जाऊँ ॥

मूरदास मदन मोहन जगन जगन साऊँ ।

मंतन की पानही को मूरदास पहारुँ ॥ १०७ ॥

१०५—कान्तिरूपोपासना । शमिनि=शमन=प्रभु । शमिनि=शमन
रूप । कंदरूप=कंदो=कर्मदेव । कान्ति=कर्मोपासना । कान्ति=कर्मोपासना । कान्ति=कर्मोपासना । कान्ति=कर्मोपासना ।

१०६—तुम ही मेरे गति देते हैं । तुम ही मेरे गति देते हैं । तुम ही मेरे गति देते हैं । तुम ही मेरे गति देते हैं ।

ध्रुवपद

उर की लट कुंडल, बेसर सों पीन पट
 घनमाला योच आई उर में ह दोऊ उन
 नैन सों नैन, दैन दैननि सों उर कि रहे,
 चटकीली लुबि देखे लटपटान म्याम घन ।
 होड़ा होड़ी नृत्य करे, रोकि रोकि अक भरे,
 नता थै थै थै कहत समन मन
 सुरदास मदन मोहन राम मडल म ग्यारी को
 अचल लै लै पंडित है मरम कन ॥१॥

प्रभाषी

स्याम लाल, मान भयो, जागो बलि चार्क ।
 घुटिया सुरभाइ योच सुमन हो गुथार्क ॥
 उगत सूर्य ज्योति भई कुलहिरी बनार्क ।
 पाँच पाँचि घुँघरै सु घालियो मित्रार्क ॥

लगाई । घना=बहरी । करोडुध=हज़ारों कप । पाव कुल=पाव हो
 कुल की मोनड़ी । बेसी=बेसी, पका देकर निहार दो । पावरी=पूरी

गुग्गुलुकी की यह मन्त्रावली, हि में मन्त्रा की दुनियाँ की ल
 दिया कर, पूरा हो गयी । एक दिन एक साधु इन्हें अपनी जीवन की
 भीषट्कने-इकती का दर्शन करने आया गया । जब गुग्गुलुकी ने इसे
 काम से बुझाया, तब कहता था कि 'आज मेरी मनोवाञ्छा मन्त्र
 कभी नष्ट हो देता गया तब ही था, आज मुझे वह मेरा मित्र
 मित्रही नष्ट से इच्छा थी ।

१३—देवदत्त=भीमराज कृष्ण । कटकीरी दक्षिणदिशि
 निज के गजाल सुन्दरता । कवचन=जमीने की बूँदें ।

सूरदास मदन मोहन गुन तिहारो गाऊँ ।
हरखि निरखि गोतबंद छवि जीवन फल पाऊँ ॥ १८ ॥

ध्रुवपद

खेलिए आँगन में छगन मगन कीजिये कलेवा ।
छीकें तैं सारां दधि ऊपर नैं काढ़ि धरी,
पहिरि लेट अँगुली, फँटा घाँधि लेहु मेवा ॥
म्यालग से सङ्ग खेलन जाहु, खेलन के मिस भूपन ल्याहु,
कौन परी प्यारे निसिदिन की टेवा ।
सूरदास मदन मोहन घर में ही खेलौ प्यारे ललन,
भँवर चक डोर दै हौं हंस चकोर परेवा ॥ १९ ॥

बिलावल

मधु के मतवारे स्थान, खोलौ प्यारे पलकैं ।
सोस मुकुट लटा छुटो और छुटो अलकैं ॥
सुर नर मुनि द्वार ठाढ़े दरस हेतु किलकैं ।
नासिका के मोति सोहैं बीच लाल ललकैं ॥
फटि पीतांबर मुरली कर सवन कुंडल भलकैं ।
सूरदास मदन मोहन दरस दैहौ भलकैं ॥ २० ॥

१८—छवि=चोरी । गुन=गुणों से मुग्धकर । तिहारि=प्यारी ।

१९—छगन मगन=भीड़-भाड़ का वास्तव्य रह-सूचक प्यार का मन ।

खेवा=पानःकाज का भोजन । छीका=तिहार ।

अँगुली=बसों का छोटा गा पुरतः धतकी । फँटा=वनर पर कमाने

हुपटा । भूपन=गुंजाओं या कुंजी के गहने । टेक=टेक, बादल । भँवर=

हँस । चक=चकरी । हंस चकोर परेवा=बसों के खिलौने ।

२०—किलकैं=मानन्द मना रहें हैं । भलकैं=नशील भाँति ।

गुणदास मदन मोहन गुन निदानो गाऊँ ।
हरिनि निरखि गोविंद दधि जीवन फल पाऊँ ॥ १८ ॥

ध्रुवपद

रंजिए सांगन में दूजन भजन कीजिये फलेवा ।
दीने ते साग दधि ऊपर ते फाटि धरो,
पहरि लेउ भैरुनी, गेटा पाँधि लेहु मेया ॥
सांगन से सदा सेवा लाहु, सेवन से मिल भूषन लयाहु,
बोन परो प्यारे निमिदिन की देवा ।
गुणदास मदन मोहन पर मे हो भोली प्यारे लखन,
सेवा पर होई ॥ १९ ॥

विजयदल

मधु से मजदारे बरान, गोली प्यारे पलवै ।
सोम सुकुल मदा सुदो सोर सुदो दलवै ।
सुर सर सुनि दार दाड़े दरस लेहु दलवै ।
नानिवा के मोनि गोहि दीप हार ललवै ।
पदि सोमदर सुनरी दन दलन दंडल भलवै ।
गुणदास मदन मोहन दलन है ॥ २० ॥

(१८) — गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन ।

(१९) — गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन ।

गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन ।

गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन ।
गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन ।
गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन ।

(२०) — गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन । गुणदास मदन मोहन ।

है पुरोहित रिचा उचारत येलि तनाल मंडप स्वयौ ।
जै धीमट भाँवरी परत नटवर अंकमाल प्रिया संग नच्यौ ॥२१॥

दोहा

जिहि छिन की बलि जाउँ सखि, जिहि छिन भाँवरी लेत
लाल बिहारी साँवरे, गौर बिहारिनि हेत ॥

पद

जै धी बिहारनि गौर बिहारी लाल साँवरे ।
तेहि छिन की बलि जाउँ सखी री परति जिहि छिन भाँवरे ॥
हँचन मनि मरकत मनि प्रगटे बसिए जो नंद गाँव रे ।
विधिना रचित न होय जै धीमट राधा मोहन नाव रे ॥२२॥

दोहा

निसि बिसि सिर तें परत पट, ससि बदनौ जुव जात ।
उठति भोग संग लात के कसत कंचुकी बात ॥

पद

उठति भोरलात जू के संग तें कंचुकी कसति राधिका प्यारी ।
खेति बिसि परत नील पट सिरतें ससि बदनौ नव जोवन धारी ॥
मन भावती लात गिरिधर की रची बिघाता सरस सँवारी ।
जै धीमट सुरत रँग भोने सरौ प्रिया जुत कुंज बिहारी ॥२३॥

२१—पेरी पुलिन=मनुष्य जो का तट मानों देदी है । मन्दो=मृदुली
हृष्ट । रिचा=रिचा; देद मन्त्र । भाँवरी=निगाह के कवच पर हुए हुए
दिनी पेरी की जो प्रदक्षिणा देते हैं, हमें भाँव देना कहते हैं ।

२२—नाच=नान ।

२३—कंचुकी=कलिया । मनभावती=मन धारी ।

यह जु एक मन बहुत टौर करि कहि कौने सब पायो
हैं तहैं विपति जार जुवती ज्यों प्रगट पिंगला गायो" इत्यादि
(जन-माधुरी-सार, शृ ६०)

यह पद सुनकर व्यासजी का सारा विद्या-बल चूर चूर
गया । आप उसी दिन गुस्ताईजों के अनन्य भक्त हो गये ।
व्यासजी राधा वल्लभाय अर्पण थे, किन्तु अन्य संप्रदायों में
ऐसा भाव नहीं रखते थे । आपकी दृष्टि में संत-मात्र भगवत्
स्वरूप थे ।

ओरछे में सब प्रकार का मान-सम्मान होने पर भी आप
से छोड़ कर घुन्दावन चले आये । महाराज मधुकर शाह,
एक भक्ति यश, इन्हें लेनेके लिये जब घुन्दावन आये, तब ये
थोर होकर यह पद गाने लगे—

“घुन्दावन के रुख (वृक्ष) हमारे, मात पिता सुत बन्ध ।
गुरु गोविन्द साधु गति मति सुख, फल फूलनि को गन्ध ॥
निहि पोठि दें अनत डोठि करि सो अंधन में अन्ध ।
व्यास इन्हि छोड़ैं शौं हुड़ावैं ताको परियो कंध ॥

घुन्दावन की गुल्म-सतारें छोड़ कर ये फिर कनो ओरछा
हो गये । इन्होंने तत्कालीन महान्माओं के सम्मुख में प्रज-
पुत्रों का जो रत्न लूटा, वह अपनी दानों में करे स्थानों
में बड़ी भक्ति भावना से अर्पित किया है ।

व्यास जी भगवान से भक्तों को कहीं अधिक लंबा मानते
थे । साधु-सेवा के लिये आपने सर्वस्व समर्पण कर दिया
था । जाति और पद का तो आपको जरा भी सुझाव नहीं
था, कि आप की साधियों से प्रकट होता है—

इसके लिखने की आवश्यकता नहीं। सहृदय सुरसिक
 इन स्वयं देख लेंगे। आश्चर्य है, व्यासजी मिथु-बन्धु-विनोद
 । साधारण धेरी के कवि माने गये हैं ! नील सखीजी ने
 गसजी की धानी के विषय में क्या ही सुंदर पद कहा है—

“जय जय दिसद व्यास की धानी ।

मृताधार इष्ट रत्नमय, उतकर्ष भक्ति रस तानी ॥
 लोक वेद भंडन ते न्यारी, प्यारी मधुर कहानी ।
 स्वादित सुख रवि उपज पावन, मृदु मनसा न शयानी ॥
 सक्ति शमोघ विमुख भंडन की, प्रगट प्रभाव यजानी ॥
 मत्त मधुर रसिकन के मन की रस-रंजित रजधानी ॥
 सखी रूप नवनात उपासन श्रमृत निकासी शानी ॥
 ‘नील सखी’ प्रनमानि निम्न, लो अद्भुत कथा-भयानी ॥”
 व्यासजी के कुछ सिद्धान्तों पद, साखियाँ और विहार-
 रस्यगी पद उद्धृत किये जाते हैं ।

सिद्धान्त के पद

सारंग

राधा दत्तन मेरी प्यारी ।
 सरदोपरि सपहों को ठाकुर सय सुख दानि हनारी ॥
 प्रथ वृन्दावन नाइक सेवा लाइक स्थान उज्यारी ॥
 प्रीति रीति पहिचाने जाने रसिकन को रसवारी ॥
 स्थान बनव दत्त तोवन मोवन दुख नैनन को तारी ॥
 अवतारी सब अवतारन को महतारी महतारी ॥

१—राधारी—जिनके हृदय में और सब कछुआ होते हैं, जैसा कि
 श्री महादेव ने कहा है—

‘जो-कति केरा दुता इन्द्रा नाराय कदर’

ताल तमाल रस्ताल साल पल पल चमकत फल पात ।
 मनहुँ गौर मुख विधुकर रंजित सोभित साँपल गात ॥
 किंभुक नवल नयोन माधुरी विकसति हिय उरभात ।
 मनहुँ अरौर गुलाल भरे तन दंपति अनि अकुलात ॥
 धैठे अलि अरविद पिय पर मुख मकरंद चुचात ।
 मनहुँ स्याम कुच पुरगहि प्रीयत अथर मुधा बलि जान ॥
 नाचत मोर फोंकिला गाथत कीर चकोर सुरात ।
 मनहुँ राम रम नानैं दोऊ दिदुर न जानैं प्रात ॥
 त्रिभुवनको कवि कहि न सकत कहु अमृत दृषिशी यान ।
 व्यास वनन नहि मुन कदि आवै, ज्यों गुंगो गुरखान ॥३॥

चर्यपरी

नय नयः पृष्टा नृपति मनि साँवरो,
 राधिका तरनि मनि पट्टरानी ।
 मेम मर तादि ईकंठ परिजंत,
 तस्य लोक धानैत प्रज राजधानी ॥
 मेम एजानये कोटि दाग सोचन जहाँ,
 मुनि पारी तहाँ भरति पानी ।
 मूर तमि पाहक पवन जन हंदिता,
 पवन दाग भाट निपन दाग ॥

विचारित हो रहे हैं । एक-दूसरे । विदु बर-बराती की मिलने । राधिका
 विचारित हो रहे हैं । एक-दूसरे । विदु बर-बराती की मिलने । राधिका

१-एक-दूसरे । २-एक-दूसरे । ३-एक-दूसरे । ४-एक-दूसरे । ५-एक-दूसरे । ६-एक-दूसरे । ७-एक-दूसरे । ८-एक-दूसरे । ९-एक-दूसरे । १०-एक-दूसरे ।

चेतहु भैया, येगि घड़ी कलि काल नदी गम्भीर ।
व्यास वचन बलि वृन्दावन बसि, सेवहु कुंज कुटीर ॥६॥

सारङ्ग

भजौ सुत, साँचे स्याम पिताहि ।

जाके सरन जात ही मिटिहैं दारुन दुख की दाहि ॥
रुपावत भगवत मुने में छिन छाँडी जिनि ताहि ।
तेरे सकल मनोरथ पूजैं जो मथुरा लौं जाहि ॥
वै गोपाल दयाल दीन नृ. करिहैं रुपा निवाहि ।
और न ठौर अनाथ दुखिन को मैं देख्यो जग माहि ॥
करना घरनालय की महिमा मो पै कही न जाहि ।
व्यास दास के प्रभु को सेवत हारि भई कहु काहि ॥१०॥

सारंग

धर्म दुर्य्यो कलिराज दिग्राई ।

कीनों प्रगट प्रताप आपनो सब विपरीति चलाई ॥
धन भौ मीत धर्म भौ पैरी पतितन सो दितवाई ।
जोगी जतों तपो संन्यासी प्रत छाँड़्यो अकुलाई ॥
घरनाश्रम की कौन चलाई संतन हू मैं आई ।
देखत संत भयानक लागत भावते समुद्र जमाई ॥
संपति मुक्त सनेह मान चित प्रह व्याहार पड़ाई ।
कियो कुमंघ्री लोभ आपुनो महा मोह जु सहाई ॥

१०—दाहि=दाह, जहन ।

११—दिग्राई=भिन्नता । कत=कपना करना कर्म । भावते=ध्याते । संन-
याई=जानकरपन; किसी से हवरदली वृत्ति लेने में ही कष्टकर रह गया है ।

सारंग

जो सुख होत भक्त घर आये ।

सो सुख होत नहीं घेहु संपति, वांछहि घेष्टा जाये ॥
 जो सुख होत भक्त चरनोदक पीयत गात लगाये ।
 सो सुख सपनेहु नहि पैयत कोटिक तीरथ न्हाये ॥
 जो सुख भक्तन को सुख देखत उपजत दुख विसराये ।
 सो सुख होत न कामिहि कयहुं कामिनि उर लपटाये ॥
 जो सुख कयहुं न पैयत पितु घर सुत को पूत खिलाये ।
 सो सुख होत भक्त यचननि मुनि नैननि नीर बहाये ॥
 जो सुख होत भिलत साधुन सां दिन दिन रंग बढाये ।
 सो सुख होत न नैक व्यास को लंक सुमेरु पाये ॥ १५ ॥

सारंग

हरि विनु को अपना संसार ।

माया मोह बंधो जग धूड़त, काल नदी को धार ॥
 जैसे संघट होत नाच में रहत न पैले पार ॥
 सुत संपति दारा साँ ऐसे चितुरत लगै न धार ॥
 जैसे सपने रंक पाय निधि जाने कहू न सार ।
 ऐसे दिन भंगुर देहों के गुरखहि करत गँवार ॥
 जैसे झँधरे टफत डोलत गनत न खाइ पनार ।
 ऐसे व्यास बहुत उपदेशे मुनि मुनि गये न पार ॥ १६ ॥

१०—चरनोदक=पैरों का पौजन । नैननि नीर बहाये=नेत्रों के आँसू बहाने में । रंग=रस ।

१२—संपत्ति=जाय । पैले पार=नजारे पार, उम पार । दारा=जो । दिनभंगुर=नारदान । रंक=चोर । पनार=पान । मुनि=पार=ज्ञानो-परं मुन कर भी मुक्त नहीं हुए ।

रसखानि लखे तन पीनपटा,
 सत दामिनि को दुनि लाजति है।
 यह बाँसुरी को घुनि कान परे,
 कुमकानि हियो तजि भाजति है ॥१॥

८५

प्रसन्न मैं दूँव्यो पुरानन गानन,
 वेद रिचा सुनि सौगुने पावन।
 देख्यो सुन्यौ कयहूँ न कित्, ~~कित्~~
 यह कैसे सरूप श्री कैसे सुभावन।
 देरत देरत हारि पर्यो रसखानि,
 बतायो न लोग लुगावन।
 देखो, दुर्यो यह कुंज कुटीर में,
 बैठो पलोयत राधिका पावन ॥१॥

८६

खंजन नैन कंदे पिजरा छुबि,
 नाहि रहैं धिर कैसे इ मार।
 छूटि गई कुलकानि समी,
 रसखानि लखी मुसकानि मुहारी।
 चित्र कंदे से रहैं मेरे नैन न
 बैन कंदे मुख दोनी दुहारी।

११—रिचा=रक्षा, संरक्ष। पावन=पाव से। कित्=कित्ती की
 परीक्षा करने करने। दुर्यो=द्विषा दुष्टा। पथेकन=महाकाव्य है।
 १२—

१३—चित्र=चित्र है, मोदिन है। चित्र नैन=दोनों नेत्र

मारे रो वा! मुख की मुसकानि,
सँभारी न ऊँहै न ऊँहै न ऊँहै ।।३॥



रंग भर्यो मुखकात लला,
निकस्यो कल कुंजनि तें सुगंधां ।
मैं तबहीं निकसी घर तें,
तकि नैन बिमाल की चाँट लगां ।
रसखानि सों घूमि गिरी धरती,
हरिनी जिमि बान लगे गिरिजत ।
दृष्टि गयो घर को सब बंधन, ^{अधो निज} ^{नहि}
दृष्टिगो आरज लाज बड़ा ॥१॥



आहुती नन्दलता निकस्यो,
तुलसी बन ते बनकें मुसकालो।
देखे बने न बने कहते,
अब सो मुख जो मुख में न समालो।
हो रसखानि विलोकिये को,
कुल क्रीनि को काज कियो हिय ^{हो} ~~हो~~।
भार गरि अलयेली अचानक,
ये भट्ट लाज को काज कहालो ॥१॥

मुकुटादि.....मैंने=मुद्राकणन देल कर मन हाथ में ले रहा।

१८—रंग भद्रयौ=वेमारम्भ में मग्न । पुनि=पुनः ।

कामः कार्योच्यते मर्यादा, रानिजन ।

१८—बदले-छापर दिखे हुए; बना ठना । इतनी-सोच ।

धौरसखानि

३३५२

पैनु यजावत गोधन गावत,

ग्वारन के संग गोमधि आयो ।

यांसुरी में उन मेरोई नाम,

तैं साधिन के मिस टेरि सुनायो ॥

ये सजनी सुनि सास के आसनि,

नन्द के पास उसासन आयो ।

कैसी फरौ रसगानि तहाँ,

चित चैन नहीं, चित चोर चुरायो ॥१६॥

८७

रो सुनाय चितैयै को मारि रो,

लाल निहारि कै पैसी-पजारि ।

या दिन तैं मोहि लागी ठगौरी सी,

सांग कहै कोई पायरी आरि ॥

याँ रसगानि धिर्यो लिगरो,

ग्रज जानत है कि मेरो जियरारि ।

जो फोड चाहै भली रूपनो,

तौ सनेह न शाहू साँ कीजिये मारि ॥

८८

नागर पैसा हो, गोकुल में,

मग रंजन संग सया दिगु तैं

१६—मिस=रहना । मर=मर । चित चोर चुराये=चोर
मेरे मन को चुरा गया है ।

१७—जिन्हें को=देखने का । कलौरी=कोहिनो । गिरगां=

ग्री ।

फाह सों माई कहा कहिये,
 सहिये जु सोई रसखानि सहायै ।
 नेम कहा जय प्रेम बियो,
 तय नाचिये सोई जो नाच नचायै ॥
 चाहत हैं हम सोई कहा सखि,
 क्योंहु बाहँ पिय देखन पायै ॥
 चेरिये सों जु गुणाल रच्यो,
 नी चाखो सी सर्व मिलि चरो कहायै ॥२३॥

२४

प्रीतिदि सी मनिषा गज गीध,^१
 अजामिन सों बियो सों न निहारो ।
 मीनम मेहिनी कैरे मरी,
 प्रह्लाद सो कैरे हखो दुख भारो ॥
 बाहे सो सोन परै रसखानि,
 कहा कहिये रतिनेद विचारो ।
 बीन बाँ संक परो है तु मागन,
 सागरन हाथो है सागरन हाथो ॥ २४ ॥

२५

१।—मनिषादिन । कहेहुनिषी की कहर । सेतीकहयो; कती बीन
 लगी कुरंग से लपकते हैं । सखी-कह्यो दुख है ।

२।—मीनम मेहिनीकह्यो सखि की की कहर । रतिनेद-कहेहुनि
 । मागन-कह्यो, मर । हखो कहर का का सोन है—

‘कहु मीन का कहे लगे, कती बीन कहर ।

जो रति कहरन है, सागरन सागरन ॥’

यह रम्यखान दिन द्वै में बान फैलि जैहै,
 कहाँ लौं सम्मनो-चंद हाथन दियावयो ।
 आज हौं निहाखो घोर, निपट कलिन्दो तीर,
 दोउन को दोउन सौ मुख मुमखावयो ।
 दोउ परें पैयाँ दोउ लेन हँ बलैयाँ उन्हें
 भूल गई गैयाँ, उन्हें गागर

८५

आपनो सो दोटा हम सबही को जानति हैं,
 दोऊ प्रानी सबही के काज निज प्राणी ।
 ते तो रसखानि सब दूरि तैं तमासो देखैं ।
~~सम्पुन~~ ^{हैं} तरुनि ननूजा के निकट नहिं प्राणी ।
 आज-दिन घनि अनहितुन सौ कहाँ कहा,
 दिनू जे जे आवे तेऊ लोचन दुपारी ।
 कहा कहीं आली पाली देन सब ठाली हाथ !
 मर-वनमाली को न काली तैं छुट ॥

८६

३३—वीर=दे मन्त्री । निपट=छड़ेले में; पकान्न में । दूख
 मन ही मन मुमखावना । पैयाँ=पैर । उन्हें=(१) भोहरा को ।
 गरिहाली को ।

३४—दोटा=नटका । दोऊ प्रानी=दोऊ प्राणी । नानि
 लू=पुनी समूचा । लोचन दुपारी=लौं दिखने में, जो बुराई
 कीजत । वनमाली=वन माया वारण वन जाने आहूत । शक्ति
 काज, जो यक्षों में रहता था और जिसे श्रीगुण ने बाध निज
 वनमाली रस का कथा ही समझ कहावता है ।

प्रेम-वाटिका

दोहा

यंक दिलोकनि हँसनि मुरि, मधुर यैन रससनि । X
मिले रसिक रसराज दोउ, हरनि हिये रसखानि ॥१॥

८७

मोहन छवि रसखानि लखि, अय इग अपने नाहि । X
ऐसे आवत धनुष से, छूटे सर से जाहि ॥२॥

८८

या छवि पै रसखानि अय, पारो कोटि मुनोज़्ज़ ।
जाको उपमा कविन नहि पाई, रहे सु खोज ॥३॥

८९

प्रेम अयनि धो राधिका, प्रेम वरन नैद नंद ।
प्रेम वाटिका के दोउ, नानो नातिन हुंनु ॥४॥ ८९

९०

१—मुरि=मुड़ कर । रससनि=रसीले ।

२—ऐसे.....जाहि=जैसे जोड़ने के समय तो धनुष के सौरे के
तमान करते पास गिंचे करते हैं, पर गन्धर्वग जने पर बाण तो ना
हू चले जाते हैं । मदन पर ही जाने पर गिर पास नहीं चले । इसी
काम्य का वह निम्नलिखित दोहा रसिक का है—

“अरि शीत पेशा हरी, हग जमान पर दुनि ।

सौच छावनी होर नो, छरि दिजे दुनि इति ॥”

होने प्रेम प्रेम सब कोऊ कहत, प्रेम न जानत को।
जो जुन जाने प्रेम तो, मरै जगत क्यों

ॐ

प्रेम अगम अनुपम अमित, सागर सरिस बड़ा।
जो आवत पहि दिग बहुरि, जात नहीं रसना

ॐ

प्रेम धारुनी छानिकै, बरुन भये उलझा।
प्रेमहि ते बिष पान करि, पूजे जानि ली

ॐ

प्रेम रूप दरपन अदो, रचे अज्ञो कं।
धामे अपना रूप कह्यु, लखि परिहै

ॐ

✓ कमल तंतु सों छीन, अरु कठिन लड़ग की धर।
अति सूधो टेढ़ो बहुरि, प्रेम पथ अनिहार

ॐ

लोक बेद मरजाद सब, लाज काज मंदी।
देन बहाये प्रेम करि, विधि निषेध को नेदी

(—) श्री आनन... ..रगसान=प्रेम मित्र के पास गया
हैं संगार-भाव में नहीं लौटना। गीता में भी किया है—

“यद्गन्ता न निवर्तते तद्धाम परम मम।”

—गिरिज=गिरि श्री।

(—) कपड़े=हृदय का कपड़ मेन; प्रेम सागर में जाने की कोशिश
है का नष्ट हो जायगा और अपना दिव्य स्वरूप दिखाने को।

याही तैं सय मुक्ति तैं, लही बड़ा प्रेम।
प्रेम भयें नसि जाहि सय, धैर्य जगत

८५

हरि के सय आधीन, पै हरी प्रेम कहेन।
याही तैं हरि आपुहों, याहि बड़पन ।

८६

येद मूल सय धर्म, यह कहैं सर्व छुति मर।
परम धर्म है ताहु तैं, प्रेम एक अनियार

८७

अदपि जसोदा नन्द अरु, बाल बाल सय धर।
पै या जग में प्रेम की, गोपी भई अनन्य ।

८८

या रम की बहु माधुरी, ऊर्ध्व लही मराहि।
पावें बहुरि मिठास अम, अय दूजो को आहि ।

८९

२६—दग दोहे में मुक्ति से प्रेम का दर्जा उंचा बताया है।
मुनगीदाग भी कहने हैं—

“मगुन हवातक मोरछु न लेरी ।”

३१—अनियार=अनियार्य; परमावश्यक ।

३२—अनन्य=अनुरक्त ।

दग दोहे की पुष्टि केवर्ति नारद जी भी करने बलि बुराई
२६२—

“यथा ब्रज गोविन्दनाम ।”

- | | |
|------------------------|--------------------|
| —मन निगार | ३१—रग होरावरी |
| —भजन मन | ३२—हिन सिंगार लोला |
| —मन मिठा | ३३—प्रभ लोला |
| —प्रति घीवनी | ३४—मानंद सता |
| —रग मुलायमी | ३५—मनुराग सता |
| —रावन घृह् पुता को भाग | ३६—अंध दरा |
| —रना मंडली | ३७—दंड लोला |
| —रमानंद लोला | ३८—दान लोला |
| —रगान हुलास लोला | ३९—प्याहलो |
| —सिजान्न दिवार | ४०—प्याहिस घानी |
- इनमें ३१, ३२ और ४० संग्रहावले अन्य इन धुपदास
इनकी जान पड़ते ।
बाँई बाँई रचना बहुत ही ऊँचा और खूबी है । मैं नया
नये पढ़ी कही सादर पढ़ने सिखा है । इनको सख्त
ना के हुए उदाहरण को ले लिये जाँ —

शृंगार मन

दोहा

हृदय का मन धुप बिजल होत हूँ तिम हुझम ।
ओ रग हुझम मरति बों को दंड रगदाग ॥ ३१ ॥

कवित्त

हंमरि में दूखरि बों, धुपुझ में मरुत बों,
मरुतिल कन ही बों दूखरि की होति है ।

छवि ठाढ़ी कर जोरे, गुन कहा चौरें ढोरे,
 दुति सदै तन गोरे रति बलि जाति है ।
 उजराई कुंज ऐन सुधराई रची मैंन,
 चतुराई चितै नैन अति ही लजाति है ॥
 राग मुनि रागिनी ह, होत अनुराग बस,
 मृदुताई अंगनि हुबति सकुचानि है ।
 हित भूव सुकुमारो, पुतरान ह तें प्यारी,
 जीवति देखे बिहारी मुख सरसाति है ॥ ४ ॥

८५

माधुरी की कुंज तामें मोद की लै सेज रची,
 तिहि पर राजें अतयेले सुकुमार री ।
 रूप तेज मोद के जुगुल तन जगमगैं,
 हाव भाव चातुरी के भूपन सुद्वार री ॥
 नेह नीर नैननि की सैननि में रहे भोजि,
 कौन रंग पाइयो जहाँ बोलियोउ भार री ।
 अति ही आसक्त समी रही मोहि जोहि जोहि,
 हित भूव प्राननि को इहई अहार री ॥ ५ ॥

४—सुधराई=सौम्य । मृदुताई...सकुचानि है=हृदय कोमलता कोमल
 र की धूर लज्जित हो जाती है । पुतराई=पुत्री । पुनरी ।

५—जुगुल तन जगमगैं=भी राधाकृष्ण के दिव्य शरीर प्रकार
 रहे हैं । सुद्वार=मंदार । बोलियोउ=बोझना भी । जोहि जोहि=देख देख
 । अहार=भोजन; इष्ट ।

बिल जुगुल हँसि चिनयनि ठाढ़ो पासि,

मानों निहि उर नई नेह बेलि बरै है ॥

हेत ध्रुव नीरज से नीर भरे ढरे नैन,

बोलति न फछू पैन चित्रसी है गई है ।

ने छुड़ लीने रूप परी नय प्रेम कूप,

चाकी गति जानै सोई जिहि अनभई है ॥ = ॥

सवैया

रूप की रासि किसोर किसोरी,

रंगे रसकेलि निकुंज बिहारा ।

माते अनंग प्रवीन सवै अंग,

फूल सरोरुह ते मुकुमारा ॥

इसो उर नैननि में दिन रैनि नसी

मन के जिते आदि बिहारा ।

जाँचत बात न और कछू ध्रुव,

देहु प्रिये ! रस प्रेम की धारा ॥ ६ ॥

कवित्त

सहज सुभाउ पर्यो नवल किसोरी जू को,

मृदुता दयालुता कृपालुता की रासि है ।

नेक है न रिस के छे भूने है न होत सखी,

रहत प्रसन्न सदा हिये मुख हासि है ॥

=—रां है=राई है । डरे=गड़बड़, नव । चित्र सी है रां है=चित्र के

। मदी है, हिरनी दुरती मक नगी है । अनभई=अनुभव ।

इम छंद में लयन का बड़ा हो मर्मोत्त चित्र सौंका गया है ।

६—सरोरुह=सदर । नसी=जात बगी । निपे=है प्यारी गरी ।

१८—गुला=गुलिया; करपासा=करपासा । इमि=इसमें ; मर्मोत्त=

गन्धि दुष्ट नै नलि याड़ी, पर गर्भ प्रेम ग्रंथि अति गाड़ी ।
 १ देखन फल नहि नार्ह, तिनको प्रेम फलों नहि जाई ॥
 २ सुभाइ जनमनी देखै, निमिषनि कोटि कल्प सम लेखै ।
 चितवति जय प्रीतम भाहीं, सोई कल्प निमिषतैं जाहीं ॥
 नि हँसनि ताल को भावै, नेह को देखी निनहि मनावै ।
 ३ प्रेम छिनहि छिन होई, यह रस बिरहो समुझै कोई ॥
 ज्यों रूपहि देखन नार्ह, प्रेम कृपा को ताप न जाई ॥२॥

दोहा

प्रेम कृपा को ताप ध्रुव, कैसेहुँ कहाँ न जात ।
 रूप नीर विरक्त रहै, नज न नैन अघात ॥३॥

चौपाई

१ प्रेम तिहि ठाँ को कहिये, दुहाँ सोइ चितवत सखि रहिये ।
 य सुप्रेम एक रस धारा, अति दगाध तिहि नाहिन पारा ॥
 २ मधुर रस प्रेम को प्रेमा, पावत नाहि भूति गये नेमा ।
 ३ सगी रहै दिन राती, हित ध्रुव जुगुन नेह नदनातो ॥४॥

दोहा

सन्धि रमिक फिनोर विधि, नदयति परम प्रसीन ।
 हा प्रेम रस मोह नै, रहति निरंतर सीन ॥५॥

१—देख=निमी नज । सन्धि=सन्धि । सगी=सगी । ॥५॥=देख ।

२—मार्ग=मार्ग । देव=देव । ३—मार्ग=मार्ग । देव=देव । ४—मार्ग=मार्ग । देव=देव ।

५—मार्ग=मार्ग । देव=देव । ६—मार्ग=मार्ग । देव=देव । ७—मार्ग=मार्ग । देव=देव ।



अवतं, ये सदै सहचरो, मत्त रहन उड़ो रंग भरी ।
 त को जानौ रखि रहै, भाग पाइ सो कहु इक लहै ॥
 यनसरन भाव धरि आवै, सो या रस के स्यादहि पावै ।
 कपट भ्रन दिन दुलरावै, ताको भाग कहत नहि आवै ॥
 मंजरि रंग लागै जाके, प्रेम कमल फूलै हिय ताके ।
 त जाके उर न सुहाई, ताको संग देनि तजि भाई ॥ २ ॥

दोहा

या रस सौ लाग्यो रहै, नितिदिन जाको चित ।
 ताको पद रज सोल धरि, बंदत रहु ध्रुव नित ॥३॥

प्रेम लता

दोहा

जिन नहि समझ्यो प्रेम यह, निनकों कौन कलाप ।
 दादुरह जल में गहै, जिन मोन मिलार ॥१॥

चौपाई

जिन पान मुख चाहन सपने, निनकों प्रेम छुदत नहि सपने ।
 । या प्रेम हिंडोरै भूलै, निनकों सौर सदै मुख भूलै ॥
 न रसासव चारों अवहीं, हारे रंग चढ़ै ध्रुव तवहीं ।
 । रस में अब मन परै हारै, मोन नीर को गति है जाई ॥

१—नेह=परांग। मंजार=मंजर; मुख मुख। इतर=विचरना से
 त्र हार। मान=मान। दुनरावै=नित में पदार को।

२—निन=निन।

३—अनार=अनार। निगार=जब बा) देन।

निमि दिन ताहि न कछु सुहाई, प्रीतम ते
 जाको जासों है मन मान्यो, सो है ताके
 अरु ताके अँग सँग की यानें,
 कनै मोह जो ताकोई भावै, ऐसी नेह की
 ओ रम लाल लड़ैती माहीं, ऐसी प्रेम और की

दोहा

प्रज देवी के प्रेम की, यधी घुसा मिलि हो
 प्रह्लादिक बांछन रहै, तिनके पद की

५४

मन मन रूप सुभाष मिलि, है रहै रहै न
 जीवनि मुमकनि चितायो, अथ रामा ल

चौपाई

सुहावन घन राजन कुंज, विहरन नहीं रमि
 एक प्रान विधि देह है दोऊ, निन समान प्री
 मय पर अधिक जानि यह प्रेमा, नाके बस मे

०

०

०

०

१—नयाई इहे जगत् हो जाना है, मन प्रान प्रान
 कनै मोह जो ताकोई भावै, ऐसी नेह की

२—नयाई इहे जगत् हो जाना है, मन प्रान प्रान
 कनै मोह जो ताकोई भावै, ऐसी नेह की

३—नयाई इहे जगत् हो जाना है, मन प्रान प्रान

४—नयाई इहे जगत् हो जाना है, मन प्रान प्रान

होकर मैं भीतर की ओर से आया।

तब मैंने अपने कानों पर हाथ रखे।

हृदय में एक अजीब सी धड़कन।

प्रतीति का एक अजीब सा अनुभव।

तब मैंने अपने कानों पर हाथ रखे।

प्रिय का नाम आने लगा।

अपनी ही आवाज में मैंने कहा।

एक क्षण के लिए मैंने कहा।

२००

लाल साँझ का प्रेम का

अदृश ही निज प्रान्त का।

मन में

सोचता

समय के एक क्षण, ऐसी

जैसी काँची में, दिखता था।

कभी : चमकता लहरों की तरंगों में। ३।

जो कोई भी दिन किसी भी क्षण के लिए नहीं था।

“जैसा ही मैंने सोचा था।”

कभी मैंने सोचा था कि, कभी ऐसा

कभी नहीं था।

१—विशुद्धता, जीवन का धर्म।

दीप्ता

ऐक्य रहित ह्य मय विदुः, यत् न कर्तव्यं मे ।
यत् न कर्तव्यं मे, यत् न कर्तव्यं मे ॥ २ ॥

ॐ

हृदयि हृदये मय मय, यत् न कर्तव्यं मे ।
हृदयि हृदये मय, यत् न कर्तव्यं मे ॥ ३ ॥

ॐ

हृदयि हृदये मय मय, यत् न कर्तव्यं मे ।
हृदयि हृदये मय, यत् न कर्तव्यं मे ॥ ४ ॥

ॐ

हृदयि हृदये मय मय, यत् न कर्तव्यं मे ।
हृदयि हृदये मय, यत् न कर्तव्यं मे ॥ ५ ॥

ॐ

हृदयि हृदये मय मय, यत् न कर्तव्यं मे ।
हृदयि हृदये मय, यत् न कर्तव्यं मे ॥ ६ ॥

ॐ

हृदयि हृदये मय मय, यत् न कर्तव्यं मे ।
हृदयि हृदये मय, यत् न कर्तव्यं मे ॥ ७ ॥

ॐ

१—हृदयि हृदये मय मय ।

२—हृदयि हृदये मय मय ।

३—हृदयि हृदये मय मय, यत् न कर्तव्यं मे ।

४—हृदयि हृदये मय मय, यत् न कर्तव्यं मे ।

५—हृदयि हृदये मय मय, यत् न कर्तव्यं मे ।

भूलिहु मन दीजै नहीं, भक्तन निन्दा शोर ।
होत अधिक अपराध तिहि, मति जानहु उर थोर ॥१४॥

८९

सेवा करत में भक्त जन, होइ प्राप्त जो आइ ।
सो सेवा तजि येगि ही, अरचहु तिनको जाइ ॥१५॥

९०

भक्तन देखे अधिक है, आदर कीजै प्रीति ।
यह गति जो मन की करै, जाइ सकल जग जीति ॥१६॥

९१

जो अभिमान न कीजिये, भक्तन सों होइ भूलि ।
सुपन्न आदि हू होइ जो, मिलिये तिन सों फूलि ॥१७॥

कुण्डलिया

यहु रीती थोरी रही, सोई रीती जाइ ।
हित ध्रुव येगि विचारिकै, यसि वृन्दायन आइ ॥
यसि वृन्दायन आइ, लाज तजिकै अभिमानहि ।
प्रेम लीन है दीन, आपको वृन सम जानहि ॥
सकल सार को सार, भजन तू करि रस रीती ।
रे मन सोच विचार, रही थोरी यहु रीती ॥ २८ ॥

१४—सेवा=भगवत-सेवा, कर्चा पूजा ।

१५—तजि=प्रसन्न होकर ।

१८—थोरी रही=थोड़ी आयु और बची है ।

सोरठा

सृन्दायन रसरौति, रहै विचारन चित्त झू।
पुनि जैहै बय धीति, भजिये नयल किसोर हँ

दोहा

दुर्लभ मानुस जनम है, पैयत वेह मँथि।
सोई देखौ कौन विधि, यादि भजन विनु उति।

ॐ
विपरि जल में मीन ज्यों, करन कलौष झर।
७ नहि जानत दिग बाल घसू, रह्यो ताकि धरि पजर।

ॐ
ज्यों मृग मृगियन जूय सँग, किरनमल मर हँ।
जानन नाहिन पारधी, रह्यो काज मर सँ।

ॐ
निसि वासर मग करतसौ, लिये पान कर हँ।
कागद सम भर आयु नय, छिन २ करत हँ।

ॐ
मिहि तन कौ सुर आदि सब, बाँझत है दिन हँ।
सो पाये मतिहीन है, बूधा गँवायन हँ।

ॐ
रे मन, प्रभुता कालकी, करहु जतन है मँ।
तू मिहि भजन कुठार सौं, काटत ताही कँ।

१०—वेड=विद्या प्रहार।

११—तन बरवि=वन अगा कर, प्रेय में पड़कर।

१२—करत=करे।

प्रेम विनाश उपास, रही एक रस मन मारी।
 निहि मुख को कह कहीं, मोरि मति है अम मारी।
 दिन ध्रुव यह रस अति सरस, रसिकनि कियो प्रसन्न।
 मुकनि छाँड़े गुगत नहि, मानगरांवर हँस॥१॥

५४

प्रेम दिव्य मैं निरमिये, नय किमर रस रानि।
 निरमयनि अति अनुगम की, करन मद मृदु हानि।
 करन मद मृदु हानि, दाँड निज प्रेम प्रजामहि।
 छुके रहन मदमग्न, रानि दिन मदन विनामहि।
 दिन ध्रुव छवि गौ कुंज में है अमानि मुत्र वैवै।
 मंगे मति इन नादि कहें उगमा है ऐसे॥२॥

५५

बृन्दाविगत निमित्त है, निवि विवि माने छानि।
 मयन नहीं केम रही, लया अगन वनि।
 लोयो अगने रानि, मृदु बलु समुद्धन मरी।
 लउमनिदि सि गुरे काय के मतिपति मरी।
 प्रमत्ता पुनित निरंज यन अदभुत है रस का मदन।
 लेशमन लोडुली लाल उई, वेगो है बृन्दाविगत॥३॥

५६

- १—हे कर्निक बृन्दाविगती दिने पुनः देवदेवे ?
 २—बृन्दाविगत निमित्त है अदभुत यन काय काय लेशमन
 लेशमन लोडुली लाल उई, वेगो है बृन्दाविगत ?
 ३—१५. बृन्दाविगत है ?

बार बार ता दनत नहि, यह संजोग अनूप ।
मानुष तन दुन्दाविपिन, रसिकनि संग विवि रूप ॥
रसिकनि संग विविरूप भजन सर्वोपरि आहो ।
मनु दे ध्रुव, यह रंग लेहु पन पन अवगाहो ॥
जो दिन जात सा फिरत नहि, कहु उपाय रूपार ।
सकत सपानप छाँड़ि भहु, दुर्लभ है यह बार ॥ ४ ॥

जीव दशा

चौपाई

जीव दशा कहुइक सुनु भाई, हरिउस अमरन तजि धिर खाई ।
देन मंगुर यह देख न जानी, उलटी समुक्ति अमर ही मानो ॥
उर घरनी के रंग यों राखो, दिन दिन में नट-कपि ज्यों माखो ।
न गै योंति जाति नहि जानी, जिनि सावन सरिता को पानी ॥
नया सुग में यो लखान्यो, विषय न्याहु ही मरदन जान्यो ।
नल समय उय जानि तुलानो, नन मन की सुधि नई तुलानो ॥ १ ॥

भक्त नानादली

दोहा

गीत—हरिउस नाम ध्रुव करन ही, पाई, कानैद देनि ।
मेन रंगों उर लगनगै, नयन जुगुल दर बेनि ॥ १ ॥

१—भुवै=भक्त का । गै=कर । कानैद=कान । नयन=नयन ।

१—नयन=नयन । नयन=नयन । नयन=नयन । नयन=नयन ।
नयन=नयन । नयन=नयन । नयन=नयन । नयन=नयन ।
नयन=नयन । नयन=नयन । नयन=नयन । नयन=नयन ।

मंजु के आदेश से इन्होंने सतमई अथवा वसंत, उमकी रखना का एक मात्र श्रेष्ठ उतका हममें हमें संदेह है। विहारीलाल जी स्वयं लिखते हैं—

“हृकुम पाव प्रयनिह को, री गीतावना।

करी विहारी गनगई, मरी अनेक सारा।

विहारीलालजी एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के बरि थे। महाराजाओं के अपनी कविता में प्रसन्न रहना वस मात्र श्रेष्ठ नहीं था। इन्होंने कविता बनायी, और कई नित्य बनायी। सतमई के गुरुम पाशीलन द्वारा बखला है कि उनके निर्माण काल में काँक प्रयत्न में परिपूर्ण हुए। यह प्रयत्न नाश के अथवा मंजु के बाद वसंत में इनका जी उदय गया। राजा महाराज अहमद के आगे इनकी कदमरत्न में बचायी। निवेक और वैराग्य का उदय हुआ। कलकत्ता इति होर में इनका मन फिर अलग। निवेक—

वस को देखन होत है, कंठ में स्वयं मन्त्र

मुमदु लाली उगल मुह, उगलाने प्रसन्न

भाई गुन गीतन, विमल। यह

मुमदु काँक नव मन्त्र, आव काल के

इस समय १७८६ मीमांसा नामक नामक नाम

कृतिवद्धता का लक्ष्य प्राप्त मुह मं। यह वसंत

सामर्थ्य रखता है। यह लक्ष्य है। यह वसंत

वसंत वसंत वसंत होर है। निवेक निवेक

की वसंत वसंत का वसंत है—

संभारी कवि भी नहीं थे। इनका सम्बन्ध था। ग्रन्थ और ग्रन्थभाषा के साथ तो इनका सम्बन्ध ही था। सनमई के पद्य-श्रीकाकार कृष्ण कवि क्याही दस्यु लये हैं—

“ग्रन्थ भाषा बरनी कविन, बहु विधि बुद्धि विन
मय का भूषन सनमई, कर्मी विशरीरम
इन मय वाचों को मोच कर हम प्रस्तुत प्रण
ह्लास के सम्मिलित करने का लोभ संवरण ली
सनमई के कुल्य रजोपम दोहे नीचे निम्न ज्ञाने हैं—

दोहा

मेरी मय वाचा हरी, राधा भाषि में
जा नन की मारें गये, क्याम हलिन दुर्गि में

६६

माम मुकुट कटि वाद्यनो, वर मुगली का हा
यह वाचिक मो मन वली, राधा विशरीरम

६७

१—ग्रन्थ का सम्बन्ध ही है, ग्रन्थ भाषा का वह लो-
भान्तराली। कर्मी कर्मचर, कर्मा। हलिन दुर्गिच्छा का ही है
कर्मन विच्छा। कर्मी कर्मचर की ली ली ली

इन वाचनो का वह भाषा प्रस्तुत वाचनोपम का ही है

२—ग्रन्थ का लोभ, लोभ, कर्म कर्मचर का ही है

माम लोभ है ही है, विच्छा लोभ कर्म लोभ

३—ग्रन्थ का लोभान्तराली लोभ कर्मचर का ही है, कर्मी कर्मचर

का लोभान्तराली लोभ का ही है, कर्मचर कर्मचर का ही है

४—ग्रन्थ का लोभान्तराली लोभ कर्मचर का ही है, कर्मचर कर्मचर का ही है

मोहन मूरति स्याम की, अति अद्भुत गति जोय ।
चसति सुचित अंतर तऊ, प्रतिबिम्बित जग होय ॥३॥



सखि, सोहति गोपाल के, उरगुंजन की माल ।
याहर लसति मनो पिये, दावानल की ज्वाल ॥४॥



मोर मुकुट की चन्द्रिकानि, यों राजत नन्दनन्द ।
मनु ससिसेखर के अफस, किय सेखर सत चन्द ॥५॥



नाचि अचानकह उठे, यिन पायस बन मोर । ३
जानत हों नन्दित करी, इहि दिनि नन्द किमोर ॥६॥

३—गति=ज्ञान । जोय=देखो । प्रतिबिम्बित जग होय=संग्रह भर में
गिरा हो रही है; घट घट में व्यापक है ।

४—दोहों में दार्शनिक चमत्कार है । ब्रह्म मृतः प्रकाशरूप होने के
न, माया से छाच्छादित होने पर भी, सर्वत्र देदीप्यमान हो रहा है ।

५—गुंजन=गुंफा । लगति=भलकती है । दावानल=वन में लगी
आग ।

दाशानन—एक बार ब्रह्म के एक वन में, जहाँ गान्धर्वों परा रह रहे थे,
वो प्रचंड आग लग गयी । घात ग्यात्र और गौघोंको देखकर भीहृष्य
दावानल की देखते देखते पान कर गये । यहाँ पर गुंजाओं की लाज
दाशानन की लपट के समान दिग्लान्ही देती है ।

६—ससिसेखर=शिखरी । अफस=दूँध, होड़ । सेखर=गिर ।

७—नन्दित=प्रानन्दित । नन्द किमोर=भीहृष्य ।

धीरे सेप के समान भीहृष्य को देखकर मोरों की घनपटा का धक्का
मारा ।

जहां जहां ठाढ़ो लख्यो, स्याम सुभग सिमरै।
वनहुं दिन दिन गहि रहत, दगनि अजौ यह छैरै।

६४

मकराहुन गोपाल के, कुंडल सोहत कान।
धरयो समर हिय गढ़ मनहुं, ज्योढ़ी समत निबर।

६५

तजि तीरथ हरि राधिका मन दुति करि अनुता।
जिहि अज केलि निकुंज मग, पग पग होत प्रया।

६६

नित प्रति एकत ही रहत, घेस यस्त मनर।
अद्विषन जुगुल निमोर मयि, सोचन जुगुल हरेक।

६७

७—सुभग=सुन्दर। गहि रहत=रह गई। लखी है, लीख केसी।

८—मकराहुन=मछली के आकार वाले। समर=सरा, झरोखा।

९—अद्विषन वा इदय जिला है, उसमें कामदेव प्रवेश का दह।
के शर वा शिलेदार कामदेव की कुदृष्टि कही पुनर्प्रेम शक्ति।

१०—नरकेनि=गाम-नर। प्रयाग=तीर्थयात्रा, गया वहां
हुआ हो।

प्रयाग में गंगा-यमुना-नारण्यानी का संगम है। भावों का जो
संघर्ष, वात्सा भीत भाव है। यहा भी राजा कृष्ण के शरीर
मिसेयी रा आती है।

चिरजीवी जोरी जुदै, क्यों न सनेह गँभोर।
को घटि ये हृदयभानुजा, वै हलधर के घोर ॥११॥

८९

प्रलय करन चरमन लगे, जुरि जलधर इक साथ।
नुरूपति गर्व हन्यो हरपि, गिरिधर गिरि धर हाथ ॥१२॥

९०

मोर चन्द्रिका स्याम स्तिर, चढ़ि कत करत गुमान।
लखिया पाइन पै लुठत, नुनियत राधा मान ॥१३॥

९१

११—हृदयभानुजा=नारायण हृदयभानु का कन्या; हृदय अधांश बैज
भानुजा (बहिन) । हलधर=वल्लभ; बैज । घोर=भार्य ।

जानि जानि में ही गहरा प्रेम होता है। यहाँ भीहृदय और राधिका
में ही राजहृद के हैं। कथन, रहस्यार्थ से, राधिका जो बैज की बहिन
तो हृदय बैज के भार्य ।

१२—जुरी=इच्छे होकर । गिरिधर=(१) गोवर्धन पहाड़ उठाने
भीहृद (२) पहाड़ को धारण कर, उठा कर ।

१३—लखिया=देखी (बुझलखी) । लुठत=रोटती, दुर्ग । मान=सह
गता ।

राधिकाजी को मनाने समय भीहृद उनके पैरों पर कदम मस्तक
देते, इन समय नाथे पर चढ़ी हुई मोर चन्द्रिका (मुकुट) भी चरलों
लोहने लगेगी । सब गर्व तब ही जायगा !

साहन ओढ़े पीत पट, स्याम सलौने गल।
मनों नील मनि सैल पर, आतप पर्यो प्रभात।

अधर धरत हरि के परत, ओठ दीठ पट जेति।।
हरे बाँस की पाँसुरी, इन्द्र धनुष मो ॥

किती न गोकुल कुल बधू, काहि न किन मिमहीन।
कौने तजी न कुल गली, है मुरली मुर मोन।

हुटी न मिमुता की भलक, भलकयो जोषन झंका
दीपति देह दुहनि मिलि, दिपत तफता रस।

इक भीजे चाहने परे, बूढ़े बड़े हजार
किनै न पेगुन नर करत, नै से चढ़ती बार।

१४—गश्रीने=सुन्दर। आतप=पूष।

पानः कान्चीन पूष का रग पीया होता है। दश भोक्ता द
प्यर पूष के समान है।

१५—दीठ=दृष्टि। पट=पीनाम्बर। जोनि=जोषन।

बारी पर इन रंगों की मन्त्रक पढ़ने से इन्द्र धनुष

घोड़=वाज।

पट=पीना।

दीठ=देख, स्याम और पान।

बारी=हरी।

१६—गोकुल=वज। कुलगरी=वसन्तवर्षादा, पानिबन।

१७—मिमुता=मृदुलपन। भलकयो=दिलायी देने लग।

वज्रपत्त। नाकना=पूष की।

भीने=भीजे, पीकारी सा रंग चढ़ा। चढ़ने परे=इन्द्र के रंग में

अनिपारे क्षीरघ द्रवनि, किन्तो न तदनि मजान।
 यह चित्तपति औरे कछु, त्रिहि यम हांन सुजान।

पत्रा ही निधि पाइये, या पर के सहु नाम।
 नित प्रति पुन्यो ही रहति, आनन ओप उजान।

यजो लखीना ही रह्यो, मृति सेवत एक बंन।
 नाक धास बेसर लह्यो, यासि मुकुनन के संग।

सोरठ

मंगल बिन्दु सुरंग, मुग्न समि, कंसर आइ गुड।
 एक नारी लहि संग, रसमय किय लोचन जगल।

२२—अनिपारे=बुझीये। तदनि=निधियों। मजान=माननीय।
 मजान=प्रभु।

२३—पत्रा=पत्रा। पुन्यो=पुण्यमाती। ओप=उपपन्न।

२४—अर्यौना=(१) कर्णकुल (२) तरा नही। मृत्त पत्र।
 मृति=(१) कान (२) वेद। नाक=(१) नासिका (२)
 मुकुनन के=(१) मोनियों के (२) ओपपुत्रों के साथ।

इस दोहे में श्लेषार्थ से सत्संग की पराकाष्ठा वर्णन की गयी है।
 चित्तपति आदि से सत्संग कही अधिक भेषकर है।

२५—सुरंग=गडग। आइ=आइ। गुड=हृदयनि,
 रंग जोका है। नारी=(१) श्री (२) राशि। रस=(१) आनंद (२)
 रस शिवद्वयों में ज्योतिन सम्बन्धी चमत्कार है।

अर्यौना, मंगल और हृदयनि एक ही राशि पर स्थित होते हैं।
 मंगलदि योग होता है। यहां एक ही श्री में चन्द्र जैसा मुख, मृत्त

दोहा

फन देयो सौंप्यो समुद्र, यह धुरहर्था जानि ।
रूप रहचटें लनि लग्यो मांगन सय जग जानि ॥२६॥

११५
खिन्न बैठि जाकी सयी, गहि गहि गरय गरर ।
भय न फेले जगत के, चतुर चितेरे कूर ॥२७॥

नेह न नैननि को फहू, उपजी घड़ी दलाय ।
नोर भरे नित प्रति रहें, तऊ न प्यास सुझाय ॥२८॥

नार विन्दु और छहस्पति जैसा पीरा टीका देखने से संसार भर रमनय
रूपान् धामभित्त हो जाता है ।

२६—फन=फनाज, भोज । धुरहर्था=छोटे छोटे हाथवाली ।
रहचट=बोध ।

कज्जल समुद्र ने चाहा कि छोटे छोटे हाथवाली यह में भीख दिलाने में
कम लब्ध हो जायगा, पर यह उसका धन था । यह वा अपूर्व सौन्दर्य देख
कर सारा संसार ही भिखारी बन गया !

२७—मयी=विष । गरर=धमरद । कूर=मूर्ख ।

प्रतिष्ठा मुंदरता बढ़ जाने से कोई भी विष पदार्थ नहीं खिन्न सखा ।
कपडा नादिक भाव (पगोना, कप कढ़ि) का जाने से विष टोक टोक
नहीं बनर सका । कपडा सौन्दर्य में निमग्न हो जाने से मन रुच में न रहा
और इसीमें विष खींचने समय बुद्धि नष्ट हो गयी । यह दोहा दार्शनिक दृष्टि
से पानना पर तथा शृंगार दृष्टिसे नादिक पर घटता है ।

२८—बजाय=आपत्ति, रोग । नीर=जल, चोत्तु ।

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहि होय।
ज्यों ज्यों हूँ स्याम रँग, त्यों त्यों उजल ॥

जा न जुगुति पिय भिजन की, धूरि मुकुति मुन होय।
जो लहिये सँग सजन तौ, धरक नरक हूँ ॥

लई सौंह सी मुनन की, नजि मुरली धुन आव।
किये रहति रति, रात दिन, कानन लाये कान ॥

लोभ लगे हरि रूप के, करो सुई छुरि जार।
होइन वैचो बीच ही, लोपन बड़ी बनार ॥

२६—गति=अवस्था। स्याम=काला, भीरुणा का रँग (रंग)।
रजतन=नरक, भयल्लु।

२७—मुकुति=मुक्ति, मोक्ष। भजन=प्यारा। शक=अप।
यहाँ प्रेम की पराकाष्ठा वर्णन की गयी है। इसी आठव
दोहा कविराज भदमद का भी है—

कदा करा बैकुण्ठ ले, कवपट्टन की दाई।

‘भदमद’ टाक गराहिये, जो प्रीतम गन बाई ॥

२८—मोद=हस्यम। रति=प्रेम, लगन। कानन=वन, हृदय
सागर है।

२९—माद=मोह तब करने की (दया-वा की) गुलन कर ली
धुरि=मिल कर। बीच ही=बिना कुछ करे मुने ही। लोपन=लेव।

कवचपी दयाकी ने भीरुणा के नेत्रों से मिल कर मुझे
बैच दाना, कुछ पूछा नरक नहीं! इस दोहे से कवि का व्योमार्ति
अवगम होना है।

श्रीविद्यारत्न

न. निहारे तर को. कहीं सीते यह झौन । ममक
तौ तौ पत्तक द्य. तौ पत्तक पत्तौ न [२३]

त्यों दसिदे क्यों निषहिदे, नानि नेह पुर नाहि ।
 दगावणी होयन करे, नाइक नन दधि जाहि ॥३३॥

६५
 धैर्यं विष्णुना पशुनां गतिना, इति श्रुत्वा दिवाय ।
 बलिं दाननाशो भोजनं मुनि, को दत्ति तुम्हें पन्थाय ॥३५॥

नाउ लगान न मानहीं। मैंना नो खज नाहि।
 ये मुहँडोर तुरंग नौ। ऐचकह जलि जाहि ॥३३॥

१३—~~दण्ड~~ दण्ड का मत है कि । मरौ दण्डका मत है ।
मरौ दण्ड है । दण्डका मत ही भी ।

११-
१२-
१३-
१४-
१५-

[illegible][illegible]

१. संस्कृत (१) संस्कृत (२) संस्कृत (३)
 २. संस्कृत (१) संस्कृत (२) संस्कृत (३)
 ३. संस्कृत (१) संस्कृत (२) संस्कृत (३)
 ४. संस्कृत (१) संस्कृत (२) संस्कृत (३)
 ५. संस्कृत (१) संस्कृत (२) संस्कृत (३)
 ६. संस्कृत (१) संस्कृत (२) संस्कृत (३)
 ७. संस्कृत (१) संस्कृत (२) संस्कृत (३)
 ८. संस्कृत (१) संस्कृत (२) संस्कृत (३)
 ९. संस्कृत (१) संस्कृत (२) संस्कृत (३)
 १०. संस्कृत (१) संस्कृत (२) संस्कृत (३)

[Faint handwritten notes at the bottom of the page]

धोविहारीनाम

कहलाने एकल वसन, अति मयूर मृग वाच । ३३ ॥
जगत तपोधन सी किया, दीन्य दाघ निराघ ॥ ४१ ॥

॥ ३९ ॥

रजित भ्रंग पटायली, भरत दान मधुनीर ।
मंद मंद आघन चन्दा, वृक्ष वृक्ष शमीर ॥ ४२ ॥

॥ ४० ॥

कुर्यात दुरास प्रजानि वा, दयो न पद अति दद । ३४ ॥
अधिक जेपेरो जग पर, मिलि मायस रवि चद ॥ ४३ ॥

॥ ४१ ॥

पति पद सव कृति समुति यां सपाने लाग ।
मौन देवावल निरव ती, पातव राधा राम ॥ ४४ ॥

३३—कहलाने=कहलाने दूध, कुर्यात=कुर्यात को ना म । ३३ ॥ मयूर=मयूर को
३४—अधिक=अधिक । निराघ=निराघ ।

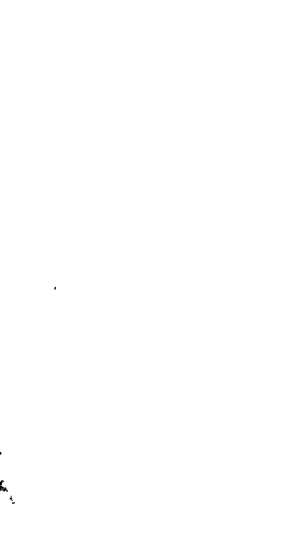
कहलाने=कहलाने दूध । मयूर=मयूर को ना म । ३३ ॥ मयूर=मयूर को
३४—अधिक=अधिक । निराघ=निराघ ।

३५—अधिक=अधिक । मयूर=मयूर को ना म । ३५ ॥ मयूर=मयूर को
३६—अधिक=अधिक । निराघ=निराघ ।

३७—अधिक=अधिक । मयूर=मयूर को ना म । ३७ ॥ मयूर=मयूर को
३८—अधिक=अधिक । निराघ=निराघ ।

कहलाने=कहलाने दूध । मयूर=मयूर को ना म । ३३ ॥ मयूर=मयूर को
३४—अधिक=अधिक । निराघ=निराघ ।

३५—अधिक=अधिक । मयूर=मयूर को ना म । ३५ ॥ मयूर=मयूर को
३६—अधिक=अधिक । निराघ=निराघ ।



मरुत प्यास पिङ्गरा पर्वों, सुवा समय के फेर।

आइर ई ई योलियन, यायस बलि को रंग १५६१

जो सिंग धरि नहिमा नहो, लहियत राजा राघ ।

प्रगटत जड़ना आपना. मुकुट पहिरियत पाय ॥६०॥

✓ धन जाहू हाँ से करत, हाथिन से प्यापार ।

नहिं जानन या पुर यवनन, धोयी और पुम्हार ॥६१॥

✓ विरम वृथाहित यो नृप, जियो मतीगनि मोधि ।

अभिने शशाङ्क अनाथ उल्ल, मार्ग २६ पर्योधि १६२॥

जिदि में होने भक्ति मन, यहाँ जहाँ हजारा ।

सर्वं भद्रं कर्णेभ्यः स्वस्ति, श्रेयं परोक्षि दत्तार [६३]

पुष्प न साँटन पदन ह, नलन मेह गंधीर ।

पौर्णमासी परै न दस कहे, नैरायें सोन पैग बीग ॥६२॥

४६—पुनः=पुनः । तस्मिन्=तस्मिन् । तस्मात्=तस्मात् । तस्मिन्
तस्मात्=तस्मात् ।

मित्रों के विरुद्ध नहीं है बल्कि वे अपने ही देशवासियों के हितों के लिए हैं—

“काम विना ही गो, मरी, की मरु मारी मार :-

[illegible][illegible][illegible]

१४—नमोऽस्तु ते नमोऽस्तु ते । नमोऽस्तु ते । नमोऽस्तु ते ।
नमोऽस्तु ते ।

दोहा

✓ बुधि अनुमान प्रमान स्मृति, किये नीति ठहराय ।
मूच्छम गति परमार्थ की, अलख लखी नहि जाय ॥६६॥

६६

✓ जगत जनायो जेहि सकल, सो हरि जान्यो नाहि ।
ज्यौं आँखिन सय देखिये, आँखि न देखी जाहि ॥ ७० ॥

७०

✓ या भय पाखावार को, उलँघि पार को जाइ ।
निय हवि छाया-आदिनी, नहै बीच ही आइ ॥ ७१ ॥

६६—अनुमान=विचार, ज्ञान । स्मृति=स्मरण । अलख=जो देखा
ना गये ।

इसमें दार्शनिक भाव है । मानता यह है कि ब्रह्म का विषय मनवादी
नहीं है । तथा—

“दशौं बाधो निरर्थक्ये अज्ञाने मन्मा मर ॥”

७०—अज्ञानो=ज्ञान हिला ।

यह शोक भी दार्शनिक सिद्धान्त से जुड़ा नहीं है ।

७१—आका दारिनी=आका दारिनी का मत रखनेवाली । बीच ही=
विषय भी मान्य के करने मन्म ।

अनु के मन्म मन्म के विविध काम की एक सारसी मन्म की ।
इसका मत था कि जो पूरी दुनिया का ज्ञान हो, उसकी दुनिया
एक ही ही मन्म से । जो एक दुनिया की है भी मन्म की, वह
मन्म से ही एक ही मन्म से है । इस मन्म की मन्म के
की ही मन्म का मन्म-दरिनी का काम करने है । इसमें मन्म के मन्म
को मन्म के ही ही मन्म के मन्म ।



फाँड़ें चित सोई निरौ, जिहि पतितन के साथ ।
मेरे गुन आँगुनगनन, गिनौ न गोपीनाथ ॥२३॥

८९

थोरै गुन रीकते, बिसरई यह, जानि ।
तुमह कान्ह भये मनौ, आज कालि के दानि ॥२४॥

९०

क्यको देखत दोन है, होत न स्याम सहाय ।
तुमह लागी जगनगुरु, जगनायक जग बाय ॥२५॥

९१

कोऊ कोरि क संग्रहौ, कोऊ लाख हजार ।
मो संपति जहुपति सदा, विपति बिदारनहार ॥२६॥

९२

ज्यों है हौं त्यों होंहुगो, हौं हरि अपनी चाल ।
हठ न करौ अति कटिन है, मो तारियो गुपाल ॥२७॥

२३—तिरौं=तमारा से तर जाऊँ, मुक्त हो जाऊँ । गनन=गणनों को ।

२४—थोरै=थोड़े ही । जानि=जाना । कान्ह=कान्हा । दानि=दानियों, पौ ।

२५—जगबाय=जगन्नाथ की इश, स्वार्थभाव ।

स्वयं कृत दोनो दोहों में कनियुगी स्थायी दानियों की निंदा की गयी है ।
फिर है, महाश्वर बिहारी का किसी राजा ने अनादर किया हो, और
हमोंको लज्ज करके ये दोहे बनाये गये हों ।

२६—कोरि क=कोरोड़ों । बिदारनहार=नारा करनेवाले ।

२७—चाल=चरनी । गुपाल=गोपाल, श्रीकृष्ण ।

तां वलियं भक्तिं यनी, नागर नंद किलोः ।

ओ तुम नीके पै लग्यो, मो करनी धी सोर ॥ ६२ ॥

जान जात पित होत हैं, ज्यों जिन में संतोष ।

होन होन न्यौ होद नौ, होय घरी नै मोर ॥ ६३ ॥



॥—दीपन=दीपना ॥ एते रते=एते रते (एते रते)

१—इति=इतिहासः इति, अंतिमं=अन्तिमं अं, इतिहासः इति ।

ਮੇਰੀ ਫੀਰ, ਤੇ ਕਾਦਰ, ਮੁਆਜ਼ਾ ਤੇ ਹੁਜ਼ੂਰ, ਮੁਆਜ਼ਾ-ਹੁਜ਼ੂਰ ਤੇ ਮੇਰੇ ਫੀਰ, ਕਾਦਰ ਤੇ ਮੇਰੇ ਫੀਰ ਤਾਕ ਹੁਕਮੇ ਕੀ ਕਾਦਰ। ਤਾਕ ਤਾਕ ਤੇ ਮੇਰੇ ਫੀਰ, ਕਾਦਰ ਤੇ ਮੇਰੇ ਫੀਰ ਤਾਕ ਕਾਦਰ।

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सवैया

यन नूपुर मंजु यजै,
कटि किंकिन में पुनि को मधुसई ।
शिर अंग लसै पटपोत,
हिये हुलसै यनमात सुहाई ॥
ये किरोट बड़े दग खंचल,
मंद हँसी मुख चन्द जुहाई ।
जग-मन्दिर दीपक सुन्दर,
धौं ब्रज दूतह देव सहारै ॥ १ ॥

कवित्त

जो कै परम पदु, ऊनो कै अनंत मदु,
दूनो कै नदीम नदु इंदिरा कुरै परी ।
हिमा मुनोसन को, संयति गीतन की,
रसन की सिद्धि ब्रज बोयी विरुरै परी ॥
गदों की औधेरी अधराति, मधुरा के पय,
आई मनोरथ, देव देवकी कुरै परी ।
पावसार पूरन, अपार, पर ब्रह्म राशि,
जमुदा के कोरे एक बारक कुरै परी ॥ २ ॥

१—किरीट=मुकुट । जुहाई=जोता । मधु दूतह=जन के मंगल ।
२ ।

३—अनैकै=अन करके । पानरदु=नोद । इंदिरा=रानी । रस=स्वयं
ही । विरुरै परी=निराश निरत हो गयी । देवकी, श्रीकृष्ण की माता ।
जिनके में । कुरै परी=जात ही, मर दी; 'कुरै' का बुद्धिवादी रस है ।
रस वंद में ही कृष्ण-जन्माश्रमी का क्या ही सौभाग्यमय चित्र है !

भू. पाताल, नाक लूचो तैं निकसि आये,
 चौदही भुवन भूये, भुनगा को भयो हेत ।
 गीहो-झंड-झंड में समान्यो, द्रुहमंड नय,
 सपन समुद्र यारि बुंद में हिलोरे नेत ॥
 मति गयो मूल धून, मूच्छम समूल कुल,
 पंच भूत गन अनुदान में कियो निवेत ।
 गप ही तैं आपही सुनति मिझारि देद,
 नख लिंग गारि में सुमेन देवराई देन ॥५॥

५

तुही पंचत्व, तुही तत्व, राज, तन तुही,
 थावर ही जंगम कितेक भयो भय में ।
 तेरे ये दिनास सौटि, तोही में समान्यो, कहू
 जान्यो न परत पहिचान्यो जब जब में ॥
 देख्यो नहीं जान, तुही देखियन जहाँ तहाँ,
 दृश्यो न देख्यो देव, तुही देख्यो शब्द में ।
 सब की समर नूरि, नारि सब धूरि कहै,
 दुरि सबही ते, नर पूरि रागो नय में ॥ ६ ॥

१—तत्व=तत्त्व । तूची नाक=मुँह का छेद । भुनगा=भोग्य ल खोड़ा ।
 गीह=गोह, गाय । धूब=धूप । पंचभूत=पृथ्वी, जल, तेज,
 और वायु । निवेत=न । निवेतारि=निकारो । गप निगम गप=
 जो जब भला बुरा कहें ते गप । नख लिंग चरार्थ पूरा कला
 चरार्थ का मुद्रा चिह्न । सब प्रकृत की बखत है ।

२—जल=जलेश्वर । धून=धूप, गंध । मूच्छम=मौन्य । निवेत=
 न । निवेतारि=निकार । नर नूरि=नूरि नूरि ।

घोर तर मोहन विधिन, लखी जन है,

निकमी निमंक अनि आतुर भयं ।

गने न कलक मृदु संकनि, मयंक मुनी

पंकज पमान धाई भागि निगि पं ।

भूयननि भूलि पंहे उलटि दुहुल दय,

गुले भुजमूल प्रतिफल गिधि का ।

गूले छंद छटि उपनात दूध मांछि उर,

सुन छटि अक, पति छटि पात्र ।

मयैया

को लग के सुगरात्र भयो,

अमरात्र के। यथन कोत्र सुखे

मेरु मही में मही करि के,

लग देर सुखे का बिनि सुखे

गाय न पुष्य, न नई न मंग,

मरं सु मंग, निगि बिनि सुखे

भूट ही वेर पुगनन पांनि,

लघानन संग नय के भुजलो नि

५८

११—बीरवर्द्धनचंद्र, बहुरूप हर्षि कवच
कवचकवच नामक दूर जाने का शौक । कवचकवच । सुखक
कवचकवच नामक दूर । कवचकवचकवच, कवच

१२—लग के अकलक का है । लखलखलख । लख
लख । लखलखलख है लख दिख ।

खोरि लीं खेलन आयती ये न,
 तो आलिन के मन में पाती क्यों!
 देव सुपालहि देखती ये न,
 तो या विम्बहानल में दाती क्यों!
 बापुगी, महल आय की पासि,
 सुभाज मी है उर में आयी क्यों!
 कोमल कृकः के कयैलिया कूर,
 करजन की निरखै काती क्यों!

६९

मेव मये यिन, भावे न भूषन,
 मूर न भावन की कहु ईशे!
 देव जू देवे करे कहु मों मधु,
 दूख सुखा दाँव मावन ईशे!
 चदन नौ यितयो नहि प्राप्त, गुमी
 यिन माहि नितनि निरिहै
 कूल उग्यो मूल, मिना मम मंगल,
 यिद्योनि योय यिद्यं मतो योही ॥१॥

७०

४६—नंगी=नगी। कसो=कसना। बाँधइयमा दस्य
 कानी=कानी। गुदना। योवन कृति केकरु मा न १११
 निरिहै=निरिहै दूर है।

४७—ईशे=ईश्वर। कहु=कहना। उदी=उदी। निरिहै
 निरिहै=निरिहै।

रैनि सोई दिनु, इंदु दिगेस,

जुगहाई हें घाम घनो बिग्याई ।

फूलनि सेज, सुगंध दुकूलनि,

मूल उठै तनु, मूल ज्यों ताई ॥

याह भोतर नै हूँ जत,

रापो परै देव सु पैंहुन आई ।

हो हो सुलानी कि भूले नवै,

कहै प्रीतम नो नगदागम माई ॥४८॥

१९

ना यह नंद को मंदिर है,

पूरभान को भौतः कहा जकनी हो ?

हो हो यों तुमहीं कहि देवजू,

काहि धौ घुंघरु कै तकनी हो ?

भैरवी मोहि भट्ट कहि कारन,

कौन को धौं छवि नो जकनी हो ?

कौनी भई ? नो कहाँ किन कैसे ह ?

कौनो फौं हो ? उग्य दकनी हो ॥४९॥

४८—जुगहाई=घोरेनी । घाम=घन । दिगेस=दिग । नगदागम=नगद शब्द का ध्वनि ।

विग्याई=जो दशाव विग्याई के मुख से शरमसे बात कहना हो ।

*हो हो यौनी बिग्या घन, कै यौनी मर मर ।

कहा जानि दे कहाँ हैं ममिदि मीतमर नान ॥

४९—जकनी हो=करकई करकी हो । दकनी हो=दकनकी हो यही हो ।

विग्याई को उग्यादागम का ध्वनि उदाहरण है ।

राधिका कान्ह को ध्यान धरै,

तब कान्ह है राधिका के गुन गावै ।

लौं कंसुवा बरसै, बरसाने को,

पानी लिनि, लखि राधे को ध्यावै ॥

राधे है जाय दगैक में देव,

सुप्रेम को पानी तै छाना लगावै ।

साधुन आसु ही में उरमै,

सुमै, उरमै, समुमै, समुममै ॥४६॥

कवित्त

कोज कहौ कुनदा कुनौन अकुरांन कहौ,

कोज कहौ गरिनि, कतनिनि कुनारो ही ।

कैलौ नरलोच, बरलोच बर लोचनि में,

लौन्हि मैं कलोक, लोक-लोकनि ने न्यारी हो ॥

नन जाड, मन जाड, देव गुरु जन जाड,

प्राण किन जाड, टेक दरनि न दारी हो ।

मुन्दावन घारो बनघारी को मुकुट घारी,

लोटे पटवारो बरि मूरति पै घारी हो ॥४७॥

६४

४६—बरसाना=धीमा-धीमा बरसना । उरमै=उर-मन में पड़ना । सुमै=सुखन शरीर । समुमै=समस्त भाग का समानानुसार बर लेना ।

४७—नरलोच=नरलोच । बरलोच=बरलोच । लोन्हि=लोच । लोचनि=लोचनी । कलोक=कलोक । लोक-लोकनि=लोक-लोकनी । न्यारी=न्यारी । घारी=घारी । घारी=घारी । घारी=घारी ।

मर्यादा

राजन राज रामाच में राजन,

राजन है गुण मात्र वरुण

आपु मुनी गल वीर मुना व

गुणाल मुनाव विरो प्रग व

लाल का लाल मला वी दान, -

या दान न गहन वरा न मणि

अलिख राज न राज न ना गुर

कहि गय कहि काट का वरा शीत



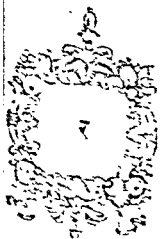
राजन राज रामाच में राजन, राजन है गुण मात्र वरुण
आपु मुनी गल वीर मुना व गुणाल मुनाव विरो प्रग व
लाल का लाल मला वी दान, - या दान न गहन वरा न मणि
अलिख राज न राज न ना गुर कहि गय कहि काट का वरा शीत

श्रीआनन्दघन

—७७८—

छप्पय

दिल्लोश्वर नृप निमित्त एक धुरपद नहि गायो ।
मैं निज प्यारी कहे सभा को रोम रिझायो ।
कृपित होय नृप दिय निकामि वृन्दावन आवे ।
परम सुजान सुजान छाप पद कथिन बनाये ॥
नादिरशाही ब्रज रज मिले, किय न नैक उद्याट मन ।
हरि भक्ति बेलि संचन करी, घन आनन्द आनन्द घन ॥
श्री० गणेशाय नमः



लिक-पुंगव आनन्दघन जी ज्ञानि के
कायस्थ थे । इनका जन्म संवत्
१९४६ के लगभग हुआ और यह
संवत् १९६६ में, नादिरशाही में
मारे गये । इनका असल नाम
घनानन्द था, पर कथिना में यह
अपना नाम आनन्द घन लिखते
थे । यह दिल्लोश्वर बादशाह मुह-
म्मद शाह के मीर मुंशी थे । कहते
हैं, इनका सुजान नाम की एक

बेइया पर बड़ा प्रेम था । यह सदा उसकी छाता पर चला
करते थे । एक दिन दरबार में कुछ चुगुलपौरों ने बादशाह
से यह कह दिया कि मीरमुंशी साहब गाते बहुत अच्छा
हैं । बादशाह ने उन्हें गाने के लिये हुक्म दिया । उन्होंने शात

महात्म्य कह दिया। त्याग न करा कि यह दृष्टि है
 न मायेगे अगर इनसे सुज्ञान बने तो यह
 प्रसादी किया गया। यत्नातन्त्र जी. बाइगाह को यह
 श्री सुज्ञान की लक्ष्मी, मुक्त करने माने लगे। वेगो न
 की कि मारा परवार इन पर लक्ष्मी दा गया। बाइगाह
 ला लुग दूध, यह इनकी पीठे दिव्यान् की वेगो न
 गार मारे। नागात्र हा इन्हें नगर में बाहर निद्वाने।
 जलन समय इहान सुज्ञान में अगन मान लवन
 इनसे स्फुरत कह दिया। सुज्ञान के विरह में
 मरी मायेगी श्री सुज्ञानन लल आग इन्हें सुज्ञान
 मिलाय श्री परमेश्वर की धार अनुमान इन्हें
 दिव्य इन्हें सुज्ञान नाम इतना त्याग वा कि इन
 लन न जाइ सक। यह प्रसादी के लवन बाइगाह
 सुज्ञान लल का प्रसादी करने लगे। ललान में
 ललान के ललान दा गया। ललान लल की लल
 लल ललान में वेगो सुज्ञान लल ललान ?

सुज्ञान ललान ललान मोहन ललान लल

सुज्ञान ललान ललान ललान ललान

ललान ललान ललान ललान ललान ललान

ललान ललान ललान ललान ललान ललान

ललान ललान ललान ललान ललान ललान

ललान ललान ललान ललान ललान ललान

ललान ललान ललान ललान ललान ललान

ललान ललान ललान ललान ललान ललान

ललान ललान ललान ललान ललान ललान

ललान ललान ललान ललान ललान ललान

जिन आँखिन रूप चिन्हारि भई,
 तिनको नित ही दहि जागनि है ।
 हित पीर सों पूरित जो हियरा,
 फिरि ताहि कहाँ कटु लागनि है ॥
 धनआनंद प्यारे मुजान मुनौ,
 जियराहि सदा दुख जागनि है ।
 मुख में मुखचंद बिना निरखे,
 नख तैं सिख सों बिख जागनि है ॥ ४ ॥

८५

जोब कि बात जनाइये क्यों करि,
 जान कहाय अजाननि आगौ ।
 तोरन मारि कै पीर न पावत,
 एक सो मानन रोइयौ रागौ ॥
 ऐसी यनी धनआनंद जानि जु,
 आनन सुखत सो कित त्यागौ ।
 प्रान भरैने भरैने विद्या पै,
 अमोही सों काह को मोह न लागौ ॥ ५ ॥

८६

किमुक पुंज से फूलि रहे,
 सु लगौ उर दौ जु बियांग निहारे ।

४—जिन.....भई=जिन आँखों में रूप से चिह्न बना कर ली । रहि
 ति है=जजनों हुई जागती हैं । लागनि है=लगना है, प्रेम करना है ।
 ५—जिन ।

४—आगौ=आगे । रागौ=राग । अमोही=निमोही, जिसे दूसरे के प्रेम
 में ध्यान न हो ।

काह क्यों मनआनंद प्यारे,
 इती एठ यौन पै आपु लियो जू ।
 दास ! सुजान सुनेही कहाइ क्यों,
 मोह अनार के द्रोह कियो जू ॥ ८ ॥

१९

पर काजहि देह यो धारे फिरी,
 परजन्य उपाराय है दरमौ ।
 निधि नोर सुधा के समान करी,
 नवही दिधि नजनना सरनौ ॥
 मनआनंद ओघन दासक ही,
 बसु मेरिये पीर हिये परनौ ।
 बस्यो या विस्तारो सुजान के योगिन,
 मो दसुमानि को ले दरमौ ॥ ९ ॥

२०

धुनि धुनि ही निव बाननि में,
 जल को उपराजिघोरै सी बरै ।
 नव मोहन मोहन ओहन के,
 जनिमनान सुनाजिघोरै सी बरै ॥
 मनआनंद तीखिये लाननि में,
 मर से दुर काजिघोरै सी बरै ॥

१—नाना (१) मेरु; (२) धुनि के सिधे । उपराजिघोरै : बराने
 का दुर । मेरिघोरै : बराने । बराने : बराने ।

२—जनिमनान : जनिमनान । जनिमनान : जनिमनान ।
 जनिमनान : जनिमनान ।

राति द्यौत कटक सजेही रहै दहै दुख,

कहा कहौ गति या विप्रेत यज्ञमारे की ।

तियो बेरि औचक झकेली कै विचारो जोष,

कहू न यत्ताति यौ उपाय बलहारे को ॥

जान प्यारे लागी न गुहार तो जुहार करि,

जूम कै निरुनि देख गहै पन धारे की ।

रेत-रेत धूरि चूर चूर है मिलैगो नय,

चलैगी कहानी धनआनंद निहारे को ॥ १३ ॥

८७

इंदोषर इतनि मिलाइ सौनहुही गुहो,

सुहो नाथ हात रूप गुन न परै गनै ।

पोगी ये पिछौरी छोर सोम पै उत्ति राखै,

कैसर विविध अंग रंग नाथ सो सनै ॥

मुक्तो में गौरी धुनि देरी धनआनंद है,

नरे द्वार दहकनि जपम घने उनै ।

हा हा हे मुजान ! आजु दीवै प्रान दात,

नेकु आवन गुपान देखि लोभ बन तें बनै ॥ १४ ॥

८८

११—इटक=मैत्र । औचक=अचानक । यत्ताति=जाता । यज्ञमारे=निर्धारे की । गुहार=गुहार । पनधारे की=निधारे करनेवाले की । रेत-रेत=रेत-रेत । चूर चूर=चूर चूर, टुकड़े २ टुकड़े ।

१२—इंदोषर=इन्द्र । सौनहुही=सुनहुही । मुहो=मुह । पिछौरी=पिछोरी । सोम=सोम । उत्ति=उत्ति । कैसर=कैसर । अंग=अंग । रंग=रंग । नाथ=नाथ । सनै=सनै । हा हा हे मुजान ! आजु दीवै प्रान दात, नेकु आवन गुपान देखि लोभ बन तें बनै ॥ १४ ॥

गलित गलाय अन्तः ना नित ॥
 उत गलाय ॥ २ ॥ १ ॥ गलाय ॥
 उत गलाय ॥ ३ ॥ १ ॥ गलाय ॥
 उत गलाय ॥ ४ ॥ १ ॥ गलाय ॥
 उत गलाय ॥ ५ ॥ १ ॥ गलाय ॥
 उत गलाय ॥ ६ ॥ १ ॥ गलाय ॥
 उत गलाय ॥ ७ ॥ १ ॥ गलाय ॥
 उत गलाय ॥ ८ ॥ १ ॥ गलाय ॥
 उत गलाय ॥ ९ ॥ १ ॥ गलाय ॥
 उत गलाय ॥ १० ॥ १ ॥ गलाय ॥

५

अग्नि का ना सु र निहार उमुना क रान,
 सा सुत यवान न वनत क्षिपों
 गीर म्याम रूप आदर्य दे दस जारों,
 गुपुत प्रगट भावना विमेलिओं
 जुग कुल मरम मलाका दीडि परत ही
 अजन सिंगार रूप अरंजिओं
 आनंद के घन माधुरी की मूर लागि रहे,
 नरल नरंगिनी की गति लेलिओं दे ॥४॥

६

राधानयजीवन विलास को वसंत अहो,
 अग अंग रंगन विकास ही को भीरही

१५—द्वाराकाम—द्वारा के आभार । विना कृपे विचार
 न्याय प्रगट ही लाये जावे है । अतएव—अंग । अर्थात्—अंग ।
 अतएव—अंग ।

१६—नरल—नरल, उचीर ।

१७—अरंजि—अरंजि, अरंजि ।

मारौ बनमाली घनरानन्द सुजान लेवै,
 जाको देखि काम के हिये में नाहीं धोर है ॥
 मुरनि समाज साज कोकिल कुहक राजै,
 सासन अनेक सुर सौरभ समीर है ।
 स्वेद नकरंद और नवीरथ नधुप पुंज,
 मंजु वृन्दावन देस जमुना के तीर है ॥१७॥

सवैया

तब नौ तुन दूहि ते मुमुकाय,
 रचाय के और की दीति हैसे ।
 दासाय मनोज की मूरनि ऐनी,
 रचाय के नैननि में सरसे ॥
 अथनौ उर मारि दासाय के मारत,
 पल्लविमासी वहाँ यों दने ।
 बहु नेह निषादन जानत है,
 नै मनेह की धान में बादे दैसे ॥१८॥

१५

आहुति तें नन हेरि हैसे,
 तिरहे करि नैननि नेह के चाद में ।

१७—मोत=मल। मंदै=मन्द करवा है, राम मूक है। स्वेद=न-
 नर्मल। रसी पतल। मंजु=मुंद।

आधी सुंदर और मरम करत है !

१८—रचाय के.....हैसे=दुनरी की मूहा बर बर मुमुकाय है।
 नन=जा कर, कर कर। मनेह की धान=नेह की धान धान।

कृपाभक्ति परिपूरन जिनके अंग है ।
 दगनि परम अनुराग जगमगै रंग है ॥
 बन संतन के संवन दसधा पाइय ।
 प्रज नागर नैदलात सु निसिदिन गाइये ॥ १० ॥

ॐ

प्रज बुद्धावन ध्याम पिपारी भूमि है ।
 तहँ फल पूलनि भार रहँ दम भूमि है ॥
 भुव दंपनि पद अंकनि लोट लुटाइये ।
 प्रज नागर नैदलात सु निसिदिन गाइये ॥ ११ ॥

ॐ

नंदोस्वर धरसानो गोकुल गांवरो ।
 एसीषट् संकेत मन तहँ सांवर ॥ १२ ॥
 गोधर्मन राधाकुंड सु अनुना जाइये ।
 प्रज नागर नैदलात सु निसिदिन गाइये ॥ १३ ॥

ॐ

—कान्तै=भक्त का है । दगपा=भक्ति के दग परदार, दगः
 से दगर को माने ली है—अर्थात्,

ध्याम गोपिन विजयो, स्वरग पाद मंगलम् ।

अपम पद दाम्, रागमनाम विवेकम् ॥

‘दग-भक्ति मूल’ से दगपै और स्वरगपै भक्ति का उत्प्रेरक कारण
 ली है पद-वैराग्य और पदविरहादिति है ।

११—दंडन=दण्ड का पद पतिन स्थान । दण्डना=दण्ड
 का नाच । दो वेला के मीन है । तंडो=दण्डनि
 दण्ड । दण्ड दण्डना दण्ड, दो मीन के दण्ड
 से भी दण्ड को कह सकते हैं ।

राधा प्रह निधिन जस रसनि रसाये ।

प्रहनागर नंदनाल सु निमिदिन गारये ॥ १६ ॥

१७

प्रह रस लीला सुनत न बयतुं कदायनो ।

प्रह भवन सन संगति आन एगापनो ॥

नागरिया प्रहयाम कृपा पास पारये ।

प्रहनागर नंदनाल सु निमिदिन गारये ॥ १७ ॥

१८

रस प्रह सुगो प्रह के जीय ।

मान तन मन नैन कयंतु, राधिका वो पोंय ॥

वहाँ आनंद मुनि में, रह वहाँ मुदु मुसमान ।

वहाँ कलित निबंज सीमा, सुगलिका बरमान ॥

वहाँ है वा कयतुं कलना, जोन जलमन जोन ।

वहाँ नृपुत वीन धुनि मिलि रास मंदन होन ॥

वहाँ रीति बरनव वी, सुवि वही जमुना वोंय ।

वहाँ रह विमान पातुन, बचन वेंगर वोंय ॥

वहाँ लहर विनिन में तिय रोंहिबो निस दान ।

वहाँ मोहन मध मोहन, विह्वल रह कयमान ॥

१६—नंदनाल नंदनाल, नंदनाल, नंदनाल । नंदनाल नंदनाल, नंदनाल

१७—नंदनाल नंदनाल, नंदनाल, नंदनाल । नंदनाल नंदनाल, नंदनाल

१८—नंदनाल नंदनाल, नंदनाल, नंदनाल । नंदनाल नंदनाल, नंदनाल

नंदनाल नंदनाल, नंदनाल, नंदनाल । नंदनाल नंदनाल, नंदनाल

१९—नंदनाल नंदनाल, नंदनाल, नंदनाल । नंदनाल नंदनाल, नंदनाल

नंदनाल नंदनाल, नंदनाल, नंदनाल । नंदनाल नंदनाल, नंदनाल

नंदनाल नंदनाल, नंदनाल, नंदनाल । नंदनाल नंदनाल, नंदनाल

11

12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100
101
102
103
104
105
106
107
108
109
110
111
112
113
114
115
116
117
118
119
120
121
122
123
124
125
126
127
128
129
130
131
132
133
134
135
136
137
138
139
140
141
142
143
144
145
146
147
148
149
150
151
152
153
154
155
156
157
158
159
160
161
162
163
164
165
166
167
168
169
170
171
172
173
174
175
176
177
178
179
180
181
182
183
184
185
186
187
188
189
190
191
192
193
194
195
196
197
198
199
200
201
202
203
204
205
206
207
208
209
210
211
212
213
214
215
216
217
218
219
220
221
222
223
224
225
226
227
228
229
230
231
232
233
234
235
236
237
238
239
240
241
242
243
244
245
246
247
248
249
250
251
252
253
254
255
256
257
258
259
260
261
262
263
264
265
266
267
268
269
270
271
272
273
274
275
276
277
278
279
280
281
282
283
284
285
286
287
288
289
290
291
292
293
294
295
296
297
298
299
300
301
302
303
304
305
306
307
308
309
310
311
312
313
314
315
316
317
318
319
320
321
322
323
324
325
326
327
328
329
330
331
332
333
334
335
336
337
338
339
340
341
342
343
344
345
346
347
348
349
350
351
352
353
354
355
356
357
358
359
360
361
362
363
364
365
366
367
368
369
370
371
372
373
374
375
376
377
378
379
380
381
382
383
384
385
386
387
388
389
390
391
392
393
394
395
396
397
398
399
400
401
402
403
404
405
406
407
408
409
410
411
412
413
414
415
416
417
418
419
420
421
422
423
424
425
426
427
428
429
430
431
432
433
434
435
436
437
438
439
440
441
442
443
444
445
446
447
448
449
450
451
452
453
454
455
456
457
458
459
460
461
462
463
464
465
466
467
468
469
470
471
472
473
474
475
476
477
478
479
480
481
482
483
484
485
486
487
488
489
490
491
492
493
494
495
496
497
498
499
500
501
502
503
504
505
506
507
508
509
510
511
512
513
514
515
516
517
518
519
520
521
522
523
524
525
526
527
528
529
530
531
532
533
534
535
536
537
538
539
540
541
542
543
544
545
546
547
548
549
550
551
552
553
554
555
556
557
558
559
560
561
562
563
564
565
566
567
568
569
570
571
572
573
574
575
576
577
578
579
580
581
582
583
584
585
586
587
588
589
590
591
592
593
594
595
596
597
598
599
600
601
602
603
604
605
606
607
608
609
610
611
612
613
614
615
616
617
618
619
620
621
622
623
624
625
626
627
628
629
630
631
632
633
634
635
636
637
638
639
640
641
642
643
644
645
646
647
648
649
650
651
652
653
654
655
656
657
658
659
660
661
662
663
664
665
666
667
668
669
670
671
672
673
674
675
676
677
678
679
680
681
682
683
684
685
686
687
688
689
690
691
692
693
694
695
696
697
698
699
700
701
702
703
704
705
706
707
708
709
710
711
712
713
714
715
716
717
718
719
720
721
722
723
724
725
726
727
728
729
730
731
732
733
734
735
736
737
738
739
740
741
742
743
744
745
746
747
748
749
750
751
752
753
754
755
756
757
758
759
760
761
762
763
764
765
766
767
768
769
770
771
772
773
774
775
776
777
778
779
780
781
782
783
784
785
786
787
788
789
790
791
792
793
794
795
796
797
798
799
800
801
802
803
804
805
806
807
808
809
810
811
812
813
814
815
816
817
818
819
820
821
822
823
824
825
826
827
828
829
830
831
832
833
834
835
836
837
838
839
840
841
842
843
844
845
846
847
848
849
850
851
852
853
854
855
856
857
858
859
860
861
862
863
864
865
866
867
868
869
870
871
872
873
874
875
876
877
878
879
880
881
882
883
884
885
886
887
888
889
890
891
892
893
894
895
896
897
898
899
900
901
902
903
904
905
906
907
908
909
910
911
912
913
914
915
916
917
918
919
920
921
922
923
924
925
926
927
928
929
930
931
932
933
934
935
936
937
938
939
940
941
942
943
944
945
946
947
948
949
950
951
952
953
954
955
956
957
958
959
960
961
962
963
964
965
966
967
968
969
970
971
972
973
974
975
976
977
978
979
980
981
982
983
984
985
986
987
988
989
990
991
992
993
994
995
996
997
998
999
1000

दरपन दोरम, देकात नाई ।

शास्त्रान्नं विधिं प्रकटं श्यामं वाचं, दध्नि स्येत हि ज्ञातं ।
 नोमं रूपं वा मुखं वा, पलटे, नहि क्षयानता मृती ।
 निदने ज्ञायत मृग्यु न मृगत, क्षीणे हि पृथु पृथु ।
 दृष्ट्वा भक्तिं मुखं सितं न सज्जं, सुखं देहं मुखं वासी ।
 नागरिका स्वोर्ध्वं नरं निहर्षं, ज्ञायत नरकं निदासी । २८५

2

एति इ सद्गुणत इत्यत एवेति ।

परमेश उगार दास ब्राह्मण श्री, गोकुल श्री निश्चये ॥
 महिमें जल पावन नाम विद्य, दासो भक्ति करे ॥
 नैन सुरंग छंदे पाषाण विद्य, माता पिता पित्रे ॥
 दास ने कामदेव हो किर, प्रभु हृदय रहने ॥
 दास नरदास भक्ति करे, हम हय हयन करे ॥ १०६ ॥

10

ਪ੍ਰਤੀ ਕੋਲਿਯ ਬਾਂ ਮੈਂ ਗੁਣ ਪਾਏਂ ।

महर्षिः शान्तिं विनियमनं संयत्तं, संयत्तं च नृणां भवति ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

11-17-1944

घज के लोग सय ठग महा ।

आप ठग, ठग के उपासक, अधिक कहिये कहा ॥
 कनक घोड़ सो धवन रचना, दैत तनिक चखाय ।
 बाबरो है रहत सो फिरि, घाम धन बिसराय ॥
 छाड़ि कै रज लुटत रज में, दीन दीसत अंग ।
 और जग मुख रंग उड़िकै, चढ़त कारो रंग ॥
 भूमि ठग द्रुम देस ठग, इत ठगे स्याम सुजान ।
 राज सयानप सोइय इनके, और दीन समान ॥
 इहाँ आयत हां परत दृढ़ प्रेम को गर पास ।
 भूति हां कोड आइयो मति, कहन नागरिदास ॥२६॥

८५

भक्ति धिन है सय लोग निगट्ट ।

आपस में लड़िये भिड़िये को, जैसे जंगो दट्ट ॥
 निन उनको मति भ्रमत रहत है, जैसे लोलुप लट्ट ।
 नागरिया जग में ये उद्धरत, जिहि विधि नट के दट्ट ॥२७॥

८६

२६—ठग के उपासक=भक्तों के मन को झगनेवाले धोखेवाले के उपासक । कनक घोड़ा=मोने के ऐसे घोड़ा । छाड़ि कै रज.....रज में=राजगीर छोड़ कर रज को घूमने को जाने है । कारो रंग=धोखेवाले का रंग । घाम=कंसा ।

मेन-मन्य का क्या ही सुन्दर घर है !

२७—विगट्ट=मुकदमा होने । जंगो दट्ट=जड़ावे पोड़े । लुपट=लुपट होने हैं । दट्ट=दण्ड, जोड़े का जोड़ा जिसे बट मोल इकट्ठा करने हैं ।

जो मुख लेत सदा ब्रजवासी ।

। मुख सपनेह नहि पावत, जे जन हैं वैकुण्ठ-निवासी ॥
घर घर हैं रह्यो जिलौना, जत कहत जाकी अविनासी ।
गरिदास बिन्धु तैं भ्यारी, लगि गई हाथ लह सुन्दरासी ॥३३॥

८७

ब्रजवासी नैं हरि की सोभा ।

नि अधर हृदि भये त्रिभंगी, सो वा ब्रज की गोभा ॥
ज यन धानु विविध मनोहर, गुंज पुंज अति सोहैं ।
ज मोरनि को पंज सीत पर, ब्रज जुधती मन मोहैं ॥
ज रज नीकी लगति अलक पै, ब्रज हुन फल उर माल ।
ज गडयन के पीछे आछे, आवत मट गज चाल ॥
शोच साल ब्रजचंद सुहाये, चाहें और ब्रज गोप ।
गगरिया परमेसुरह की, ब्रज तैं यादी आप ॥३४॥

८८

ब्रज सम और कौड नहि धान ।

वा ब्रज नैं परमेसुरह के, सुधरे सुन्दर नान ॥
हृष्य नाँव यह सुन्यो गर्ग तैं, कान्ह कान्ह कहि सोलैं ।
बाल केति रस मगन भये लव, जानैंद निन्धु कलोलैं ॥
अनुदानंदन, दामोदर, नयनीन-प्रिय, दधि चोर ।
चोर चोर, चित चोर, चिकनियाँ, चानुर, नवल बिसोर ॥

३३—जल=जगद :

३४—गुंज=गुंजा, पुंजवाँ । नद नज=नल हृषी । गोप=गोप ; शोका ।

३५—गर्ग=कदर उलियाँ के बुकुरु । बनोयें=बनोयें उलिये हैं ।

सोत निर=निरको दक्षर प्यारा है । चिकनियाँ=चैय । दगिरानो=

मनोरथ मंजरी

दोहा

नो नैनन की और काँ, कय से है यह संध ।
नोन ताप सानलकरन, सघन तरन की धूँध ॥ ३६ ॥

८५
कय वृन्दादन धरनि में, चरन परेंगे जाय ।
मोदि धूरि धरि सीस पर, कलु मुखह में पाय ॥ ३७ ॥

८६
पिक केको कोकिल कुलुक, पंदर पंद अपार ।
ऐसे नर ननि निरुट, कय मिलिहो बाँइ पत्तार ॥ ३८ ॥

८७
कय रसीली कुञ्ज में, हौ करिहो परदेस ।
ननि नदि लना जु सहलहो, बित हौगो आबेस ॥ ३९ ॥

८८
दिग परिकर के सुखर जन, धिरहो प्रेम-निशेत ।
देवि करि सपटापहो, उनते दिय करि हेन ॥ ४० ॥

८९

० गलागलाही की सवेनपन रचना गी है । इतथा रचरा-धर
॥ ४०० ॥

३६—यह सै कय सवेनपन कर दह मेलो । नरन की पूँप=वेदो
बेलो दाल ।

३७—कलु मुखह में पाय=पेड़ी ली हुई में जो दार कर ।

३८—नरन=नर । सहलहो=सो भरो । आबेस=वेदरद ।

३९—ननि निरुट=नर । देन=देन ।

1

2

तुं देवी गुह्यत दिग्विजिति घोडि चंद्र प्रकाशितो ।
 १ श्रीकृतदेवी स्तुति निबुद्ध विद्यामिनी ० २ ।

११

अथ अथ श्रीकृतदेवी स्तुति कान्तं च रत्न भरी ।
 दृष्ट्वापति दिन रत्न वादति धन उर धरा ॥
 नरं नरं मणि ज्ञानि विदितं विधि गोपितो ।
 दिन दिन साधु साधु नमः नमः देविनी ॥
 दिनी दृष्टु नोति भविष्य साधुनो जन नमः दिने ।
 न साधु साधु साधु साधु साधु साधु साधु साधु ॥
 १ शेष साधु साधु साधु साधु साधु साधु साधु साधु ॥
 १ अथ श्रीकृतदेवी स्तुति कान्तं च रत्न भरी ॥ २ ॥

१२

अथ अथ श्रीकृतदेवी स्तुति के साधुनो नरे
 नमः नमः अथ अथ नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥

अथ अथ श्रीकृतदेवी स्तुति के साधुनो नरे
 नमः नमः अथ अथ नमः नमः नमः नमः नमः ॥

अथ अथ श्रीकृतदेवी स्तुति के साधुनो नरे
 नमः नमः अथ अथ नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥

परम पावन पुलिन सरस सुच्छ स्थलनि,
मदन मद दवनि ससि जोन्ह छाई ॥
बनो अति चान जरतारि सारी सुभग,
किरिन चौकोर मुख लहलहाई ।
भाइ भाइन उरप लेन सुन्दर सुलप,
यदन रनि रंग अंग अंग निकाई ॥
नांत पट पीत फहरात अंगनि मिथुन,
नडित घन नील उद्योतिनाई ।
लेन ओघर सुघर तालगति तान की,
जगमगत पाँक मुग्य अरुनिमाई ॥
ताल मिरदंग लिय संग सजनी खरीं,
मुरालि मोहन मधुर सुर यजाई ।
देहि पग थाप आलाप सुर गंग भरीं,
भूपननि अंग छनकनि मिली ॥
अलक अंगुष्ठ नगजनि गहे पलटि पग,
जात मुसक्यात सुंदर सुहाई ।
परो रस भीर रंग धीर नाहिन धरौं,
निगवि अलवेलिअलि छवि छटाई ॥२२॥

२२—मुख=मुख । दवनि=रमन करनेवाली । मिथुन=मंगल ।
निकाई=निकारा । अरुनिमाई=जाली । मिरदंग=मृदंग, पगपद
की है । पाव=पाव । रसभीर=आनन्द का मन्द; कन्धारिक आ
गम-आनन्दों इनके धीरे धीरे बड़े उतारोतर पर है । मधुर-
मधुर, बनी दिये जा गये ।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी किया गया।

श्रीमान् सुभाषण दत्त साहू ।
 मेरा रहस्य ग्रहण कर मिमिदिग, यह छिप मेरा मित्रानो ।
 मेरा मेरा मित्रानो साहू दत्त, दत्तदत्त दत्त दत्त दत्त ।
 मेरा मेरा मित्रानो साहू दत्त, दत्त दत्त दत्त दत्त दत्त ।

[illegible]

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

1. The first part of the document is a list of names and addresses, which appears to be a directory or a list of contacts. The names are written in a cursive script, and the addresses are listed below them.

रंग सांवरों गुन भरी, मनिहारों-कुल-शेष ।
 मुदिन होत सब देखि कै, यहि पुर गांभी गांभी ॥
 काह पै न उगाव है, तेरी बुद्धि बिसात ।
 नाम अधिक करि जायगो, येचि बडे घर मात ॥
 मेरे मातहि लेय सां, ओ नैह मांगों देय ।
 ऐसो है कोट भाभिनी, (ताको) नाम प्रगट किन लेय ॥
 देखत हाती शोच को, कहा अधिक इतराय ।
 पौरि भूष दुरमानु को, लाग्न (को) यस्तु बिसाय ॥
 पुर-यजार देखे नहां, है गरवीतो नारि ।
 व्यापारिन रूपही यनी, यात न कहत बिचारि ॥
 नोहि लै चलिसौ नुप घर, यनी जिय होत उदास ।
 नेहि लाडिनी राधिका, (जा) लौडा तेरे पास ॥
 यह सुनि कै छोडो गही, सुगित नई जंग जंग ।
 भनी जु तेरी मानिही, लै चनु अपने संग ॥
 नै गां पौरी भातु का, यात कही मनुनाथ ।
 गुन प्रगट कर सांवरों, (नोहि) लै देनि पुताय ॥
 हो मनिहारो दूर को, लाई राजद्वार ।
 देखी चुरी चुरता, कोड लेड रिनयार ॥
 सुनि लाई विद्या नमुर, लूचनि रागर मांस ।
 मात पुनी परिसरें, यनि रह परि नई मांस ॥
 राजन राज लौ लारजे, जिय जिय पायो पैत ।
 लो से सुग लो रह, गरजित रति रति पैत ॥

१। विष्णु-मन्त्र । हर देव जग । शेष-वर्णन । शक्ति-पौर ।
 २। विष्णु-मन्त्र । विष्णु-मन्त्र । विष्णु-मन्त्र । विष्णु-मन्त्र ।
 ३। विष्णु-मन्त्र । विष्णु-मन्त्र । विष्णु-मन्त्र । विष्णु-मन्त्र ।

तन भूषां तौ नही, नन न यामना और ।
 ति कतिन आदर जहाँ, हम दिममें विधि और ॥
 तन देहो अधिका मोहि, गुनहि यहाँ परब्रह्म ॥
 तन चाहत बन मोहो, दासनाओ निबट निषाम ॥
 ति निबट मोहो यमों, जोयो यमों यमपंड ॥
 तनो तन तप मे यमों, मात और नयपंड ॥
 नहु गुनो पर मोह निर, न चाहत यमों यम ॥ —
 तन यम नहि जानहो, विधि यमों नु कतिन मात ॥
 ति यमोति न दखन को, बरी रीत गुन पुनि रात ॥
 ति रीत यम आदर, गुनो जोयिन मे वर रात ॥
 तन मे सोधन परति, गुन निन गुन बरी दखान ॥
 तिनि को यम नु है, यति गुनान पर निदान ॥
 तनो गुन कतिन ही, जोयिन यमों विद्या ॥
 तन यमों यम विद्या, यमो यमों विद्या ॥
 तनो यम विधि बरी, जो यमों यम विद्या सोद ॥
 तनो यम यमोतिनी, यम यम यमों न यमों ॥
 तनो न यमों यमोतिनी, यम यम गुन गुनान ॥
 तनो विद्या यमोतिनी, यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी ॥
 ति यमोतिनी मे यमों, विद्या यमों यमोतिनी ॥
 तन दिन यम न यमोतिनी, यमोतिनी यमों यमों ॥

॥ यम ॥ यम ॥ यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी ॥ यमोतिनी यमोतिनी ॥
 यम यम यम ॥ यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी ॥ यम यम यम ॥
 यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी ॥
 यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी यमोतिनी ॥

छप्पय

सब कानन का काल लोकमानन को पातै :
 आहुत लदा न्यून नित्यन्ता यदि बिसालै :
 उपजावै नय बिसव रमै किन नाके नाहीं :
 देखनभूनी करै परै भूतन में नाहीं :
 पदपेदवद सनय हरि, लां भगवत असरन सरन ।
 तनभन जन को वेदना, हरहु नांद नगल करन ॥ १ ॥

८७

कंडन ते उठि प्रात गात अनुना में धौवै :
 निधिदन काने दंडौन बिहारां को मुख जोवै :
 करै भावना दैठि न्यच्य धन रहित उपाधा :
 घर घर लै प्रसाद लगे जय भोजन साधा :
 लंग करै भगवत रतिक, कर फरवा गूदरि गरे :
 पुन्दावन बिहरत फिरै, जुगत नय नैतनि भरे ॥ २ ॥

कुंडलिया

दुखिया छिन्न विद्या दिना, राजा दल दिन सोय :
 रुद दिना गनिका दुखी, जोगी जोग न होय :
 जोगी जोग न होय, साधु हरि भजन न जोगै :
 मांड कलायंत भाट, सभा नद लजा मानै ॥

१—कानन भूतल-कानन-कानन, कानन, कानन । वेदना-वेदना ।

२—निधि-निधि । कंडन का नाम कान । भगवती भगवती । कानन
 कहते हैं । विद्या-विद्या । विद्या-विद्या । विद्या-विद्या । विद्या-विद्या ।
 विद्या-विद्या । विद्या-विद्या । विद्या-विद्या । विद्या-विद्या ।
 विद्या-विद्या । विद्या-विद्या । विद्या-विद्या । विद्या-विद्या ।

नगपतरमिक, अनग्य विना, नरि कोइ सुखा
अमन धारन

५३

भावि धीराधारमन, भूँटी सब संकर
बाजीगर का नेलता, मिटन न लगी बर
मिटन न लगी बार नून को संगति है
मिदरी माली नून, धुपों की योग है
मगधन ने नर अथम नाव सम गर बा बर
भूँटे गढ़े सुनार माम क दामे मीन

५४

कपटी मग न कीजिये जवनि विभु सा हो
बायन है बलि का लुका, पर जाने सब बाँध
यह जाने सब बाँध बहुरि वपु धारि बाँधो
असुरन सुग विद्या, सुनन न सुधा कहि हो
सुन्दा याम घटाइ सुगु शानवर बाँधो
मगधन बलिना विम नया नानवर बाँधो

५५

मिथ्य विहारी की कथा, प्रथम नून बाँधो
नानु भ्रम माया मी, अन्त नवन नानो

१—नानु भ्रम माया मी, अन्त नवन नानो

२—नानु भ्रम माया मी, अन्त नवन नानो

अमन धारन

३—नानु भ्रम माया मी, अन्त नवन नानो

४—नानु भ्रम माया मी, अन्त नवन नानो

जाको सकल पसार, महत्तनु उपस्थो जाते ।
 हांकार उतपत्ति भई, खुनि कहै जु नाते ॥
 हांकार प्रेरण भयो, सिय विधि अनुसारी ।
 भगवत सय को तव्य-योज धीनित्य विहारो ॥ ६ ॥

५९

जो जानै मानै सोई, मानै क्यों बिन जान ।
 पौर प्रभुता को कहा, जानै धाम अजान ॥
 जानै धाम अजान, नपुंसक रति मुख माहीं ।
 ऐसेहि नीरस पुरुष, कहा समुझै रस माहीं ॥
 भगवत नित्य विहार, रसिक अनुभव उर धानै ।
 गूढ़ धाम नम जानि जानि, बरही जो जानै ॥ ७ ॥

६०

जागारउ सतिता सबी, रमिक हमारी हृष ।
 नित्य किमोर उपासना, जुगल मंत्र को आप ॥
 जुगल मंत्र को आप, वेद रत्तिवन को पानी ।
 धीवृन्दावन धाम, इष्ट न्यामा महारानी ॥
 देन देवता मिले बिना सिधि होइ न कारज ।
 भगवत सय मुख दानि, प्रगट भे रतिराचारज ॥ ८ ॥

१—वपन पुरुष=लिंगकारी नारायण । मागधु=महाधु । वैद्य=वैद्य,
 हो मन । समुसारी=नित्य ।

२—वेद=विद्वान् है ।

३—धोम=धाम को । रसिक=रस । धोम को मन निग कहें हैं—

“धाम को रति राखन जानै, को जिन मर्त होइ ॥”

४—रमिक मारी=रमिक भे रस मारी रतिराजारी भे मरुत
 रतिराजारी=रमिक भे मरुत मारी रतिराजारी ।

भगवत यह रस रोति, प्रगट परिभूरन ससमा ।
प्रेम पियूर न खवै, भाव-रूपो विनु चसमा ॥ ११ ॥

१९

देखे हाट बजार सय, जहँ नहँ पोति बिकाय ।
लिये जवाहिर जौहरी विनु, गाहक फिरि जाय ॥
विनु गाहक फिरि जाय, बलाहक अपर घरमें ।
छुपन भोग बनाय, कहा घनचर के परसैं ॥
पेसेदि कर्मठ लोग, धर्म रति घरन बिसंखे ।
भगवतरसिक अनन्य, स्वाद भेरी कहै देखे ॥ १२ ॥

२०

अनुभव विनु जग आंधरो, धस्तु न दीर्घ कोइ ।
मुकुर दिगाये होत कह, ज्ञानन जात न जोइ ॥
ज्ञानन जात न जोइ, अग्य यानी को कहियो ।
नुते न होइ प्रताति, बिना देखे उर दहियो ॥
बहु विधि मरदन करै, नहीं चेतन्य होइ शय ।
भगवत रस को घान, कहा जानै विनु अनुभव ॥ १३ ॥

२१

काह दर न लर कोइ, बिघमान दुखाय ।
ज्यो मनियागे उरग मनि, सँ आयै सँ जाय ॥
सँ आयै सँ जाय, यस्तु रमिकन को पेसे ।
निसि दिन सेवत रहै, रुपन निज संपति जैसे ॥

१५—पोति=बांध के छोटे छोटे दाने । बकाइक=बेघ । अस्त=गः
जहाँ अज्ञान बड़ी पैश होता । बकबर=बहुतों का बरस । बरस=
गिर के बरसकहते । स्वाद-भेरी=रस-महसूस के जग ।

११—मुकुर=दर्पण । गह=मुद्रा ।

भगवतरसिक अनन्य, भजौ तुन स्याम सनेही ।
नंग दुहुन को नजौ, वृत्ति बिनु बिरनर नेही ॥ २२ ॥

८९

जाको जैसो लखि परी, तैसी गावै सोय ।
दोधी भगवतमिलन की, निहचय एक न होय ॥
निहचय एक न होय, कहै सब पृथक हमारी ।
न्युनि स्मृति भागीन, माखि गोनादिक भारी ॥
भूपति सयनि समान तनै निजु परजा नाको ।
जाको जैसो भाव सुगोपै तैसो नाको ॥ २३ ॥

९०

हाथी देख्यो साँधरन, निज मन के अनुमान ।
कान पूँछ पग पोंछि गहि, कखो सदन परमान ॥
कखो सदन परमान, बिटौरा रूप पैदनर ।
भगरै सन्न महन्त, निगम आगम पुरान घर ॥
भगवतरसिक अनन्य दृष्टि कर कोजै साथी ।
जिन देख्यो गुन रूप अंग द्विय में हरि हाथी ॥ २४ ॥

९१

सुनि भगवत नहिँ कल परै, कैसे धरिये धोर ।
बढ़ी बुढ़ाती बैस बह, सिस्तोदर की पोर ॥

निराकारि पुगलोत्त २२ नर्क । पावै=पारने हैं । हनि=नियम महान् ।
सनर=सिन्न (विरक्त) घर ।

२३—दोषी=मान । भागीन=भीमद्भागवत पुरान । परजा=प्राजा ।

२४—परमान=प्राजा । बिटौरा=दोर । दृष्टि=दृश्य निरवसरद
देख रहे ।

श्रीभगवत्सिद्धि

रस म्यादी कांड मिले जाहि गुन दोष न पांथे ।
न द्रष्टा होइ करौ सेवन तजि आंधे ॥ ३२ ॥

६९

१. नादर, माँगने, मूने, पाँदर, नांग ।
२. दोमक, जीव को जागा दस दुख पार ।
गा दम दुख पार, दास पाँ पाँजे घन में ।
सन घसन धिनु मिले, रहै नार्धारज मन में ॥
भगवत्सिद्धि अनन्य मिलन दुस्तर न्युति मादी ।
वेहरन म्याना स्याम जहाँ नहि माँदर माँदी ॥ ३३ ॥

६९

कौया धोये हंस नहि, होइ न बहुरा स्याम ।
रासभ तें हय होइ नहि, जो धोयै भगवान ॥
जो धोयै भगवान, सागि देगौ दुरजोधन ।
हरि जाये यनि दूत, गये फिरि भयो न दोषन ॥
भगवत्सिद्धि अनन्य होय नहि पाँभन नैया ।
गुन सुभाउ नहि मिटै, हंस संगति करि दोष ॥ ३४ ॥

६९

फाटै कूकर पायरी, जाको लागै भूत ।
करै अमल तहै आपनो, दावि परावो पृत ।

११—कूकर=कुत्ता । लोहे=लोहे कुत्ता बान बरहे पत ।

१२—लागे=लगाव । आपनो=आपना । परावो=पराव ।

करी ।

१३—कूकर=कूकर का बान । लोहे=लोहे । बरहे=बरहे ।

कीरति किसोरी घृषमानु की दुहाई तोहि,
लच्छ लच्छ मांति सौ हठी को पच्छ करिये ॥१७॥

८९

जन दुख हरनी धरनी पति ध्यावैं तोहि,
तेरी जग कर्नी विधि यनी बड़े धान की ।
चिन्ता कैसा घेरा मंन डेरा सो भ्रमन फिरै,
हटै नहि डेरा, मुधि खान की न पान की ॥
ध्यावत यनै न मोहि तेरोई कहावत हौ,
हठी पैं कृपा की कोर राखि दया दान की ।
औगुनन भरो हौ काहन करजोर श्रेय,
मोरो पच्छ कर नू किसोरी घृषमानु की ॥ १८ ॥

९०

ध्यावत मोहसह गनेसह धनेसह,
दिनेसह फनेस नयौ गुनेस मन मानो है ।
तोनौ लांक जपन शिताप की हरनहार,
नयो निदि निद मुक्ति भई दरयानो है ॥
कीरति दुलारी मेवै चरन बिहारी धन्य,
जाकी किन्त निज विधि खेदन यन्वानो है ।

पछ=पछ । पच्छ=पछ, नापडागी ।

१८—कर्नी=करनी, नीला । यनी=यानी, दर्शन की । धाव=ध्याव ।
१९—पछ=पछ । डेरा=मानि ।

१८—धनेस=दुख । फनेस=दोषनाश । गुनेस=गुण रत्न । मुनी=मुनी ।
१९—मोह=मोह । मोह=मोह । मोह=मोह । मोह=मोह । मोह=मोह ।
२०—मोह=मोह । मोह=मोह । मोह=मोह । मोह=मोह । मोह=मोह ।

आर देखि होह आं दिख्यजैं तांदि चलि लाल,

चरण पलोटे घुपमानु श्री कुमारी के ॥ २१ ॥

१९

आहु ही गरं ही घोर सहज निकुंजन में,

शानुक दिलोशयो नहां सय मुखदानी के ।

कहत यनै न मोपै शरजरज यात हठी,

कहि कहि हारे मुख चार बेद धानी के ॥

अयन सुन्यो न मानै, साँखिन दिख्यजैं तांदि,

चलि दुरि मेरे साथ चरिन गुमानी के ।

लुटे सुग मोटे करै मनुहार कोटे पैठयो,

पायन पलोटे लाल राधा नाशनी के ॥ २२ ॥

२०

गति पै गगनद धारी, पग अरविन्द धारी,

हठी अति दुन्द धारी कलवन फंद पै ।

गुलफ गुविन्द धारी, मोलता पै सिन्धु धारी,

सफल सुगंध धारी मुख श्री सुगंद पै ॥

कटि पै नृगेन्द धारी, ननु लखि दुन्द धारी,

देनी पै फनिन्द धारी नानी नैदनंद पै ।

झौठ जीवपंधु धारी, हाँसी सुधाकंद धारी,

कोटि कोटि चंद धारी राधे मुख चंद पै ॥ २३ ॥

१९—येरमानो=कहा । गुमानी=वश । मोटे=पेटी की । मनुहार=रस । कोटे=कोर ।

२०—अति-दुन्द=अत्यंत दुःख । फंद=गड । गुलफ=गुलफ, हठी के ली की ली । मोलता=मल्लिका, मोलता । सुगंद=सुगंध । जीवपंधु=जीवन ।

सर्वेगा

ਸ਼ੰਕਰ ਜਾਤਕ ਦੇ ਸਭਿ ਸੰ.

विद्यिया सज्जि के ब्रह्म नाइतो के ।

भक्तुल सुदे धंदक पहिराय,

हृता द्विगुना भिन्न चादितो षे ॥

तस्यैव ज्ञायते अलम्बनं स्त्री.

रवि की किरनें क्षण भर में ही खत्म हो गईं ।

जि सन्दर्भ है जिनको सिगनेच.

एन शब्दतः (सौ) कीर्तन लाटितां ये ॥२६॥

22

नारायण गुरु गुरुं ध्यायेत्

विन्ने नय मेर यही हयि हारि ।

ऐति पद्यं श्रुत्वा कष्टिर्न मर्यादा.

नवरात्री एवम् नमो नमो नमो २

श्री श्री लक्ष्मी शंकरानन्द

५७३ सुगन्धो धुने नन्द सुहारं ।

सोचिनि काम गुणान् भवे.

जब कलह है भाव लकी धनि जारें ॥२५॥

22

३१—बलनामिने-बल का मन्दन करने लगे; बल की शक्ति-
विश्व-सत्त्विक-विश्व का सही हूँ; सर्वोत्तमिनी । सर्वोत्तम-
बल । सर्वोत्तम-विश्व-विश्व का मन्दन करने लगे । सर्वोत्तम-
विश्वोत्तमिनी सर्वोत्तम की शक्ति-विश्वोत्तमिनी ।

२-पुष्पमाला, पुष्पक, वीर कवि-वर्ग विद्वत् । पुष्पमालिका
३-पुष्पमालिका, पुष्पक ।

श्रीसहचरिशरण

छप्पय

बुद्ध-बलि-माधुर्य-मिथु पूरन अयगायो ।
गादो को अधिकार संत प्रत दानम निपाहो ॥
मंजावलि रचि सरस रहसि-पद्धति विस्तारी ।
भरं न है नहि हैद रचना अस रसपारो ॥

उन रहसि का मंडली आभरण, सेये धीम्यामा वरण ।
पद सित्य राधिकादास के, प्रेम पुंज सहचरिसरण ॥
विद्योती

श्री सहचरि शरणजी का असल नाम सखी शरणजी' था ।
यह दृष्टो मंत्रदाय को परम्परा' में मदन राधिका-
त्मजों के उत्तराधिकारी थे ।

१—विषयानु विमोह (१२ ७८१) में कुछ प्रमाणों का द्यो म-
नो के रहसि का लोकावली कहेका के प्रमाण माने गये हैं । यहाँ
का द्यो सहचरिदास का ही स्थिति है, और वह रही मन्त्रदाय का
द्वय दानम के १२० १२० है ।

२—द्वी मन्त्रदाय की द्वी मन्त्रदाय का दानम १—

१—मन्त्रदाय का दानम १

२—मन्त्रदाय का दानम २

३—मन्त्रदाय का दानम ३

४—मन्त्रदाय का दानम ४

५—मन्त्रदाय का दानम ५

प्यों का विविध छन्दों में वर्णित किया गया है, सरस-
जावली में १४० मंज वा मांक है। बीच में कदा कहीं पर
द्विज छंद हैं। इसकी रचना बड़ी ही उच्च काटि की है।
व्यञ्जनकार के साथ ही इसमें प्रेम-माधुर्य और रस-वारणी
एक निराली ही छुटा और मादरता है। इसकी भाषा भी
रुझूटे ढंग की है। प्रजभाषा, लड़खोली, पंजाबी और
रसी का उसमें बड़ा ही मधुर मिश्रण हुआ है। कोई कोई
दो तो 'तीर तलवार और तमचा' का काम कर जाता है।
गारो गाय में तो सहृदय-जन नमनमंजुषी को न केवल
रामरण या हृदय-हार ही बनायें, परन्तु उसे समिक-समाज
के गीता मान कर उसका नित्य पाठायन किया करें।

सहचरिखणजी की सुधा-मयी रचना की कुछ शान्ती
सिद्ध जनों के आने प्रस्तुत की जाती है—

सरस मंजावली

अङ्कित

स्नान कठोर न होहु हमारी बार को ।
नेक दया उर ल्याय उदय करि प्यार को ॥
सहचरि सरन शनाथ अकेलो जानि कै ।
कियो चहल चल प्यार पचासो जानि कै ॥१॥

८५

स्नान सुबंद रैद को नार है ।
आशिर-विलक इह करतार है ॥

१—सहचरिखण, १४ ।

२—सुबंद=सुबंद; नयी माने आने दोष । नार गुण=गुण,

पाहि पाहि उर अन्तरजामी हरन अमंगल हाँके ।
सहचरि सरन विनय सुनि काँजै यागिधि कृपा अमी के ॥
दुस्तर दुसह दुखद अविचारु विफल होहि खल जो के ।
जिमि सिमुपान कुचालो जो के परे मनोरथ फोके ॥६॥

८५

दिनिपति सेत मोल पसु पच्छिन इहि विधि कय लहौगे ।
रवि-दुहिता सुरसरि न भूमि जिमि रस उर कयै यहौगे ॥
पकरन भृङ्ग फाँट को जैसे नैसे कयै गहौगे ।
सहचरिसरन मराल मानसर मन इमि कयै रहौगे ॥७॥

८६

मोटा मंडु पिताया प्याला पेसा मुरशिद नेरा ।
रमिकराजदा मैं गुनाम जिमि कामी कामिनि चेरा ॥

१—पाहि पाहि=पला करो, रखा करो । अमंगल=अशुचि, अशुभ ।
ये=इसके । सिमुपान=वेदि का राजा जो श्रीकृष्ण का पुत्रोत्तर भाई
था । दुखद=दुःखित । परे=... फोके=गिराने का साथ दुखित
होई, रजिन्दगी के साथ पाहि=पला न कर मरना, श्रीकृष्ण को
पके भक्त पंडितों का बात भी बोलना न कर मरना, जगद्गुरु भी न हो
सक । जो सब न होकर वह हुआ कि कब से भगवत् कृपा के लक्ष
होकर हुआ बात मरना ।

२—दिनिपति=राजा । रवि-दुहिता=सूर्य-पुत्री सुवर्णा । मानसर=
जिसे मान, जो निराल मे है । दाँ=साहसिक परे जाने है ।

३—मुरशिद=मुक्त प्याला । रमिकराजदा=रमिकों के राजा राजा
का राजा प्याली भात के कलुषान् ममका-सुखदा 'दा' के अर्थ से

र में धाव न्य सों सैंकें हिन को नेज पिड़ावै ।
 एग डोरे सुइयां पर पछनी चांके टोक लगावै ॥
 मधुर सन्निहित शंग शंग छवि मलुवा सरस खड़ावै ॥
 स्वाम नदीय इलाज कर जय नय धावन नयुरावै ॥११॥

८९

बांकी पाग चट्टिका ना पर, तुरां गरकि रहा है ।
 पर मिर पेंच माल उर, बांकी पट को चटका चका है ॥
 बांके नैन नैन मर बांके, दैन विनाद मंहा है ।
 बांके को बांकी भांकी पारि, बांकी रहा कला है ॥१२॥

९०

गज मोनिन की मंजुल माला, लोस जरकमो घौरा ।
 चंद्र चार दास पुनि ना पर, दमिन कलंगी होरा ॥
 नय पर लड़े कड़े पर सुंदर, लड़े पोट पट पीरा ।
 गायतिसरन तिरा दिन मोलन मृदु बालन मुख पीरा ॥१३॥

११—मिर=मिर । मधुर=मधुर, मधुर=मधुर । मधुर=मधुर ।
 मधुर=मधुर । मधुर=मधुर । मधुर=मधुर ।

र मधु मोन के दन पर की बाज मधुर पारी का मरकी है—

मोम की मर मोम दिखेगी, मर मोम मोम मोम मोम ।

१२—तुरां=तुरां । पट=पट । मर=मर । मर=मर । मर=मर ।
 मोम=मोम । मोम=मोम । मोम=मोम । मोम=मोम । मोम=मोम ।
 मोम=मोम । मोम=मोम । मोम=मोम । मोम=मोम । मोम=मोम ।

१३—गज=गज । गज=गज । गज=गज । गज=गज । गज=गज ।
 गज=गज । गज=गज । गज=गज । गज=गज । गज=गज ।

१४—विषय=विषय । विषय=विषय । विषय=विषय ।

सुग नृदु मंजु महा खूबो, यह गत्य गुनाय हरौगे ।
चरम चार नरगिस्त अलिमस्तां उर संकोच भरौगे ॥
एसेदार जुगल जुलफैं, छुपि सम्युन छैन छरौगे ।
सहचरिसरन मंग लै गुनसन नैर सिनाय करौगे ॥१७३

८२

नतयज तिलकललाट पटल, पट अटल मनेह सटक सो ।
नदनयिजय अनु करत पुरट मय शटि किंकिनी कटक सो ॥
सहचरिसरन नरनि तेनयो नट, नटयर मुकुट लटक सो ।
चिन चुगली मुरली धुनि गायन आवत चटक नटक सो ॥१७४

८३

अय नकरार करौ मनि यारों, लगौ लगन चित चंगी ।
शौचन प्रान जुगल जोरी के, जगन जाहिरा अंगी ॥
नतय नही फुनिशौ ने हम, इश्क दिलां दे मंगी ।
सहचरिसरन रसिक सुमतां घर, महिग्यान रम रंगी ॥१७५

८४

समत चढ़ी भृकुटी घर फरकैं, फरकैं दग रतनारे ।
नृदु मुसपगन बैकाली थांकी, बैन बिनोद सुधारे ॥

१७—नरगिस्त=एक पत्नी जिसको अपना प्ररम्यी के बरि छेय से
न कराने हैं । अलि मस्तां=नरगारे भीरे ।

१८—नरार=चढ़ाई भगडा । अंगी=पट काले, सरलगत । फुनिशौ
=होई हुकौ से, निह पुरहौ से । इश्क दिकारे=रेनिदी के । मुदनां घर=
मनानां से धेय ।

१९—समत चढ़ी=परी से चढ़ी हुई । रतनारे=गर । बैन=बैठे, बै
रग । अंगी=पल्ल । हाथे=इकठे, बस दये ।

धौगुरु अन्त प्रसन्न धन्य यनवास विसेखो ।
 जनसठि सुठि जेहि आयु स्याम स्यामा दुखे देखो ॥
 सरसदेव रनि सरस गौड़ कुल कल जनु भुंगो ।
 गुरु करुता यनवास यहत्तर आयु असंगो ॥३०॥

८५

गुरु पाछे द्युत्तोस घरस यनराज दिराजे ।
 शम शेलि कौनूद गाय अनंद नित साजे ॥
 नरहरि देव सनाढ्य गुढ़ा को प्रथम यत्तेये ।
 पुनि आरन्य अनादि अनुरम अनंद हेरो ॥३१॥

८६

रसिकदेव रसभान सनावढ़ पान प्रेम सौ ।
 जनम दुंदेलाखंड विपिन पुनि भजन नेम सौ ॥
 कौन्ह शिष्य अनेक एक ने एक समायक ।
 नित विच मिथुन प्रमिद भिद सुनि नव विधि लायक ॥३२॥

८७

३०—दुनि=दुखि । रनि=रस=प्रेम से प्रयोग । यनवास=विराज ।

३१—यनराज=यनराज से तात्पर्य निश्चित से है । कौनूद=कौनूद, कौनूद । गुरु=गुरु यथा दुंदेलाखंड से है । यनवास=विराज यथा न ।

३२—सौ=सविपु, ४८ । अनुरम=आनंद से निश्चित । मिथुन=मिथुन ।
 लब्ध करन शिष्य दो-धे, - धौजतिवक्षितोरादी और धौजतिवक्षितोरादी ।

श्रीगुरुमंजरीदास



दृश्य

हुगल प्रेम सर्वत्र भजन भावन नन श्रद्धासिद्धि ।

अत्र वासिन को करन करन भजन को सबदिस ॥

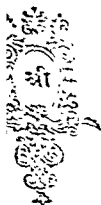
राधारमन लड़ाय रहत ताही रंगराते ।

धोभागीत सरप इष्टप्रथम रहभाते ॥

पदचरिता पावन हिरे, देत देत भव भंजरी ।

धोभल्लुजी गुरुमंजरीदास ऊपर गुरुमंजरी ॥

गो. गणेशदास



गुरुमंजरीदानजी का असल नाम श्री

गोस्वामी गल्लुजी था। इनका जन्म

लेह हज़ारा २, संवत् १८८२ को कुन्दावन

में हुआ। यह राधारमजी गोस्वामी

धोरनराइयालु जी के पुत्र थे। इनकी

माता का नाम धोभगीदेवी था।

गोस्वामी गनराइयालु जी अधिकतर

फर्ग्युषाद में रहते थे। संवत् १९०१ में

यानी गल्लुजी का विवाह फर्ग्युषाद में जगन्नाथ पुनोहित

१—श्रीगणेशदास गुरुमंजरी की कवि-कविता में इनका स्थान—

न वैश्व नानु [संवत् १९४०]

मन्दिप—श्रीगणेशदास गुरुमंजरी

होई कवला में, मार्गशीर्ष शुक्ल १, सं० १९५३ को दिन
१२ बजे आर सोमेश्वर धाम प्रयाग गये ।

धीनदुर्गमद्वीप का आभास बड़ा ही मजबूत, निरंतर
नभुर था । आंध्र को आर में सेतुनाथ भी नहीं था ।
रक्षागणधियों में आर की कनक निहा थी । प्रहलादा के
आर हमने कहा थे कि जितना चाहिए । आरमें हम
जैसे था बड़ा बड़ा निघम था । एक दिन साहसी साहस
निघम दिखोती । से दम्बुष करने का पालन हम प्रहार
न—होई कविता में स्वाम कृत प्रयोग करते कवि को
हो, जो कहान गये भयो । धीनदुर्गमद्वीप पर आर की
से कवि थी । आरने जितना धर्मोपासक विना, सब
पर मेधा में मजबूत दिया । वही में आर करवा नाम सुन-
नी मजबूत थे । आरने धीनदुर्गम सुन, रहने पर मजबूत बड़ा-
नहीं सुनकर वही को मजबूत को है । एक सुनारी वही
मजबूत है । हमने वही में मजबूत और उज्ज्वल को मजबूत
है । धीनदुर्गम नभुर पर नीचे उज्ज्वल दिने जाने है—

एक

नभुर मजबूत हो । मजबूत वही वही मजबूत को ।
मजबूत मजबूत को मजबूत, वही मजबूत मजबूत ।
मजबूत मजबूत मजबूत, मजबूत मजबूत मजबूत
मजबूत मजबूत मजबूत, मजबूत मजबूत मजबूत ।

मजबूत मजबूत मजबूत, मजबूत मजबूत मजबूत
मजबूत मजबूत मजबूत, मजबूत मजबूत मजबूत
मजबूत मजबूत मजबूत, मजबूत मजबूत मजबूत

नलार

हमारे धन क्याना इ को नाम ।
 आका रदन निरुत नोहन, नंदनैदन धनस्याम ॥
 मतिदिन नव नवमहा नाधुत, धनन अठो आम ।
 गुनमंडरि नव कुंड निवार्य, धीहृदयन धाम ॥ ३८

मेष

वेरो भुवन नै रंग दानै, सुख नरनै,
 धीराधा प्यारी लागरी ।
 दिने गलवाही मुदिन मन नाहीं,
 मोहन भूतै संग नवन सुहागरी ॥
 बिहीते सुनावनि गावनि लसिजन,
 निरखनि दृष्टि दगननि कलुषागरी ।
 गुनमंडरि धंडरि कुतुमन को,
 दान जुगल ननु जानि सुख लागरी ॥ ४६

विहारा

हूनन शोनन आलां आउ कैने होय रो ।
 पोरन बाये लोडो आदो नग जोय रो ॥
 पद उरनार्य हेनो देखित नहि रो :
 सुखमानन नित द्वियै कुव बाहि रो ॥
 दान को दानन नै निर निर देव रो ।
 हायन बलैया नेनो देर देर लेव रो ॥

१-विहीते=विहीत । दान=दान ।

२-पदो लोडो=पदो लोडो । नोडो=नोडो । देवो=देव ।

जन्मार्थ, तुनसों मिलिये को कहा कहा जुगनि न कोनी ।
 पंचहारों कहु काम न आई, उनटि मयै विधि दोनी ॥
 गिरिजुही यह दुनिन को मुख, धाइ मयनि की जानी ।
 हरिंद सोवि विचारि निकारी, जुगति अचूक न गौनी ॥
 न परिहरि मन है तुव पद में लाक प्रिगुनता लीनी ।
 गिरिंद निधरक विहंगी, अधर सुधागम भीनी ॥ १३ ॥

८९

गियारे, क्यों तुन आवन याद ?

हम सकल काज प्रग के, मय भितन भोग के म्याद ॥
 जानों तुम्हरी याद नई नहिं, नबलां हम मय लायक ॥
 तुम्हरी याद होतही चित में, चुभन मदन के सायक ॥
 हम इन के सद कामन के अरि, हम यह निहचै आनै ।
 गिरिंद तौ क्यों मय तुम्हारे प्रेमहि जग में मानै ॥ १४ ॥

९०

रहै क्यों एक म्यान अमि दोष ।

विह नैनन में हरि रम लायो, निहि क्यों भावै दोष ॥

१३—गिरिजुही=धन, काहे पद गी । प्रिगुनता=पद, रज धार
 लायक । भीनी=दोनी हुई ।

१४—हम के सादर=मानस, भितन को शब्दार्थ । निहचै=निहच
 री । को मय=मय में । मय=मय में । मय लायक, जो मय लायक
 काम हो को मय मान रहे हैं । को मय मय में हो मय
 मय में ।

१५—विह=विहारी । नैनन=नैनन मयिह शब्दार्थ । दोष=

सचैया

कोमल ओ मधफूल जिले,
 हिय येधि बिधे ! दुख-तार पिरोये ।
 देस दरिद्र दुखी फिर हू,
 तुम ताहू पै कौन नसा नहि मोये ॥
 बिष सुदामा कौ हेरि, इतो
 अपना जेन जानि दयानिधि, रोये ।
 भारत गान्त हेरि, किनै,
 करुना तजि कै करुनानिधि मोये ॥३६॥

३६

सुखकारक, दारक दारिद्र के,
 औ निवारक ओ मय कन्दन के ।
 दुःख-शारक, जारक जालन के,
 पुनि दारक ओ दुःख छन्दन के ॥
 मय हारक, कारक काज मरै,
 सुखसारक प्रेम के बन्धन के ।
 गहू रे मन, नू पद-पंकज में,
 प्रबमानु-मुता मैद-नन्दन के ॥३७॥

धारुणार्पणमस्तु

१.—पिरोये=झुंघे । दोरे=बुरा हुआ । गान्त=गह, बरबाद ।

२.—दारक=विदारक; खींचने का देने वाले, हाने वाले । निवारक=रुकाने वाले, बराने वाले । छन्दन=काज या अग्न कर देने वाले । प्रबमानु=बैठाने वाले या विश्राम करने वाले ।

उन पुस्तकों के नाम, जिनकी इस ग्रन्थ के संकलन करने में प्रसंगानुसार चर्चा की गयी है

- १—सूरसागर (नवल किस्तोर प्रेस, लाहौर)
- २—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ३—सूरसागर—प्रा० देवीप्रसाद शर्मा, ए.
- ४—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ५—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ६—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ७—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ८—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ९—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १०—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- ११—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १२—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १३—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १४—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १५—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १६—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १७—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १८—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- १९—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास
- २०—सूरसागर—प्रा० राधाकृष्णदास

- १८—विहारी की मतमरे (भूमिका और सजीवन भाष्य)
पं० पद्ममिह
- १९—विहारी दोषिणी—नाला भगवानदीन
- २०—देव और विहारी—पं० कृष्ण विहारी मिश्र बी. ए.
- २१—भुव प्रधापना—(भारत जीवन)
- २२—सुज्ञान रसगान—(भारत जीवन)
- २३—प्रेमपाटिका—(रसगान कृत)—पं० किशोरीनारायण
गोस्वामी
- २४—रागरसाकर (वेदुदेशर प्रेम, वन्य)
- २५—सुमोच्छेदक—पं० गोपुराप्रसाद शर्मा
- २६—निम्बार्क प्रभा—महात्मा हंसदासजी
- २७—भगवत रसिक की पानी—महात्मा भगवानदासजी
- २८—मरस मंजापली और ललित प्रकाश (सहचरिशरण कृत)
- २९—सुज्ञान सागर (आनंदधन कृत)—भा० हरिश्चन्द्र
- ३०—विरहलीला (आनंदधन कृत)—भा० काशीप्रसाद
जायसवाल
- ३१—लघुरस कलिका—ललितकिशोरी
- ३२—प्रज्ञविहार—नारायण स्वामी
- ३३—भा० हरिश्चन्द्र का जीवन चरित—भा० राधाकृष्ण दास
- ३४—भा० हरिश्चन्द्र का ग्रन्थाधली—(सदायनास प्रेम,
बांकीपुर)
- ३५—हृदयतरंग (सत्यनारायण कृत) नागरा पन्थारिणी,
आगरा
- ३६—भीराधा सुधा शनक (दंडोक्त)
- ३७—गदाधर गहू की पानी (हस्तलिखित)

- ३२—स्वामी हरिदास हृत सिद्धान्तो पद तथा केलिनाला
(हस्तलिखित)
- ३३—हित चतुर्गामी और धीरिजी के सिद्धान्तो पद
(हस्तलिखित)
- ४०—सुरदास मदन मोहन के कुटुम्बर पद (हस्तलिखित)
- ४१—ज्यासजी की दानी (हस्तलिखित)
- ४२—पुगल हृतक धीरिजी हृत (हस्तलिखित)
- ४३—दश सीलारे—हित सुरदासदास हृत (हस्तलिखित)
- ४४—धीरिदासजी के पद (हस्तलिखित)
- ४५—धीरिदास मंजरिदास हृत पदावली और छन्द—गो०
राधाचरण
- ४६—हिन्दी के सुप्रसिद्ध नेत्रियों के एकसन्दर्भों कुटुम्बर नेत्र
समालोचनाएँ आदि ।



बालू सूरजप्रसाद खन्ना के प्रबन्ध से हिन्दी
साहित्य प्रेस, प्रयाग में छपा
